विदेह केदारनाथ चौधरी विशेषांक

ISBN: 978-93-340-2015-1

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादन अथवा संचारन-प्रसारण नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२३. सर्वाधिकार सुरक्षित। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।*

ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००- २०२३. विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना/ संग्रह (संपूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता मध्य) editorial.staff.videha@gmail.com कैं मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ पठा सकैत छथि, संगमे ओ अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो सेहो पठाबथि। एतऽ प्रकाशित रचना/ संग्रह सभक कॉपीराइट रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि आ जतऽ रचनाकार/ संग्रहकर्त्ताक नाम नै अछि ततऽ ई संपादकाधीन अछि। सम्पादक: विदेह ई-प्रकाशित रचनाक वेब-आर्काइव/ थीम-आधारित वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ऐ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरो वेब-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ऐ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थु। विदेह ई पत्रिकाक मासमे दू टा अंक निकलैत अछि जे मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

© Preeti Thakur (sales.videha@gmail.com)

VIDEHA KEDARNATH CHAUDHARY SPECIAL ISSUE: Editor Gajendra Thakur

समानान्तर परम्पराक विद्यापति- मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)। कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ "ईश्वर प्रत्याभिज्ञा-विभर्षिणी" मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। "जाव न मालतो कर परगास/ तावे न ताहि मधुकर विलास।" आ "मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द।" ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

<u>अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)</u>

तिहुअन खेत्तहि काजि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्झो बन्धि न देइ॥ ***(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*** माने आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ ओइपर **(*गद्य-पद्य रूपी*)** मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लत्ती केना पसरत।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकेँ ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकेँ, क्षत्रियकेँ, शूद्रकेँ आ आर्यकेँ; अपन लोककेँ आ अपरिचितकेँ सेहो (माने सभकेँ)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकेँ समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकेँ प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तेँ तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.
-Robert Louis Stevenson

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्ति:

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ Ẇ শান্তি:

ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

𑓆 𑒠𑓂𑒨𑒾: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭 𑓅 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱ः 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒰𑒣: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒼𑒭𑒡𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒨: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹 𑒠𑒹𑒫𑒰: 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑓂𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝𑒮𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑓂𑒟𑒢𑒰 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒨𑒳𑒪𑒼𑒏𑒧𑒹, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑒧𑒹, 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲𑒣𑒩, 𑒖𑒪𑒧𑒹, 𑒎𑒭𑒡𑒧𑒹, 𑒫𑒢𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱𑒧𑒹, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒧𑒹, 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒑𑒝𑒧𑒹 𑒂 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒬𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒯𑒳𑒁𑒨।

𑓆-𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒝, 𑒠𑓂𑒨𑒾-𑒮𑒴𑒩𑓂𑒨-𑒞𑒩𑒹𑒑𑒝, 𑒁𑓀𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭- 𑒣𑒵𑒟𑓂𑒫𑒲 𑒂 𑒠𑓂𑒨𑒴𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒲𑒔, 𑒂𑒣:-𑒖𑒪, 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒹𑒠𑒹𑒫𑒰- 𑒮𑒦 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰, 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧- 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒏।

ॐ, सहस्रंशीर्षा पुरुंषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्।

ॐ, স↓ হস্রা↑ শীর্ষা↓ পুরু↑ ষঃ। স↓ হ↓ স্রা↓ ক্ষঃ
স↓ হস্রা↑ পাৎ।

स भूमिं ग्वंग विश्वतों वृत्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गुलम्॥

স ভূমিঁ↑ Ẇ রি↓ শ্বতো↑ বৃ↓ ত্বা। অত্যা↑ তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓ লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

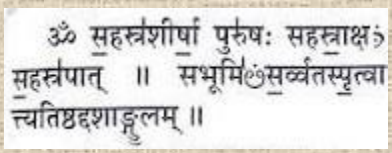

ॐ सहस्त्रंशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः
सहस्त्रंपात् ॥ सभूमिंसर्व्वतस्पृत्वा
त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

प↓ ड्याग्ँ↑ শূ↓ দ্রো অ↑ জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रांत्।

प↓ ড্যাং ভূমি↓ র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑ ↑ ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

卐 (Swastik)

ꣳ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒱𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳, 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒧 Devanagari Anji)

ঀ (Bengali Anji, Siddham)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

सोशल मीडिया, अन्तर्जाल आ दूरदर्शनक कार्यक्रम सभमे वेदमे ई लिखल अछि, ई वर्णित अछि, शूद्रक प्रति, स्त्रीक प्रति, शूद्रक स्त्रीक प्रति अपमान जनक गप लिखल अछि; ई सभ सूनि कऽ कियो विकीपीडिया आ आन आन ठाम अन्तर्जालपर लेख सभमे परिवर्तन कऽ देने रहथि। एक गोटे अंग्रेजीमे लिखलनि- “अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकय, बला वक्तव्य अछि।” हम कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, खण्ड-८; प्रबन्ध निबन्ध समालोचना भाग-२, २०१४ मे अपन आलेख “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निवारण” मे लिखने रही- “.. ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकए बला वक्तव्य।”

मुदा अथर्ववेद बा कोनो वेदमे ओइ तरहक वक्तव्य कत्तौ नै आयल अछि। तकर विपरीत शुक्ल यजुर्वेद ई कहैत अछि:-

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।।हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें)। मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

वेद मे उपलब्ध शूद्र शब्दक उल्लेखित अंशक संग्रह नीचाँ देल जा रहल अछि। शूद्रक अपमानजनक उल्लेख तँ नहिये अछि, वरन् पएरसँ पवित्र पृथ्वीक जन्मक उल्लेख अछि आ तही उत्पत्तिक सादृश्यताक कारणसँ मानव समुदायक पालक शूद्र कहल गेल छथि।

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

REFERENCE OF SHUDRAS IN VEDAS [Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: Samaveda: Yajurveda: Rigveda; English Translations]

ATHARVA VEDA (3 references)

KANDA-14

(MARRIAGE AND FAMILY) Kanda 14/Sukta 1 (Surya's Wedding)

Devata: Dampati; Rshi: Surya Savitri

60*. Bhagastataksha caturah padanbhagastataksha catvaryuspalani. Tvasta pipesa madhyatonu vardhrantsa no astu sumangali.*

Bhaga, lord sustainer and ordainer of life, has framed the value orders of life: Dharma, Artha, Kama and Moksha; four social orders: Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**; four stages of personal life: Brahmacharya, Grhastha, Vanaprastha and Sanyasa. Tvashta, lord maker and organiser of life, has placed the woman as partner of man in matrimony in this order and organisation. May the bride be good and auspicious for us.

भाग- पालनकर्ता आ जीवनक अधिष्ठाता- जीवनक मूल्य क्रम तैयार केने छथिः धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष; चारि सामाजिक क्रम- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र; व्यक्तिगत जीवनक चारि चरण- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ आ सन्यास।त्वष्टा- स्वामी निर्माता आ जीवनक आयोजक- एहि क्रममे आ सङ्गठनमे स्त्रीकेँ विवाहमे पुरुषक साथीक रूपमे रखने छथि। से वधू हमर सभक लेल नीक आ शुभ होथि।

Kanda 19/Sukta 6 (Purusha, the Cosmic Seed)

Purusha Devata, Narayana Rshi

6. *Brahmano sya mukhamasid bahu rajanyo bhavat. Madhyam tadasya yadvaishyah padbhyam sudro ajayata.*

Brahmana, (man of knowledge, divine vision and the Vedic Word in the human community) is the mouth of the Samrat Purusha. Kshatriya, man of

justice and polity, is the arms of defence and organisation. The middle part is the Vaishya who produces and provides food and energy. And the ancillary services that provide sustenance and support with auxiliary labour are the feet, the **Shudra** that bears the burden of society.

ब्राह्मण (ज्ञानी, दिव्य दृष्टि आ मानव समुदाय लेल वैदिक शब्द) सम्राट पुरुषक मुख अछि। क्षत्रिय -न्याय आ राजनीतिक लोक- रक्षा आ सङ्गठनक हाथ छथि। मध्य भाग वैश्य छथि जे भोजन आ ऊर्जाक उत्पादन आ आपूर्ति करैत छथि। आ सहायक सेवा जे सहायक श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहायता प्रदान करैत अछि, ओ अछि पैर, शूद्र जे समाजक भार वहन करैत छथि।

Kanda 19/Sukta 32 (Darbha)

Darbha Devata, Bhrgu Ayushkama Rshi

8. *Priyam ma darbha krunu brahmarajanyabhyam sudraya charyaya cha. Yasmai ca kamayamahe sarvasmai cha vipasyate.*

O Darbha, destroyer and preserver, eternal sanative, render me dear and loving to and loved by all Brahmanas, Kshatriyas, Vaishyas, **Shudra**s, whoever we love and desire, and all those who have the eye to see (and discriminate right and wrong).

हे दर्भा, विनाशक आ संरक्षक, शाश्वत विवेकशील; हमरा सभकेँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सभक प्रिय आ प्रेमी बना दिअ। संगे ओ सभ हमरा सभसँ प्रेम् करथि जिनका सँ हम प्रेम करी बा जिनकर कामना करी; आ ओ सभ जिनका लग देखबाक दृष्टि अछि (आ सही आ गलतमे भेद बुझैत छथि)।

SAMAVEDA (o reference)

YAJURVEDA (7 references)

CHAPTER- VIII

30. (Dampati Devata, Atri Rshi)

Purudasmo visuruupa indurantarmahimanamanaja dhirah. Ekapadim dvipadim tripadim chatupadimastapadim bhuvananu prathantam svaha.

The man of mighty deeds, who eliminates suffering and creates joy, of versatile attainments, bright and honourable, constant and resolute, should wait for the great new arrival. Men of the household, cultivate the vaidic culture of one, two, three, four and eight steps of attainment: one: Aum; two: worldly fulfilment and the freedom of moksha; three: the joy of the truth of word and the health of body and mind; four: the attainment of Dharma, wealth, fulfilment of desire, and moksha; eight: the joy of all the four classes

and all the four stages of life (Brahmana, Kshatriya, Vaishya and **Shudra**, Brahmacharya, Grihastha, Vanaprastha and Sanyasa). Build homes for the people and advance in life.

शक्तिशाली कर्मक पुरुष, जे दुःखकेँ समाप्त करैत अछि आ आनन्द उत्पन्न करैत अछि, बहुमुखी उपलब्धिक, उज्ज्वल आ सम्मानजनक, स्थिर आ दृढ़ संकल्पित, ओकरा महान नव आगमनक प्रतीक्षा करबाक चाही। घरक लोक, उपलब्धिक एक, दू, तीन, चारि आ आठ चरणक वैदिक संस्कृति विकसित करैत छथि: एकः ओम; दुइः सांसारिक पूर्ति आ मोक्ष रूपी स्वतन्त्रता; तीनः वचनक सत्यक आनन्द आ शरीर आ मस्तिष्कक स्वास्थ्य; चारिः धर्मक प्राप्ति, धन, इच्छाक पूर्ति, आ मोक्ष; आठः जीवनक चारि वर्ग आ चारि चरणक आनन्द (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वनप्रस्थ आ सन्यास)। लोकक लेल घर बनाउ आ जीवन मे प्रगति करू।

CHAPTER- XVIII

48. (Brihaspati Devata, Shunah-shepa Rshi)

Rucham no dhehi brahmanesu rucham rajasu naskrudhi. Rucha vishyesu shudreshu mayi dhehi rucha rucham.

Brihaspati, lord of the universe, eminent teacher and master of vast knowledge, inspire our Brahma section of the community—scholars, scientists, teachers and researchers with brilliance and love. Infuse brilliance, love and justice into our Kshatrias, defence, administration and justice section of the community. Bless with light, love and generosity our Vaishyas, producers and distributors among the community. And bless our **Shudra**s, the ancillary services, with light, love and loyalty. Bless me with light and love toward us all.

बृहस्पति- ब्रह्माण्डक स्वामी, प्रख्यात शिक्षक आ विशाल ज्ञानक स्वामी- समुदायक ब्रह्म वर्ग- विद्वान, वैज्ञानिक, शिक्षक आ शोधकर्ता- केँ प्रतिभा आ प्रेम सँ प्रेरित करू। हमर क्षत्रिय-रक्षा, प्रशासन आ न्याय- समुदायक वर्गमे प्रतिभा, प्रेम आ न्यायक संचार करू। हमर वैश्य-समुदायक निर्माता आ वितरक- सभकेँ प्रकाश, प्रेम आ उदारतासँ आशीर्वाद दियौ। आ हमर सभक शूद्र -समुदायक सहायक सेवी- केँ प्रकाश, प्रेम आ निष्ठा सँ आशीर्वाद दियौ। हमरा सभ केँ प्रकाश आ प्रेम सँ आशीर्वाद दियौ।

CHAPTER- XXV

23. (Dyau etc. Devata, Prajapati Rshi)

Aditirdyauraditirantarikshamaditirmata sa pita sa putrah. Vishve deva aditih pancha jana aditirjatamaditirjanitvam.

In the essence: Light is indestructible; sky is indestructible; mother Prakriti (matter-energy-thought) is indestructible; Father, the Cosmic Spirit is indestructible; Son, the soul (jiva), is indestructible; all the divinities of nature and humanity are indestructible; five people, Brahmana, Kshatriya, Vaishya, **Shudra**, others, are indestructible; whatever is born is

indestructible; whatever will be born is indestructible. (All that was, is and shall be is indestructible in the essence.)

सारमे: प्रकाश अविनाशी अछि; आकाश अविनाशी अछि; माता प्रकृति (पदार्थ-ऊर्जा-विचार) अविनाशी अछि; पिता, ब्रह्मांडीय आत्मा अविनाशी अछि; पुत्र, आत्मा (जीव) अविनाशी अछि; प्रकृति आ मानवताक सभ देवत्व अविनाशी अछि; पाँच व्यक्ति, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आ आन अविनाशी अछि; जे किछु जन्मल अछि से अविनाशी अछि; जे किछु जन्मत से अविनाशी अछि। (जे किछु छल, अछि बा रहत/ आओत से सार मे अविनाशी अछि।)

CHAPTER- XXVI

2. (Ishvara Devata, Laugakshi Rshi)

Yathemam vacham kalyanimavadani janebhyah. Brahmarajanyabhyam Shudraya charyaya cha svaya charayaya cha. Priyo devanam dakshinayai daturiha bhuyasamayam me kamah samrudhyatamupa mado namatu.

Just as this blessed Word of the Veda I speak for the people, all without exception, Brahmana, Kshatriya, **Shudra**, Vaishya, master and servant, one's own and others, so do you too. May I be dear and favourite with the noble divinities and the generous people for the gift of the sacred speech. May this noble aim of mine be fulfilled here in this life. May the others too follow and come my way beyond this life.

जेना वेदक ई धन्य वचन हम बिना कोनो अपवादक, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्वामी आ सेवक, अपन आ अन्य लोकक लेल कहैत छी, तहिना अहाँ सेहो करैत छी। पवित्र भाषणक ऐ उपहारक लेल हम महान देवत्व आ उदार लोक सभक प्रिय आ मनभावन रही। हमर ई महान उद्देश्य ऐ जीवन मे पूर हुअय। आन सभ सेहो हमर मार्गक अनुसरण करैत बढ़ैत जाय आ से ऐ जीवनसँ आगाँ धरि बढ़य।

CHAPTER- XXX

5. (Parameshvara Devata, Narayana Rshi)

Brahmane brahmanam kshatraya rajanyam marudbhyo vaishyam tapase Shudram tamase taskaram narakaya virahanam papmane klibamakrayayaayogum kamaya punshchalumatikrustaya magadham.

Give us, we pray, the Brahmanas for education and research, culture and human values; the Kshatriyas for governance, defence and administration; the Vaishyas for economic development, and the **Shudra**s for assistance and labour in the ancillary services. Remove, we pray, the thief roaming in the dark, the murderer bent on lawlessness, the coward disposed to sin, the armed terrorist bent on destruction, the harlot out for pleasure of flesh, and the bastard fond of scandal.

Note: In mantras 5-22 in which various aspects of organised life are listed, there is repetition of ‘asuva’ and ‘parasuva’ from mantra 3, which means: ‘Give us, we pray, what is good’, and, ‘Remove, we pray, what is evil’. This is the prayer. Also, there are echoes of ‘havamahe’ from mantra 4, which means: ‘We invoke and develop’, and, ‘we challenge and fight out’. This is the call for action under the divine eye.

शिक्षा आ शोध, संस्कृति आ मानवीय मूल्यक लेल ब्राह्मण; शासन, रक्षा आ प्रशासनक लेल क्षत्रिय; आर्थिक विकासक लेल वैश्य; आ सहायक सेवामे सहायता आ श्रम लेल शूद्र हमरा दिअ से हम प्रार्थना करैत छी। हम प्रार्थना करैत छी जे अन्हारमे घुमैत चोर, अराजकता पर बिर्त खूनी, पाप पर बिर्त कायर, विनाश पर बिर्त सशस्त्र आतंकवादी, दैहिक सुख लेल बाहर गेल वेश्या, आ कलंकक शौकीन नाजायजकेँ हटा दियौ।

नोटः मंत्र 5-22 मे, जइमे संगठित जीवनक बिभिन्न पक्ष सूचीबद्ध अछि, मंत्र 3 सँ 'आशुवा' आ 'परशुवा' क पुनरावृत्ति होइत अछि, जकर अर्थः 'हमरा सभ केँ दिअ, हम प्रार्थना करैत छी, जे नीक अछि', आ, 'हटाउ, हम प्रार्थना करैत छी, जे अधलाह अछि'। ई प्रार्थना अछि। सङ्गहि, मंत्र 4 सँ 'हवामाहे' क प्रतिध्वनि अछि, जकर अर्थः 'हम आह्वान करैत छी आ आगू बढ़बै छी', आ, 'हम माँटि दइ छी आ लड़ै छी'। ई दिव्य दृष्टिक अन्तर्गत काज करबाक आह्वान अछि।

CHAPTER- XXX

22. (Rajeshvarau Devate, Narayana Rshi)

Athaitanastauau virupanalabhateitidirgham chatihrasvam chatisthulam chatikrusham chatishuklam chatikrushnam chatikulvam chatilomasham cha. Ashudra abrahmanaste prajapatyah. Magadhah punshchali kitavah kliboshudra abrahmanaste prajapatyah.

The good human being accepts and works with these eight classes of people of different forms and colours: too tall, too short, too fat, too thin, too white, too dark, too hairless, too hairy. Also they are neither Brahmanas nor **Shudra**s (nor the others). They too, all of them, are children of God, Prajapati. Even the bastard and the ‘despicable’, the wanton, the gambler, and the coward and the eunuch, neither **Shudra**s nor Brahmanas (nor the others), they too are children of God, Prajapati, father of all.

नीक लोक विभिन्न रूप आ रङ्गक ऐ आठ वर्गक लोकक संग स्वीकार करैत अछि आ काज करैत अछिः खूब लम्बा, बड्ड छोट, बड्ड मोट, खूब पातर, बड्ड गोर, बड्ड कारी, बहुत कम केशबला, खूब केशबला। ओ सभ ने ब्राह्मण छथि, नहिये शूद्र (आ नहिये आन कियो)। ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि। एतऽ धरि जे नाजायज बा 'घृणित', ऊधमी, जुआरी, आ कायर आ नपुंसक, ने शूद्र, नहिये ब्राह्मण (नहिये आन कियो), ओ सभ सेहो भगवान प्रजापतिक सन्तान छथि, प्रजापति- सभक पिता।

CHAPTER- XXXI

11. (Purusha Devata, Narayana Rshi)

Brahmanosya mukhamashid bahu rajanyah krutah. Uru tadasya yadvaishyah padbhyam Shuudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. The Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचनक लोक ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय-क मुख छथि। न्याय आ शिष्टताक लोक क्षत्रियकेँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ श्रमक सङ्ग निर्वाह आ सहारा देबऽबला व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवार सभकक भार वहन करैत छथि।

RIG VEDA (2 references)

Mandala 10/Sukta 90

Purusha Devata, Narayana Rshi

12. Brahmano sya mukhamasidbahu rajanyah kritah. Uru tadasya yadvaisyah padbhyam sudro ajayata.

The Brahmana, man of divine vision and the Vedic Word, is the mouth of the Samrat Purusha, the human community. Kshatriya, man of justice and polity, is created as the arms of defence. The Vaishya, who produces food and wealth for the society, is the thighs. And the man of sustenance and ancillary support with labour is the **Shudra** who bears the burden of the human family as the legs bear the burden of the body.

दिव्य दृष्टि आ वैदिक वचन बला ब्राह्मण, सम्राट पुरुष-मानव समुदाय- क मुख छथि। क्षत्रिय- न्याय आ राजनीतिक लोक- केँ रक्षाक हथियारक रूपमे बनाओल गेल अछि। वैश्य, जे समाजक लेल भोजन आ धन उत्पन्न करैत छथि, जांघ छथि। आ जीविकोपार्जन आ श्रमक सङ्ग सहायक व्यक्ति शूद्र छथि जे मानव परिवारक भार वहन करैत छथि जेना पैर शरीरक भार वहन करैत अछि।

Mandala 10/Sukta 124

Devata: Agni (1); Rshi: Agni, Varuna, Soma

1. *Imam no agna upa yajnamehi panchayamam trivritam saptatantum. Aso havyavaluta nah puroga jyogeva dirgham tama ashayishthah.*

Agni, yajnic light of life, come to this life yajna of ours: which has five divisions, i.e., Brahma-yajna, Deva-yajna, Pitr-yajna, Atithi-yajna, and Balivaishvadeva-yajna; conducted by five people, i.e, four socioeconomic classes of Brahmans, Kshatriyas, Vaishyas and **Shudra**s and others like

chance visitors from other groups there might be; which is threefold, i.e., paka yajna, haviryajna and somayajna; and which has seven extensions, i.e., Agnishtoma, Atyagnishtoma, Ukthya, Shodashi,Vajapeya, Atiratra and Aptoyami. You are our leader and pioneer, Agni, and you are the carrier of our yajna to the divinities as well as harbinger of the fruits of yajna to us. Pray come and be our all-time dispeller of the cavern of deep darkness from life. (Yajna is a creative process of development in life from the individual to the social, national, global and environmental level of life. The explanation above is related to the social level. Swami Brahmamuni explains the yajna at the individual level, and that is also suggested in Rgveda 10, 7, 6: 'Svayam yajasva', and yajurveda 4, 13: "Iyam te yajniya tanu", which means: Develop yourself by yajna according to the seasons of your growth, and remember your life in body, mind and soul is worthy of yajnic service for your personal development, your body being the first instrument of your wider yajna of life. This personal yajna is fivefold, for the elemental balance of earth, water, heat, air and ether; threefold for the balance of vata, pitta and kaf, and also for balanced growth of body, mind and soul; sevenfold for the growth of rasa, rakta, mansa, meda, asthi, majja and virya. Thus yajna is the process of growth beginning with the individual, accomplished at the cosmic level.)

अग्नि -जीवनक यज्ञक प्रकाश- हमर सभक ऐ जीवन-यज्ञमे आउ, जइमे पाँच विभाग छै, अर्थात, ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, पितृ-यज्ञ, अतिथि-यज्ञ, आ बलिवैश्वदेव-यज्ञ; पाँच लोक द्वारा संचालित, अर्थात, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र क चारि सामाजिक-आर्थिक वर्ग आ पाँचम आन समूह कखनो काल आयल आगंतुक। आ से तीनटा छै- अर्थात, पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ आ सोमयज्ञ; आ जकर सात विस्तार छै, अर्थात, अग्निष्टोम, अत्यग्निष्टोम, उक्त्या, षोडषी, वाजपेय, अतिरात्र आ अप्तोयमी। अग्नि, अहाँ हमरा सभक नेता आ अग्रगामी छी, आ अहाँ देवत्व लेल हमर यज्ञक वाहक छी आ सङ्गहि हमरा सभक लेल यज्ञक फलक अग्रदूत छी। प्रार्थना अछि जे आउ आ हमरा सभक जीवन तरहरि सन अन्हार सदाक लेल दूर करैबला बनू। (यज्ञ व्यक्तिगतसँ जीवनक सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक आ पर्यावरणीय स्तर धरि जीवनक विकासक एकटा रचनात्मक प्रक्रिया अछि। उपरोक्त व्याख्या सामाजिक स्तरसँ सम्बन्धित अछि। स्वामी ब्रह्ममुनी व्यक्तिगत स्तर पर यज्ञक व्याख्या करैत छथि, आ ई ऋग्वेद 10,7,6 मे सेहो सुझाओल गेल अछि: 'स्वयं यज्ञ'; आ यजुर्वेद 4,13: 'इयम ते यज्ञीय तनू', जकर अर्थ अछि- अपन विकासक ऋतुक अनुसार यज्ञ द्वारा अपना कैं विकसित करू, आ मोन राखू जे शरीर, मन आ आत्मा युक्त अहाँक जीवन यज्ञक सेवाक लेल अछि, आ तइसँ अहाँक व्यक्तिगत विकास हएत; अहाँक शरीर अहाँक जीवनक व्यापक यज्ञक पहिल साधन अछि। ई व्यक्तिगत यज्ञ पाँच प्रकारक अछि, पृथ्वी, जल, ऊष्मा, वायु आ आकाशक मौलिक संतुलनक लेल; तीन प्रकारक- वात, पित्त आ कफक संतुलनक लेल; आ शरीर, मन आ आत्माक संतुलित विकासक लेल सेहो; सात प्रकारक माने रस, रक्त, मानस, मेधा, अस्थि, मज्जा आ विर्यक विकासक लेल। ऐ तरहेँ यज्ञ व्यक्तिसँ शुरू होइत विकासक प्रक्रिया अछि, जे ब्रह्मांडीय स्तर पर सम्पन्न होइत अछि।)

आब आउ यूरोपक विद्वान लोकनि द्वारा वेदक गलत अनुवादक किछु उदाहरण देखू:-
EXAMPLES OF SOME MISTRANSLATIONS OF VEDAS BY WESTERN SCHOLARS

I

W.D. Whitney's translation of the Atharvaveda (7, 107, 1) edited and revised by K.L. Joshi, published by Parimal Publications, Delhi, 2004:

Namaskrutya dyavapruthivibhyamantarikshaya mrutyave.

Mekshamyurdhvastisthaan ma ma hinsishurishvarah.

"Having paid homage to heaven and earth, to the atmosphere, to Death, I will urinate standing erect; let not the Lords (Ishvara) harm me." I give below an English rendering of the same mantra translated by Pundit Satavalekara in Hindi:

"Having done homage to heaven and earth and to the middle regions and Death (Yama), I stand high and watch (the world of life). Let not my masters hurt me."

An English rendering of the same mantra translated by Pundit Jai Dev Sharma in Hindi is the following:

"Having done homage to heaven and earth (i.e. father and mother) and to the immanent God and Yama (all Dissolver), standing high and alert, I move forward in life. These masters of mine, pray, may not hurt me."

I would like to quote my own translation of the mantra now under print:

"Having done homage to heaven and earth, and to the middle regions, and having acknowledged the fact of death as inevitable counterpart of life under God's dispensation, now standing high, I watch the world and go forward with showers of the cloud. Let no powers of earthly nature hurt and violate me."

‘Showers of the cloud’ is a metaphor, as in Shelley’s poem ‘the Cloud’: “I bring fresh showers for the thirsting flowers”, which suggests a lovely rendering.

The problem here arises from the verb ‘mekshami’ from the root ‘mih’ which means ‘to shower’ (sechane). It depends on the translator’s sense and attitude to sacred writing how the message is received and communicated in an interfaith context with no strings attached (or unattached).

[Dr Tulsi Ram, 2013, Atharveda: English Translation; Page xxvi]

II

The idea that there was slavery in the Vedic Society originated with the Western Indologists with their intentional or careless translation of a Sanskrit word into “slave”. For example, in the Taittiriya Samhita (Krishna Yajurveda), [7.5.10] [kanda 7,prapathaka 5, verse 10], a part of translation by Keith reads “slave girls dance around the fire”. But in a footnote in the same page [pg., 628, Vol. 2] the author Keith says that the verse describes the dance of maidens. Suddenly the maidens have become “slave girls”. Both Paranjape and Avinash Bose point to the mistranslation of the word ‘yosha’ as courtesan by the indologist Pischel [Bose, Hymns from the Veda, p. 36].

[Veda Books,SRI AUROBINDO KAPALI SHASTRY INSTITUTE OF VEDIC CULTURE, page 240]

III

In 1795, H.T. Colebrooke, then a young scholar, wrote his maiden paper, “On the Duties of a Faithful Hindu Widow,” for the Asiatic Society (Asiatic Researches IV 1795: 205-15). He cited the hymn from the Rig Veda as sanctioning widow burning, which William Jones immediately contested (Canon 1993 I:lxx). Colebrooke translated the end of the hymn as “let them pass into fire, whose original element is water.” A quarter of a century later, the Orientalist, H.H. Wilson pointed out that the hymn had been distorted

(Wilson 1854: 201-14; Cassels 2010: 89). Wilson translated the verse as per the reading corroborated by Sayana, the authoritative medieval commentator on the Vedas, and demonstrated that it did not refer to widow burning (Rocher and Rocher 2012: 24-25).

[Meenakshi Jain,2016; Sati: Evangelicals, Baptist Missionaries; and the Changing Colonial Discourse, Page 5)

'विदेह' ३५२ म अंक १५ अगस्त २०२२ (वर्ष १५ मास १७६ अंक ३५२)
(विदेह www.videha.co.in)

केदार नाथ चौधरी विशेषांक

अनुक्रम

केदार नाथ चौधरी विशेषांक

१.केदारनाथ चौधरी विशेषांक सम्पादकीय- गजेन्द्र ठाकुर (पृ. २-२७)

२.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे (पृ. २८-३०)

३.केदारनाथ चौधरीजीक संक्षिप्त परिचय (पृ. ३१-३३)

४.कल्पना झा- इएह गूड़ खेने,कान छेदौने (पृ. ३४-४४)

५.निर्मला कर्ण- केदारनाथ चौधरी व्यक्तित्व एवं कृतित्व (पृ. ४५-४७)

६.आभा झा- प्रेमक अद्वैतक अद्भुत आख्यान –हीना (पृ. ४८-५२)

७.शिवशंकर श्रीनिवास- चमेली रानी (पृ. ५३-५८)

८.दीपक मंजुल- मैथिली साहित्यक "कबीर"- हमरा सभक केदार बाबू (पृ. ५९-६३)

९.कामेश्वर चौधरी- अंग्रेजिए पढ़ल लोक मैथिलीकेँ उबारि सकत (पृ. ६४-६६)

१०.लक्ष्मण झा सागर- अबारा नहि...तन! (पृ. ६७-७०)

११.अजित कुमार झा- अबारा नहितन : एक अनुपम कृति (पृ. ७१-८०)

१२.भीमनाथ झा- तोर समान एक तोहेँ माधव (पृ. ८१-८४)

१३.हितनाथ झा- ह्रास होइत सभ्यता संस्कृतिक इतिवृत्तिक अयना : "अयना" (पृ. ८५-८८)

१४.अमरनाथ झा- अपरिचितसँ परिचितिक यात्राः केदारनाथ चौधरी (पृ. ८९-९३)

१५.अशोक- केदार नाथ चौधरीक उपन्यास (पृ. ९४-९८)

१६.जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल"- चुम्बकीय लेखनक दृष्टान्त "अबारा नहितन" (पृ. ९९-१०४)

१७.योगेन्द्र पाठक "वियोगी"- अपरिचित साहित्यकारक नुकाएल गप (पृ. १०५-११४)

१८.प्रदीप बिहारी- मुख्य पात्रक गौण व्यथा : अबारा नहितन (पृ. ११५-११९)

१९.आशीष चमन- मधुबाला नहि नहि लालदाय (पृ. १२०-१३१)

२०.अरविन्द ठाकुर- विलक्षणकेँ व्याख्यायित करब: अबारा नहितन (पृ. १३२-१५२)

२१.आशीष अनचिन्हार- मैथिली उपन्यासक 'केदारनाथ युग' (पृ. १५३-१५७)

२२.गजेन्द्र ठाकुर- केदार नाथ चौधरी- हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ (पृ. १५८-१६५)

२३.अर्चना चौधरी- हमर पिताः श्री केदारनाथ चौधरी (पृ. १६६-१६७)

२४. डॉ कैलाश कुमार मिश्र- केदारनाथ चौधरी रचित मैथिली उपन्यास: करार (पोथी समीक्षा) (पृ. १६८-१९३)

विदेह: ३५३ म अंक ०१ सितम्बर २०२२ (वर्ष १५ मास १७७ अंक ३५३)-अंक ३५२ पर टिप्पणी (पृ. १९४-१९५)

गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका **http://www.videha.co.in/**
ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

केदारनाथ चौधरी विशेषांक सम्पादकीय- गजेन्द्र ठाकुर

कथा १-१०

नाइट ड्यूटीमे छलौं, दू बजे राति मे हमर फोन टनटना उठल। हमर गप हमर कलीग, जे तमिल भाषी रहथि, सुनि रहल छली। फोन खतम भेलापर हिन्दीमे पुछलन्हि:

"कोन भाषामे अहाँ एक घण्टा गप कऽ रहल छलौं, बड्ड मीठ भाषा अछि"।

ऐ मिठासक खटास हुनका की बुझबितौं अहाँकेँ बुझायब। मुदा तइ लेल अहाँकेँ तैयार होमय पड़त। से पहिने भाग-१ मे स्टार्टर आ फेर दोसर भागसँ १००, २०० आ ५०० एम.जी. अहिना डोज बढ़ैत रहत।

कथा १

केदारनाथ चौधरी (१९३६-), मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गाबय गीत' केर निर्माता द्वयमेसँ एकटा निर्माता छथि केदारनाथ चौधरी आ दोसर मदनमोहन दास। बादमे आर्थिक मजबूरीवश तेसर सहनिर्माता भेलखिन उदयभानु सिंह।

माता-स्व. कुसुमपरी देवी, पिता- स्व. किशोरी चौधरी, जन्म: ०३/०१/१९३६

ग्रा.+पत्रा. नेहरा (दरभंगा), अन्य पारिवारिक सदस्य-पत्नी-श्रीमती कुमुद चौधरी, संतान- प्रथम पुत्री-श्रीमती किरण झा, द्वितीय पुत्री-श्रीमती अर्चना चौधरी, शिक्षा- १९५८ ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, १९५९ ई.मे लॉ। १९६९ ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर, १९७१ ई.मे मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन विषयमे गोल्डेन गेट यूनिवर्सिटी, सानफ्रांसिस्को, USA सँ एम.बी.ए., १९७८ मे भारत आगमन। १९८१-८६ क बीच तेहरान आ प्रैंकफुर्तमे। फेर बम्बई, पुणे होइत रिटायरमेंटक बाद २००० सँ लहेरियासराय, दरभंगामे निवास।६ टा उपन्यास- चमेलीरानी २००४, करार २००६, माहुर २००८, अबारा नहितन २०१२, हीना २०१३, अयना २०१८. सम्मान- १) विदेह साहित्य सम्मान, बर्ख-२०१३ (झारखंड मैथिली मंच, राँची द्वारा), २) प्रबोध साहित्य सम्मान, बर्ख-२०१६ आ ३) केदार सम्मान, बर्ख-२०१६,'अबारा नहितन' लेल

कथा २

डॉ कल्पना मणिकान्त मिश्र

पिता डॉ शिव कुमार झा, गाम राटी, सासुर- गजहारा। मेडिकल शिक्षा जे. जे. हॉस्पीटल/ ग्रान्ट हॉस्पीटलसँ सम्पन्न कय स्त्री-रोग विशेषज्ञ। मुम्बइसँ १९८०-८२ मे प्रकाशित होइबला मैथिली पत्रिका "विदेह"क पति डॉ

मणिकान्त मिश्र (निर्माता- मैथिली फिल्म- आउ पिया हमर नगरी) संग सम्पादन।

अपन २००९ केर ई-पत्र मे ओ लिखैत छथि:

गजेन्द्र ठाकुर जी कैं हमर नमस्कार! अहाँक पत्रिकाक हम नियमित पाठक छी। अहाँक वेबसाइटक पार्श्व गीत हृदय-स्पर्शी आर मधुर लागल।

आगाँ ओ अपन संस्मरण लिखै छथि जे विदेह सदेह २ मे (http://videha.co.in/new_page_89.htm) मे सेहो संकलित अछि:

मातृभाषा

मातृभाषाक प्रेम, बहुत किछु पढ़ल आ सुनल अछि। अहूँ सभ सुनने होयब, कतेक बेर, मुदा स्वयं अनुभव करबाक अवसर किछुएक लोककैं भेटैत छन्हि। हम सभ बम्बइ आयले रही। ओना तँ ऐ गप्पक एक युगसँ बेसी भय गेल मुदा बिसरबाक हिम्मत नै कऽ सकैत छी, आर किएक बिसरु? महानगरीक चकाचौन्ध मे हरायल रही, कतौ भटकि नै जाइ से चिन्ता रहय। १९८०क दशक मे संजय गाँधीक एकटा योजना आयल छल, बेरोजगार ग्रेजुएट लेल बैंकसँ किछु सुविधा पर २०,००० रुपया देबय लेल। हमहूँ बेरोजगार डाक्टर रही। आवेदन केलौं तँ लोन तुरत्ते भेट गेल। मुदा आब ओइ पाइक हम की करु? अपन रोजगार जेना दवाइखाना, कोनो छोटसन घर आदि जतऽ भविष्यमे अपन क्लीनिक खोलि सकी, जेकि ओइ समयमे अति सुलभ आर सम्भव छल, आब तँ से ओइ पाइमे सपना भऽ गेल अछि। ओइ पाइसँ निवेश कऽ हम अपन भविष्य सुरक्षित कऽ सकैत छलौं, गहना-गुड़िया बना अपन सख-सेहन्ता पूरा कऽ सकैत छलौं बा भारत भ्रमण कऽ सकैत छलौं। मुदा नै! हमर

पति, डा.मणिकान्त मिश्रक इच्छा छलन्हि जे मैथिली भाषाक पत्रिका निकाली। हम दुनु गोटे मिलि कऽ 'विदेह' नामक मैथिली पत्रिकाक शुरुआत केलौं। पत्रिका तँ छपै, मुदा के कीनत आर के पढ़त? ई बड पैघ समस्या छल। कोनाहु कऽ कय अपन घरक पूँजी लगा कऽ २ बर्ख तँ पत्रिका चलेलौं। फेर हमरा सभकेँ बन्द करय पड़ल किएक तँ दुनु गोटे डाक्टरी व्यवसायमे लागल रही, घर-अस्पताल-पारिवारिक झन्झट सम्हारैत बड मुश्किल छल। बम्बइमे नबे-नबे रही। तहूमे एतेक दुस्साहस कोनो साधारण आदमी नै कऽ सकैत अछि मात्र आर मात्र डा. मणिकान्त मिश्र कऽ सकैत छलाह। किएक तँ मैथिलीक प्रति हुनका जुनूनी लगाव छलन्हि। बम्बइक आपाधापी भरल जीवन एवम् स्वास्थ्यक उतार-चढ़ाव किछुओ हुनकर मैथिली-प्रेमक उत्साहकेँ कम नै कऽ सकलन्हि।

...आर बीस-बाइस बर्खक पश्चात ओ अपन सभटा पूँजी, शरीर-समांग समेत मैथिलीक फिल्म "आउ पिया हमर नगरी" बनौलनि। फिल्म बड सुन्दर बनलै, अहाँ सभ देखने होयब। यदि नै तँ एक बेर अवश्य देखी। फिल्म बनबयमे जे कष्ट आर अनुभव भेल से हम एखन वर्णन नै कऽ सकै छी। फेर कखनो....! मुदा ऐ सभ प्रकरणमे माँ मैथिली अपन लायक पुत्रसँ सदा लेल बिछुड़ि गेली। अछि कोनो मातृभाषा भक्त-पुत्र जे अपन माँ-मैथिलीक हृदयक पीड़ाक अनुभुति कऽ हुनका लेल अपन सभ किछु समर्पित कऽ दिअय?

<u>कथा ३</u>

१५ अगस्त २०२२ ई.क भारतक ७६म स्वतंत्रता दिवसक शुभकामना। ई संयोग छल जे विदेहक ६४म अंक भारतक ६४ म स्वतंत्रता

दिवसक अवसर पर १२ बर्ख पहिने १५ अगस्त २०१० कैँ ई-प्रकाशित भेल छल। ऐ बेर विदेहक ३५२म अंक सद्यः ई-प्रकाशित भेल।

हमर पिताजीक मृत्यु १९९५ ई. मे ५५ बरखमे भेलन्हि। मुदा गाममे १२ बर्ख पहिने हुनकर संगी आ ज्येष्ठ सभ जीवित रहथि। परशुरामजी आ धनेश्वर जीक बहिन झंझारपुरमे मल्लिकजीसँ पढ़ैले जाइत रहथि तँ धनाढ्य लोकनि द्वारा बारि देल गेलाह। परशुरामजीक बहिनक पढ़ाइमे बाधा पड़लन्हि। मुदा धनेश्वरजी जे कनेक उमेरमे सेहो पैघ रहथि, अड़ल रहलाह। अंग्रेजी पुलिससँ हुनका पकड़बाओल गेल आ जे पकड़बओलन्हि से बादमे स्वाधीनता पेंशन पबैत रहलथि। १९४२ ई.मे धनेश्वरजी सभ थानासँ अंग्रेज पुलिसकेँ भगा देने रहथि आ फेकन मुन्शीकेँ थानेदार बना देने रहथि। हमरा बाबूजीक कहल ओ शब्द मोन पड़ैत अछि जे गामक धनाढ्य एक्स एम.एल.ए. हुनका स्कॉलरशिपबला फॉर्मपर साइन करबासँ मना कऽ देने रहथिन्ह मुदा तैयो ओ एम.आइ.टी. मुजफ्फरपुरसँ १९५९ ई. मे रॉल नं.१ लऽ सर्वोच्च अंकक संग अभियन्त्रणमे नाम लिखबा लेलन्हि।

एक बेर धनेश्वरजी, परशुरामजी, हमर बाबूजी सभ गोपेशजी अहिठाम जा कऽ खएने छलाह आ ई काज अंडा खएलापर धनाढ्यक नेतृत्वमे हुनका बारल जएबाक विरुद्ध छल। आब ने धनेश्वरजी छथि आ ने गोपेशजी। परशुरामजी सेहो अही बर्ख स्वर्गवासी भऽ गेलथि। परशुरामजी १९९८ ई. मे कोलकातासँ अंग्रेजीक प्रोफेसरशिपसँ सेवानिवृत्त भऽ ओ अंग्रेजीमे "इन्लिश पोएटिक्स"पर दूटा पोथी लिखने छथि। हमर पोथी "कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक समर्पण

"पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे

तहिये बुझने रही जे

त्याग नहि कएल होएत

रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

-पिताक प्रिय-अप्रिय सभटा स्मृतिकेँ समर्पित"

पढ़ि ओ हमर दुनू गाल अपना हाथमे लऽ अपन नोर नहि रोकि सकलाह। गाममे बहुत गोटे समर्पण पढ़ि कानए लागल रहथि आ कहने रहथि जे ई सभ हमर पिताक पुण्यक परिणाम अछि। स्वतंत्रता दिवसपर नहि जानि कोना ई सभ फेर स्मरण आबि गेल।

कथा ४

साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रसंग

पघलैत हिमखण्ड- डॉ शिव कुमार प्रसाद द्वारा अनूदित कविता संग्रह अछि (मूल हिन्दी - रजनी छाबड़ा- पिघलते हिमखण्ड)। अंतिम रेस धरि ई पहुँचल-ओतऽ हारि गेल। देखी अगिला साल की होइए। विदेहमे ई धारावाहिक रूपें ई- प्रकाशित भेल फेर पुस्तकाकार आयल। ऐ पोथीक कविता सभ संकलित भेल **विदेहःसदेह २८** मे जे ऐ लिंक http://www.videha.co.in/new_page_89.htm पर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। लेखक धोआ- धोती नै वरन कोरा-धोती परम्पराक छथि। ऐ बेर मूल पुरस्कार पहिल बेर कोरा-धोती परंपराक उपन्यासकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलकें हुनकर उपन्यास "पंगु" लेल देल गेलन्हि, आ से साहित्य अकादेमीक इतिहासमे पहिल बेर भेलै। मात्र धोआ-धोती बला लेल ई पुरस्कार रिजर्व रहै। विदेहमे ई धारावाहिक रूपें ई- प्रकाशित भेल फेर पुस्तकाकार आयल। ई पोथी संकलित भेल **विदेहःसदेह २१** मे जे ऐ

लिंक http://www.videha.co.in/new_page_89.htm प र डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११ मैथिली लेल श्री जगदीश प्रसाद मण्डल केँ हुनकर लघुकथा संग्रह "गामक जिनगी" लेल देल गेल छल। कार्यक्रम कोच्चिमे १२ जून २०१२केँ भेल रहय। मैथिली लेल विवादक अन्तक कोनो सम्भावना नै देखबामे आबि रहल अछि। ओहू समय रेफरी जखन टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११ मैथिली लेल ७ टा पोथीक नाम पठेलन्हि तखन सेहो एकटा पोथी एहनो रहय जे निर्धारित अवधि २००७-२००९ मे छपले नै छल, तँ की बिनु देखने पोथी अनुशंसित कएल गेल छल? ऐ तरहक पोथी अनुशंसित केनिहारकेँ साहित्य अकादेमी चिन्हित केलक? की तकर नाम सार्वजनिक कयल गेल? की ओकरा स्थायी रूपसँ प्रतिबन्धित कयल गेल? नै कयल गेल आ तखन मैथिलीक प्रतिष्ठा बाँचल कोना रहि सकत।

पुरस्कार शिव कुमार प्रसादकेँ सेहो देल जेबाक चाही छल मुदा एक्के बरिख दू-दू टा कोरा-धोती परम्पराबला केँ ई नै देल जा सकत। एक्के टा कोरा-धोती बलाकेँ देल गेलै तहीमे अगरा-पिछड़ा दुनूक धोआ-धोतीधारी आ वर्णशंकर साहित्यकार (बायोलॉजिकल वर्णशंकरता सँ एकर कोनो सरोकार नै) कन्नारोहट उठेने छथि।

धोआ-धोती धारी लोकनिकेँ साहित्य अकादेमीक अपन-अपन अनुवाद-असाइनमेंट आपस कऽ देबाक चाही आ ओ सभ असाइनमेंट नंद विलास राय, राजदेव मण्डल, रामबिलास साहु, धीरेंद्र कुमार, दुर्गानंद मण्डल, मनोज कुमार मण्डल, शिव कुमार प्रसाद, उमेश पासवान, संदीप कुमार साफी, बेचन ठाकुर, मेघन प्रसाद, किशन कारीगर, लालदेव महतों, उमेश मण्डल, शारदानंन्द सिंह, सुभाष कुमार कामत, मुन्नी कामत आदि केँ देल जाय, आ से केलासँ मैथिली लेल अग्निवीरक एकटा फौज तैयार भऽ जायत। मेघन

प्रसाद विदेह मे अपन आलेखमे ई इच्छा व्यक्त केने छलाह मुदा तखनो हुनका अनुवाद-असाइनमेंट नै देल गेल। अशोक अविचल कें अदहा बधाइ, कारण दू टा कोरा धोतीक बदला हुनकर कार्यकालमे एक्केटा कोरा-धोतीकें पुरस्कार भेट पेलै। आब अगरा-पिछड़ा दुनू दिसुका धोआ-धोती बला मायावी सभ कोन-कोन बहन्ने की-की उकबा उड़ेतन्हि आ अगिला बर्खसँ फेर सँ एकछाहा धोआ-धोतियाइन साहित्य अकादेमी भऽ जायत बा नै तकर उत्तर तँ भविष्यक कोखिमे अछि।

कथा ५

एकटा साहित्यिक घटना

एकटा साहित्यिक घटनाक विवरण दै छी। ई घटना भेलै तमिल साहित्यक आधुनिक कालमे।

मूल धारा विश्व भरिसँ विद्वानकेँ बजेलक मारते रास प्रोग्राम-प्रचार। अस्सी-अस्सी हाथक नम्हर-नम्हर साहित्यकार बजाओल गेला, एकसँ एक कार्यक्रम, रेडियो टी.वी. पर प्रचार, टाकाक गुड्डी उड़ा देलक मूल धारा। एक नम्बरक प्रोग्राम समाप्त भेल।

आ समानान्तर धारा की केलक। ओ निकाललक समकालीन समानान्तर गद्य आ पद्यक एकटा संकलन जकर नाम छलै "कुरुक्षेत्रम्"। साधारण कागज पर साधारण डिजाइन पर बहार भेल ई "कुरुक्षेत्रम्" तमिल साहित्यकेँ सिहरा देलकै। आ एकटा बहस शुरू भेलै जे तमिल साहित्यक इतिहासमे एक्के समय मे भेल दू घटनासँ तमिल साहित्यकेँ कोन घटना बेशी फौदेलकै। टाकाक गुड्डी उड़बैबला तमिल साहित्यक विश्व आकि ब्रह्माण्ड सम्मेलन आकि कुरुक्षेत्रम्!

आ बहुमत मानलकै जे साधारण कागज पर साधारण डिजाइन कएल

"कुरुक्षेत्रम्" श्रेष्ठ घटना छल।

विदेहक जीवित साहित्यकारपर विशेषांक मैथिली साहित्यक "कुरुक्षेत्रम्" बनि गेल अछि। फेसबुकपर बहसमे साहित्यकार लोकनि मानलन्हि जे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ बेशी महत्त्व विदेहक जीवित साहित्यकारपर विशेषांकक भऽ गेल अछि। लाखक-लाख टाकाक साहित्य अकादेमीमे पसरैत कन्नारोहट घटबाक नामे नै लऽ रहल अछि, मुख्य धारा अपनेमे जालक ओझरी बनि गेल अछि, जकरा असाइनमेण्ट भेटलै से पुरस्कार लेल आ जकरा पुरस्कार भेटलै से असाइनमेण्ट लेल आफन तोड़ने अछि, आ जकरा दुनूमे सँ किछु नै भेटलै तकरा दुनू चाही तइले, आ जकरा दुनू भेटि गेलै तकर हालत तँ सभसँ बेशी खराप छै, ने अकादेमीये ओकरा मोजर दऽ रहल छै आ ओकर रचना सेहो तेहेन नै छै जे समानान्तर धारा लग ठठि सकतै। आ जँ किछु अपवाद अछि तँ ओ डिप्रेशनमे चलि गेल छथि बा अपनाकेँ सेहो कतिआयल माने समानान्तर धारक घोषित करबामे लागल छथि।

माने कतिआयल होयब घोषित करब बा समानान्तर धाराक होयब घोषित करब मूलधाराक (अगड़ा-पिछड़ा दुनूक अस्सी-अस्सी हाथक नम्हर-नम्हर साहित्यकार मूलधारामे छथि) एकटा फैशन बनि गेल अछि, मुदा ई फैशन अछि नै...

<u>कथा ६</u>

<u>विद्वान केना बनी?</u>

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् - हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्

अक्खर (अक्षर) खम्भा

तिहुअन खेत्तहि काजि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मज्चो बन्धि न देइ॥

[कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।]- माने अक्षररूपी स्तम्भ निर्माण कए ओहिपर (काव्यरूपी) मंच जँ नहि बान्हल जाए तँ एहि त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लता (वल्लि) प्रसारित कोना होयत।

गाम सभमे देखैत हेबै किछु लोक संस्कृत सुभाषितक चोटगर प्रयोग करैत छथि। मैथिली साहित्योमे विदेहक पदार्पणसँ पहिने वएह मैथिली साहित्यकार विद्वानक श्रेणी मे अबैत छल जिनका १० टा सुभाषित कंठस्थ रहैत छलन्हि। उचिते कारण बाशो सेहो कहने छथि, जे जे कियो जीवनमे ३ सँ ५ टा हाइकूक रचना कएलन्हि से छथि हाइकू कवि आ जे दस टा हाइकूक रचना कएने छथि से छथि महाकवि।

प्रस्तुत अछि अहाँ लेल एहने ३२ टा बीछल संस्कृत सुभाषित ऐमे सँ दसोटा मोन रहि गेल तँ अहूँ भऽ गेलौं मैथिलीक मूल धाराक हिसाबे प्रकाण्ड पण्डित। मुदा समानान्तर धारामे ऐ शॉर्टकटक पलखति कतऽ, एतऽ तँ अढ़बैले कियो नै भेटत, खटना खटऽ पड़त।

सुभाषितम् (सुष्ठि भाषितम् सुभाषितम्)

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्कते कान्तेव चाभिरमयत्यपनीयं खेदम्।

लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षुं कीर्ति किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्?

लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ॥

आत्मार्थ जीवलोकेऽस्मिन को न जीवति मानवः।

परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति॥

गच्छन् पिपीलको याति योजनानाम् शतान्यपि

अगच्छन् वैनतोयोपि पदमेकम् आगच्छति

तृणानि भूमिरूदकं वाक् चतुर्थी च सूंतता।

एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यंते कदाचन॥

सुलभाः पुरुषाः लोके सततं प्रियवादिनः।

अप्रियस्यय च पर्थ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥

उपर्जितानां वित्तानां त्याग एकहि रक्षणम्।

तडागोदरसंस्थानां परीवाद इताम्भसाम्॥

पुस्तकष्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम्।

कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्दनम्।

बहूनाम् अल्पसाराणां संहतिः कार्यसाधिका।

तृणैर्गुणत्वमापन्नेः बध्यंते मत्तदंतिनः॥

जलबिन्दु निपातेन् क्रमशः पूर्ण्यते घटः।

स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥

चिन्तनीया हि विपदाम् आदावते प्रतिक्रिया।

न कूपखननं युक्तम् प्रदीप्ते वह्निना गृहे॥

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।

यस्य कृत्यं न जानन्ति मंत्रं वा मंत्रितं परे।

कृतमेवास्य जानन्ति सर्वै पण्डिते उच्यते।

सदयं हृदयं यस्य भाषितं सत्यभूषितम्।

कायः परहिते यस्य कलिस्तस्य करोति किम्॥

गतानुगतिकोलोकः न लोकः पारमार्थिकः

गङ्गासैक्त लिङ्गेन नष्टं मे ताम्रभाजनम्।

दानेन पाणिः न तु कङ्कणेन स्नानेन शुद्धिः न तु चन्दनेन।

मानेन तृप्तिः न तु भोजनेन ज्ञानेन मुक्तिः न तु मुण्डनेन॥

आचार्यात् पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया।

पादं सब्रह्मचारिभ्यः पादं कालक्रमेण च।

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया।

चित्ते वाचि क्रियायां च महता मेकरूपता॥

अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्।

अयोग्यः पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।

आयत्यां गुणदोषज्ञः तदात्वे क्षिप्रनिश्चयः।

अतीते कार्यशेषज्ञो विपदा नाभिभूयते॥

गते शोकं न कुर्वीत भविष्यं नैव चिन्तयेत्।

वर्तमानेषु कालेषु वर्तयन्ति विचक्षणाः।

छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे।

फलान्यापि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषाः इव॥

उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः।

आरिषु यः साधुः स सादुरिति कीर्तितः॥

उद्यमनैव सिध्यंति कार्याणि न मनोरथैः।

नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशंति मुखे मृगा।

अयं निजः परोवेत्ति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

प्रियवाक्य प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।

तस्मात् तदेव वक्त्तव्यं वचने का दरिद्रता।

नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते वने।

विक्रमार्जित सत्त्वस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता।

वज्रादपि कठोराणि मृदुणि कुसुमादपि।

लोकोत्तराणाम चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति।

अन्नदानं परं दानं विद्यादनमतः परम्।

अन्नेन क्षणिका तृप्तिः यवज्जीवं च विद्यया॥

षड् दोषाः पुरुषेणेह ह्यातव्या भूतिमिच्छिता।

निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधः आलस्य दीर्घसूत्रता॥

अकृत्वा परसन्तापम् अगत्वा खलनमताम्।

अनुत्सृज्य सतां वर्त्म यत् स्वल्पमपि तद् बहु॥

अपार भूमि विस्तारम् अगम्य जन संकुलम्

राष्ट्रं संघटनाहीनं प्रभवेन्नात्मरक्षणे॥

कथा ७

आब किछु भाषण-भाख

किछु भाषण-भाख जे हम संगी साथी सभकेँ गप-शपमे दैत रहै छियन्हि से हुनका सभक आग्रह कारण आब एतए दऽ रहल छी।

कम वसा बला दूध सदिखन पीबू आ कम नोन खाउ। माउसक सेवन सेहो कम करू, माँछ बेशी खा सकै छी। अपन आस-पड़ोसक लोकक दिनचर्यापर अहाँक ध्यान अवश्य रहबाक चाही नहि तँ घर बदलि लिअ। कोनो व्यक्तिकेँ जे अहाँ प्रशंसा करब तँ ओ ओकरा लेल बड़ उत्साह बढ़बएवला हएत। अपन पड़ोसीकेँ बगिया वा कोनो आन व्यंजन बना कए खुआऊ आ ओकर बनेबाक विधि सेहो लिखाऊ। ककरो प्रति दुर्भावना वा पूर्वाग्रह नहि राखू। कोनो मॉलमे जाऊ तँ कार खूब दुरगर लगाऊ आ परिवार-बच्चा संगे टहलि कए आऊ। दूरदर्शनपर मारि-पीट बला धारावाहिक नहि देखू आ जे-जे कम्पनी ओकर प्रायोजक अछि तकर उत्पादक बहिष्कार करू। सभ लोक, पशु-पक्षीक प्रति आदर राखू। ककरोसँ गाड़ी माँगी तँ घुरबैत काल पेट्रोल वा डीजल पूर्ण रूपसँ भरबा कऽ घुराऊ, लोक किएक तँ एकर उल्टा करैत छथि, भरल पेट्रोल गाड़ी लऽ जाइ छथि आ रिजर्वमे आनि कए घुरबैत छथि। देखब जे ओ व्यक्ति अहाँक चरचा बड्डु दिन धरि करत आ आगाँसँ गाड़ी देबामे बहन्ना नहि करत। दिनमे पाँच-सात गोटेकेँ अभिवादन अवश्ये करू। एक-आधटा माल-जाल राखू, जे दिल्ली-मुम्बैमे रहै छी तँ तकर बदला कुकुड़ पोसू। मासमे एक बेर सुर्योदय अवश्य देखू आ तरेगण सेहो। दोसराक जन्म दिन आ नाम अवश्य मोन राखू। होटलक खेनाइ परसनिहारकेँ टिप अवश्य देल करू। ककरोसँ भेँट भेलापर आह्लादसँ अभिवादन करू, हाथ मिलाऊ आ सर्वदा आँखि मिला कऽ गप करू। धन्यवाद आ आदरसूचक शब्द अवश्य बाजू। कोनो बाजा बजेनाइ अवश्य सीखू, नहि कोनो आर तँ झालि तँ बजाइये सकै छी। नहाइत काल

गीत गाऊ।

अपन सफलताक आकलन अनका प्रति कएल सेवासँ नापू नञि की ओहि वस्तुसँ जे अहाँ अनका हानि पहुँचा कऽ प्राप्त केने छी। धोखा देनाइ खराप गप छियै् धोखा खेनाइ नहि। साक्षात्कार केना लेबाक चाही ओहिमे की की आवश्यक बिन्दु छै से अवश्य सीखू। अफवाह सुनू मुदा अपना दिससँ ओहिमे कोनो वृद्धि वा योगदान नहि देल करू। अपन बच्चाक चिन्ता वा भएपर ध्यान देल करू। अपन माएक संग बहस नहि करू। सभटा सुनलाहा चीजपर विश्वास नहि करू। अहाँ लग जतेक पाइ अछि ओहिमेसँ किछु बचा कए खर्च करू। बूढ़-पुरानक संग भद्र व्यवहार करू। बुराइ आ अन्यायकेँ कखनो बर्दास्त नहि करू। प्रशंसात्मक पत्रकेँ सम्हारिकेँ राखू। कोनो सेमीनारमे भाषण देलाक बादे छपल भाषण वितरित करू। बियाहक बादेसँ अपन बच्चाक शिक्षा लेल पाइ बचेनाइ शुरू कऽ दिअ। माता-पिता अपन बच्चाकेँ आत्मनिर्भर रहनाइ सर्वदा सिखाबथु। अहाँ तखने मानसिक रूपसँ स्वतंत्र भऽ सकब जखन अपन समस्याक समाधान लेल दोसराक मुँहतक्की नहि करब। विवाह वा बच्चाक पोषण ओतेक भरिगर चीज नहि छैक। जखन अहाँ हँसब तँ स्वतः अहाँ सुन्दर देखा पड़ब, खूब हँसू।जाधरि अहाँ नव-नव काज नहि करब ताधरि नव-नव चीज कोना सीखब? जे अहाँ कोनो काज बिना त्रुटिक करए चाहब तँ ओ काज कहियो नहि भऽ सकत। कोनो खराप भेल सम्बन्धकेँ सुधारबा लेल कतबो देरी भेलाक बादो प्रयास करबाक चाही। मानवीय भावना कोनो काज करबामे आ कतबो कठिन परिस्थितिकेँ पार पएबामे सफल होएत। कोनो मार्गक,कोनो विचारक आ कोनो कार्यक जानकारी ओहिपर आगाँ बढ़लासँ पता चलत, ओहिपर बहस कएलासँ नहि। एकटा दोस वैह अछि जे अहाँक सभ गुण-दुर्गुणसँ अवगत रहलाक बादो अहाँकेँ पसिन्न करैत अछि।

अपन ज्ञान आ अनुभवकेँ सर्वदा बाँटू आ अपन वाक्, कर्म आ निर्णयमे हरदम

नम्र रहू। अहाँक मित्रक लेल जे कियो नीक शब्दक प्रयोग करै छथि तँ तकर जनतब मित्रकेँ अवश्य कराऊ। जे अहाँ बुझने सही काज छैक तकरा अवश्य करू। पहिचान बनबए लेल काज नहि करू वरन् तेहन काज करू जकरा लोक चीन्हि सकए आ मोन राखए। जीवनक पैघ-पैघ परिवर्तन बिना कोनो चेतौनीक अबैत छैक। अपन बच्चाकेँ ई सिखाऊ जे कोनो व्यक्तिक कमीकेँ कम कऽ कए नहि मूल्यांकन करए। जे कोनो काज अहाँ करै छी तकरा मोनसँ करू। कोनो नाटक खतम भेलापर थोपड़ी बजबैमे सर्वदा आगू रहू। सोचू, ओहिपर विश्वास करू, सपना देखू आ ओकरा पूर्ण करबाक साहस राखू।

कथा ८

आब प्रस्तुत अछि हमर २००८-०९ मे लिखल समीक्षा जे विदेहमे ई-प्रकाशित भेल आ फेर हमर पोथी "कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" (२००९) मे संकलित भेल।

केदारनाथ चौधरीक उपन्यास- "चमेली रानी" आ "माहुर"

केदारनाथ चौधरी जीक पहिल उपन्यास चमेली रानी २००४ ई. मे आएल । एहि उपन्यासक अन्त एहि तरहेँ आकर्षक रूपेँ भेल जे एकर दोसर भागक प्रबल माँग भेल आ लेखककेँ एकर दोसर भाग माहुर लिखए पड़लन्हि। धीरेन्द्रनाथ मिश्र चमेली रानीक समीक्षा करैत विद्यापति टाइम्समे लिखने रहथि- "...जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन बाबूकेँ "कन्यादान"क पश्चात् "द्विरागमन" लिखए पड़लनि तहिना "चमेलीरानी"क दोसर भाग उपन्यासकारकेँ लिखए पड़तन्हि"। ई दुनू खण्ड कैक तरहेँ मैथिली उपन्यास लेखनमे मोन राखल जएत। एक तँ जेना रामलोचन ठाकुर जी कहैत छथि- "..पारस-प्रतिभाक एहि लेखकक पदार्पण एते विलम्बित किएक?" ई प्रश्न सत्ये अनुत्तरित अछि। लेखक अपन ऊर्जाक संग अमेरिका, ईरान आ आन

ठाम पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहथि रोजगारमे रहथि मुदा ममता गाबए गीतक निर्माता घुमि कऽ दरभंगा अएलाह तँ अपन समस्त जीवनानुभव एहि दुनू उपन्यासमे उतारि देलन्हि। राजमोहन झासँ एकटा साक्षात्कारमे हम एहि सम्बन्धमे पुछने रहियन्हि तँ ओ कहने रहथि जे बिना जीवनानुभवक रचना संभव नहि, जिनकर जीवनानुभव जतेक विस्तृत रहतन्हि से ओतेक बेशी विभिन्नता आ नूतनता आनि सकताह। केदारनाथ चौधरीक "चमेली रानी" आ "माहुर" ई सिद्ध करैत अछि। चमेली रानी बिक्रीक एकटा नव कीर्तिमान बनेलक। मात्र जनकपुरमे एकर ५०० प्रति बिका गेल। लेखक "चमेली रानी"क समर्पण - "ओहि समग्र मैथिली प्रेमीकेँ जे अपन सम्पूर्ण जिनगीमे अपन कैंचा खर्च कऽ मैथिली-भाषाक कोनो पोथी-पत्रिका किनने होथि"- केँ करैत छथि, मुदा जखन अपार बिक्रीक बाद एहि पोथीक दोसर संस्करण २००७ मे एकर दोसर खण्ड "माहुर"क २००८ मे आबए सँ पूर्वहि निकालए पड़लन्हि, तखन दोसर भागमे समर्पण स्तंभ छोड़नाइये लेखककेँ श्रेयस्कर बुझेलन्हि। एकर एकटा विशिष्टता हमरा बुझबामे आएल २००८ केर अन्तिम कालमे, जखन हरियाणाक उपमुख्यमंत्री एक मास धरि निपत्ता रहलाह, मुदा राजनयिक विवशताक अन्तर्गत जाधरि ओ घुरि कऽ नहि अएलाह तावत हुनकापर कोनो कार्यवाही नहि कएल जा सकल। अपन गुलाब मिश्रजी तँ सेहो अही राजनीतिक विवशताक कारण निपत्ता रहलोपर गद्दीपर बैसले रहलाह्, क्यो हुनका हँटा नहि सकल। चाहे राज्यक संचालनमे कतेक झंझटि किएक नहि आएल होअए।

उपन्यास-लेखकक जीवनानुभव, एकर सम्भावना चारि साल पहिनहिए लिखि कऽ राखि देलक। भविष्यवक्ता भेनाइ कोनो टोना-टापरसँ संभव नहि होइत अछि वरन् जीवनानुभव एकरा सम्भव बनबैत अछि।

एहि दुनू उपन्यासक पात्र चमत्कारी छथि, आ सफल सेहो । कारण

उपन्यासकार एकरा एहि ढंगसँ सृजित करैत छथि जेना सभ वस्तुक हुनका व्यक्तिगत अनुभव होइन्हि।

"चमेली रानी" उपन्यासक प्रारम्भ करैत लेखक एकर पहिल परीक्षामे उत्तीर्ण होइत छथि जखन एकर लयात्मक प्रारम्भ पाठकमे रुचि उत्पन्न करैत अछि। -कीर्तिमुखक पाँच टा बेटाक नामकरणक लेल ओकर जिगरी दोस कन्टीरक विचार जे "पाँचो पाण्डव बला नाम बेटा सबहक राखि दहक। सुभिता हेतौ"। फेर एक ठाम लेखक कहैत छथि जे जतेक गतिसँ बच्चा होइत रहैक से कौरवक नाम राखए पड़ितैक। नायिका चमेली रानीक आगमन धरि कीर्तिमुखक बेटा सभक वर्णन फेर एहि क्रममे अंग्रेज डेम्सफोर्ड आ रूपकुम्मरिक सन्तान सुनयनाक विवरण अबैत अछि। फेर रूपकुम्मरिक बेटी सुनयनाक बेटी शनिचरी आ नेताजी रामठेंगा सिंह "चिनगारी"क विवाह आ नेताजी द्वारा शनिचरीकेँ कनही मोदियानि लग लोक-लाजक द्वारे राखि पटना जाएब, नेताजीक मृत्यु आ शनिचरी आ कीर्तिमुखक विवाहक वर्णन फेरसँ खिस्साकेँ समेटि लैत अछि।

तकर बाद चमेली रानीक वर्णन अबैत अछि जे बरौनी रिफाइनरीक स्कूलमे बोर्डिंगमे पढ़ैत छथि आ एहि कनही मोदियानिक बेटी छथि। कनही मोदियानिक मृत्युक समय चमेली रानी दसमाक परीक्षा पास कऽ लेने छथि। भूखन सिंह चमेली रानीक धर्म पिता छथि। डकैतीक विवरणक संग उपन्यासक पहिल भाग खतम भऽ जाइत अछि।

दोसर भागमे विधायकजीक पाइ आकि खजाना लुटबाक विवरण, जे कि पूर्व नियोजित छल, एहि तरहेँ देखाओल गेल अछि जेना ई विधायक नांगटनाथ द्वारा एकटा आधुनिक बालापर कएल बलात्कारक परिणामक फल रहए। आब ई नांगटनाथ रहथि मुख्यमंत्री गुलाब मिसिरक खबास जे राजनीतिक दाँवपेंचमे विधायक बनि गेलाह।

ई चरित्र २००८ ई.क अरविन्द अडिगक बुकर पुरस्कारसँ सम्मानित अंग्रेजी उपन्यास "द ह्वाइट टाइगर"क बलराम हलवाइक चरित्र जे चाहक दोकानपर काज करैत दिल्लीमे एकटा धनिकक ड्राइवर बनि फेर ओकरा मारि स्वयं धनिक बनि जाइत अछि, सँ बेश मिलैत अछि आ चारि बरख पूर्व लेखक एहि चरित्रक निर्माण कऽ चुकल छथि। फेर के.जी.बी. एजेन्ट भाटाजीक आगमन होइत अछि जे उपन्यासक दोसर खण्ड "माहुर" धरि अपन उपस्थिति बेश प्रभावी रूपेँ रखबामे सफल होइत छथि।

उपन्यासक तेसर भागमे अहमदुल्ला खाँक अभियान सेहो बेश रमनगर अछि आ वर्तमान राजनीतिक सभ कुरूपताकेँ समेटने अछि। उपन्यासक चारिम भाग गुलाब मिसिरक खेरहा कहैत अछि आ फेरसँ अरविन्द अडिगक बलराम हलवाइ मोन पड़ैत छथि। भुखन सिंहक संगी पन्नाकेँ गुलाब मिसिर बजबैत अछि आ ओकरा भुखन सिंहक नांगटनाथ आ अहमदुल्ला अभियानक विषयमे कहैत अछि। संगहि ओकरा मारबाक लेल कहैत अछि से ओ मना कऽ दैत छै। मुदा गुलाब मिसिर भुखन सिंहकेँ छलसँ मरबा दैत अछि।

पाँचम भागमे भुखन सिंहक ट्रस्टक चरचा अछि, चमेली रानी अपन अड्डा छोड़ि बैद्यनाथ धाम चलि जाइत छथि। आब चमेली रानीक राजनीतिक महत्वाकांक्षा सोझाँ अबैत अछि। स्टिंग ऑपरेशन होइत अछि आ गुलाब मिसिर घेरा जाइत छथि।

उपन्यासक छठम भाग मुख्यमंत्रीक निपत्ता रहलाक उपरान्तो मात्र फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाओल जएबाक चरचा होएबाक अछि, जे कोलिशन पोलिटिक्सक विवशतापर टिप्पणी अछि।

उपन्यासक दोसर खण्ड "माहुर"क पहिल भाग सेहो घुरियाइत-घुरियाइत चमेली रानीक पार्टीक संगठनक चारू कात आबि जाइत अछि। स्त्रीपर

अत्याचार, बाल-विधवा आ वैश्यावृत्तिमे ठेलबाक तेहन संगठन सभकेँ लेखक अपन टिप्पणी लेल चुनैत छथि।

माहुरक दोसर भागमे गुलाब मिसिरक राजधानी पदार्पणक चरचा अछि। चमेली रानी द्वारा अपन अभियानक समर्थनमे नक्सली नेताक अड्डापर जएबाक आ एहि बहन्ने समस्त नक्सली आन्दोलनपर लेखकीय दृष्टिकोण, संगहि बोनक आ आदिवासी लोकनिक सचित्र-जीवन्त विवरण लेखकीय कौशलक प्रतीक अछि। चमेली रानी लग फेर रहस्योद्घाटन भेल जे हुनकर माए कनही मोदियाइन बड्डु पैघ घरक छथि आ हुनकर संग पटेल द्वारा अत्याचार कएल गेल, चमेली रानीक पिताक हत्या कऽ देल गेल आ बेचारी माए अपन जिनगी कनही मोदियाइन बनि निर्वाह कएलन्हि। ई सभ गप उपन्यासमे रोचकता आनि दैत अछि।

माहुरक तेसर भाग फेरसँ पचकौड़ी मियाँ, गुलाब मिसिर, आइ.एस.आइ. आ के.जी.बी.क षडयन्त्रक बीच रहस्य आ रोमांच उत्पन्न करैत अछि।

माहुरक चारिम भाग चमेली रानी द्वारा अपन माए-बापक संग कएल गेल अत्याचारक बदला लेबाक वर्णन दैत अछि, कैक हजार करोड़क सम्पत्ति अएलासँ चमेली रानी सम्पन्न भऽ गेलीह।

माहुरक पाँचम भाग राजनैतिक दाँव-पेंच आ चमेली रानीक दलक विजयसँ खतम होइत अछि।

विवेचन: उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होइत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक "डॉन क्विक्जोट", जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम

शताब्दीक आगमनसँ मात्र किछु समय पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवतीक चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, आ तखन नीक- खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि। एहि सभक संग जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ तखन एतए दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना कएलन्हि जाहिमे पाठक यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

कथा ९

साकेतानन्द प्रकरण

साकेतानन्दक १२ नवम्बर २००९ केर पोस्ट,

http://saketanands.blogspot.com/2009/11/blog-post_12.html

ओ लिखैत छथि:

"हमरा लगैये जे जेना नेता सब के भीड,मंच आ माइक के देखिते किछु

सबसबाय लगैत छै, तहिना किछु लेखको होइ छनि। कहिया कत' दू_चारि टा रचनाक की चर्चा भेलनि, बस भ' गेला स्थापित । तहिया स' जँ कोनो साहित्यिक मंच नज़रि एलनि, कि कुर्सी हथियेबालय वृतोष्मि भेटता। पटना मे मुन्नाक़िद पुस्तक मेला मे नामवर संगे आलोकधन्वा के बैसल देखि लागल जे लेखन आ साहित्यक राजनीति, दुनू दू छोरक चीज छैक, जे एक संगे भैये ने सकैत अछि। मैथिलीमे एखन तक अपन मांटिक़ उदारता, अयाचीवृत्तिक छिकार छैके। एखनो बिना विचारने_सिचारने, जे ई के छापत आ कि तहू स' बढि क' जे एकरा के पढत ? लोक लिखैये, लिखिते जारहल अछि।

हमरा जनैत पढैक वस्तु(कोन आ केहेन ?) भेटतै त' लोक पढबे करतै।

तैं कि आब लोक 'चमेली रानी' लिखय ?"

<u>कथा १०</u>

<u>ई कोनो कथा नै</u>

साकेतानन्द विद्वान लोक रहथि ईर्ष्यावश लिखि गेला आ से प्रतारणा हरिमोहन झाकेँ सेहो सहऽ पड़ल रहन्हि। ने हरिमोहने झा आ नहिये केदार नाथ चौधरी सुभाषित मात्र रटने छला। दत्त-चटर्जीक "इण्ट्रोडक्शन टू इण्डियन फिलोसोफी"क हिन्दी अनुवाद ओ अनुवाद-पुरस्कार लेल नै वरन् अपन दर्शनशास्त्रक प्रोफेसरशिपकेँ सिद्ध करय लेल केने छला। संस्कृतक श्लोक सभ ओ अपन पात्र खट्टर-ककाकेँ सेहो रटेने छला प्रयोगमे अन्तर मुदा भेटत।

लोक मैथिली लेल अपन सर्वस्व लुटेने अछि, डॉ कल्पना मणिकान्त मिश्र आ केदारनाथ चौधरी मात्र उदाहरण छथि। लोक ठकहरबा सभसँ डेराइत अछि

खास कऽ रंगमंच आ फिल्मक नामपर टण्डेली मारि रहल लोक सभसँ। भ्रमरजीक तँ सी.डी.ये लोक अपन नामसँ निकलबा लेलक। सएह हाल साहित्योमे छै।

जँ उपरका कथा सभ अहाँकेँ सिहरेलक तँ समानान्तर धाराक संग चलि पड़ू आ जँ से नै तँ हमर प्रयास जारी रहत, आ तइ लेल विशेषांक सभ निकलैत रहत।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

नवम्बर 2021 कैं विदेह "केदारनाथ चौधरी विशेषांक" प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा केलक आ प्रस्तुत अछि ई विशेषांक। एहि सूचनाकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा।

मैथिलीमे एकटा विचित्र स्थिति छै हिंदीसँ विचारधारा आयात करबाक। आ एहने एकटा विचार छै "गंभीरता बनाम लोकप्रियता"। हिंदी आ मैथिली छोड़ि आन भाषामे ई बेमारी नै भेटत। उर्दूमे जावेद अख्तर अपन फिल्मी डायलाग लेल, अपन फिल्मी गीत लेल सिनेमा केर पुरस्कार पाबै छथि तँ अपन गजल लेखन लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार सेहो। हिंदी केर नकलक कारणे मैथिलीमे ई स्थिति कहियो नै आबि सकत। वस्तुतः "गंभीरता बनाम लोकप्रियता" केर वाद किछु अगंभीर ओ अलोकप्रिय लेखक सभ द्वारा "गंभीर मुदा लोकप्रिय" लेखक केर विरुद्ध रचल षडयन्त्र छै। चंदा झा गंभीर ओ लोकप्रिय छथि तँ हरिमोहन झा सेहो। सीताराम झा होथि, किरणजी होथि वा कि मधुपजी। ई सभ गंभीर आ लोकप्रिय दूनू छथि। जे लोकनि लोकप्रियताकेँ गंभीरतासँ अलग मानै छथि तिनकर रचनाकेँ नीकसँ विवेचना करू तँ हाथमे सुन्ने-सुन्ना आएत।

केदारनाथ चौधरी मैथिलीमे एहन नाम छथि जिनका लग गंभीरता सेहो छनि आ लोकप्रियता सेहो। लोकप्रियता तेहन जे हिनका छिटकी मारबाक लेल 2004 सँ धरि एखन धरि बारि देल गेल (अपवादमे प्रबोध साहित्य सम्मान ओ एक-दू स्थानीय सम्मान समारोह मानू)।

एहन नै छै जे केदारजीपर लिखल नै गेलै मुदा ओ सभ एकट्ठा नै भऽ सकल

छै तँइ ओकर प्रभाव हेड़ा गेल छै। एहि संदर्भमे हम कहि सकै छी जे विदेहक ई प्रस्तुत विशेषांक एहन पहिल प्रयास अछि जाहिमे ई बुझबाक प्रयास कएल अछि जे केदारनाथजीक रचना केतक गंभीर आ कतेक लोकप्रिय अछि। ई अलग बात जे हम सभ कतेक सफल वा असफल भेलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक केर शुरूआत विदेहक आने विशेषांक जकाँ नव आलोचक-समीक्षक सभहक आलेखसँ कएल जा रहल अछि। संगे-संग ई क्रम ने तँ उम्रक वरिष्ठता केर पालन करैए आ ने रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एतेक धेआन जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै हेतनि।

पाठक जखन एहि विशेषांककेँ पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से सोझे-सोझ हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई धेआन रखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हरेक वर्तनी बला लेखककेँ स्वीकार करैत एलैए। तँइ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बादो बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमरे सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बसिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा सोचियौ जे 72-80 पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक केर किछु रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी जोर दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजककेँ कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करहे पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधारक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर

समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा फेर पाइ लागि जेतै) तँइ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर सुविधा छै जे बीचमे (इंटरनेटसँ प्रिंट हेबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा समाग्रिए बसिया रहत तँ सही वर्तनी रहितो नव अध्याय नै खुजि सकत तँइ हमरा लोकनि वर्तनी बला मुद्दापर समझौता केलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि ओ केलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एतेक शुद्ध मानैत छी एकै रचनामे तीनू रूप भेटि जाएत। आन शब्दक लेल एहने बूझू।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आने विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ पढ़ि एकर नीक-बेजाएपर अपन सुझाव देताह। विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक केर पोथी रूप "स्वतंत्रचेता" केर नामसँ प्रकाशित भेल उम्मेद जे भविष्यमे केदारनाथ चौधरीजीपर केंद्रित एहि विशेषांक केर पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा "जीबैत मुदा उपेक्षित" शृखंलामे प्रकाशित भेल आन विशेषांक सभहक लिस्ट एना अछि (एहिठाम जे अंकक लिस्ट देल गेल अछि ताहि अंकपर क्लिक करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत)-

1) अरविन्द ठाकुर विशेषांक 189 म अंक 1 नवम्बर 2015 (ई विशेषांक 2020 मे पोथी रूपमे सेहो आएल अछि(
2) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक 191 म अंक 1 दिसम्बर 2015
3) रामलोचन ठाकुर विशेषांक 319म अंक
4) राजनन्दन लाल दास विशेषांक 333म अंक
5) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक 15 जून 2022

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

केदारनाथ चौधरीजीक संक्षिप्त परिचय

एहिठाम प्रस्तुत अछि केदारनाथ चौधरीजीक संक्षिप्त परिचय। एहि परिचयक अधिकांश तथ्य अरविन्द गुप्ताजी एवं कामेश्वर चौधरीजीसँ भेटल अछि।

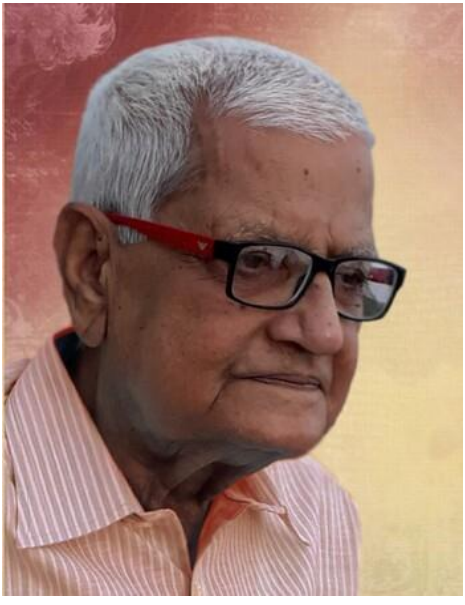

विशेष परिचय- मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गाबय गीत' केर निर्माता द्वयमेसँ एकटा निर्माता छथि केदारनाथ चौधरी आ दोसर मदनमोहन दास। बादमे आर्थिक मजबूरीवश तेसर सहनिर्माता भेलखिन उदयभानु सिंह।

नाम : केदारनाथ चौधरी
माता-स्व. कुसुमपरी देवी

पिता- स्व. किशोरी चौधरी
जन्म: 03/01/1936
ग्रा.+पत्रा. नेहरा (दरभंगा)
अन्य पारिवारिक सदस्य-
पत्नी-श्रीमती कुमुद चौधरी
संतान- प्रथम पुत्री-श्रीमती किरण झा, द्वितीय पुत्री-श्रीमती अर्चना चौधरी

शिक्षा- 1958 ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, 1959 ई.मे लॉ। 1969 ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर, 1971 ई.मे मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन विषयमे गोल्डेन गेट यूनिवर्सिटी, सानफ्रांसिस्को, USA सँ एम.बी.ए., 1978मे भारत आगमन। 1981-86क बीच तेहरान आ प्रैंकफुर्तमे। फेर बम्बई, पुणे होइत रिटायरमेंटक बाद 2000 सँ लहेरियासराय, दरभंगामे निवास।

वर्तमान पता- हिडेन कॉटेज, बंगाली टोला, लहेरियासराय, दरभंगा-846001

लेखन /प्रकाशन (एखन धरि केदारजीक जतेक पोथी प्रकाशित भेलनि से विदेह पोथी डाउनलोडपर राखल गेल अछि आ एहिठाम जे पोथीक लिस्ट देल गेल अछि ताहिमे पोथीक नामपर क्लिक करबै तँ ओ पोथी खुजि जाएत)
1) चमेलीरानी (विधा-उपन्यास, प्रकाशन वर्ष- 2004, दोसर संस्करण-2007, प्रकाशक-इंडिका इंफोमीडिया, दिल्ली, एहि पोथीक चारिम संस्करण हेबाक सेहो सूचना अछि मुदा हम तेसर ओ चारिम संस्करण नहि देखि सकल छी)
2) करार (विधा-उपन्यास, प्रकाशन वर्ष- 2006, प्रकाशक-इंडिका इंफोमीडिया, दिल्ली)
3) माहुर (विधा-उपन्यास, प्रकाशन वर्ष- 2008, प्रकाशक-इंडिका

इंफोमीडिया, दिल्ली, ई पोथी चमेली रानीक दोसर भाग छै)

4) अबारा नहितन (विधा- संस्मरणात्मक उपन्यास, प्रकाशन वर्ष- 2012, दोसर संस्करण-2013 प्रकाशक-इंडिका इंफोमीडिया, दिल्ली। ई पोथी बर्ख 2015 मे नेशनल बुक ट्रस्टसँ सेहो छपल।)

5) हीना (विधा-उपन्यास, प्रकाशन वर्ष- 2013, दोसर संस्करण-2020, प्रकाशक-इंडिका इंफोमीडिया, दिल्ली)

6) अयना (विधा-उपन्यास, प्रकाशन वर्ष- 2018, प्रकाशक-इंडिका इंफोमीडिया, दिल्ली)

सम्मान- (एहिठाम जाहि सम्मानक लिस्ट देल गेल अछि ताहिमे सम्मानक नामपर क्लिक करबै तँ ओहि सम्मानक सोर्स खुजि जाएत)

1) विदेह साहित्य सम्मान, बर्ख-2013 (झारखंड मैथिली मंच, राँची द्वारा)

2) प्रबोध साहित्य सम्मान, बर्ख-2016

3) केदार सम्मान, बर्ख-2016,'अबारा नहितन' लेल

4) वर्तमानमे ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयसँ तीन छात्र द्वारा केदारनाथ चौधरीजीक साहित्यपर शोधरत छथि।

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

कल्पना झा, पटना

इएह गूड़ खेने,कान छेदौने

विदेहक सम्पादक द्वारा जखन केदारनाथ चौधरी विशेषांक निकालबाक घोषणा भेल तखन जिज्ञासा भेल जे आखिर ई कोन महान साहित्यकार छथि जनिका उपर विशेषांक निकालि रहल अछि विदेह। जिज्ञासा शान्त करबा लेल जखन हिनकर पोथी सभ पढ़ब शुरू केलहुँ तँ एकक बाद एक लगातार चमेलीरानी,करार,माहुर आ अबारा नहितन, चारि गोट उपन्यास पढ़ि गेलहुँ। पोथी सभ पढ़ि एक टा अपराध बोध सन लागए लागल,एहन उत्कृष्ट रचना सभक रचनाकारक नामसँ हम एखन धरि अनभिज्ञ छलहुँ,ताहि लेल। जखन कि 'ममता गाबए गीत' सिनेमा जकर निर्माणक कथा अछि "अबारा नहितन" से देखने छलहुँ अस्सीक दशकमे,प्रायः १९८३वा १९८४मे। मुदा निर्माताक नामसँ अनभिज्ञ छलहुँ। दस-बारह बरखक बएसमे ओतबा उहि नहि रहैत छै लोककेँ जे सिनेमाक निर्माता-निर्देशकक जनतब भेटैक। ताहि दिन परदाक पाछाँक लोक ततेक चर्चामे रहितो नहि छल।

एहन रोचक उपन्यास सभक रचयिताक नाम पर्यन्त नहि सुनल छल हमरा,जखन कि हम अपनाकेँ साहित्य प्रेमी लोक बुझैत रहल छलहुँ,नहि जानि कोना,किएक?

मैथिली साहित्य माने महाकवि विद्यापति, हरिमोहन झा, यात्रीजी,मधुप जी,किरण जी,उपेन्द्रनाथ झा'व्यास'जी,लिली रे, प्रभास कुमार चौधरी,राजकमल,ललित,एतबे सुनल/बूझल छल। माने किछु साहित्य अकादमी विजेता साहित्यकारक नामसँ आ हुनकर कृत्य सभसँ अवगत छलहुँ,बस। केहन कूपमंडूकता छल,आब सोशलमीडियाक कृपासँ घर बैसल दुनिआँ देखि/सुनि रहल छी,तेहेन सन लागैए।निश्चित रूपसँ इंटरनेट एक अत्यन्त उपयोगी आविष्कार अछि विज्ञानक।

केदारनाथ चौधरी जीकेँ मैट्रिकसँ एम ए धरिक अध्ययन कालमे जे मैथिली प्रेम रोग लगलनि, हुनक ओहि मैथिली प्रेम रोगकेँ जँ मैथिल समाजसँ समुचित सहयोग भेटितनि,उत्साहवर्धन कएनिहार लोक भेटितनि तँ मैथिल समाज, मैथिली भाषाक कतेक उत्थान भेल रहैत। मुदा मैथिल समाजक असहयोगी प्रवृत्तिक कारणेँ एक टा प्रतिभासंपन्न व्यक्तित्व 'हिडेन कॉटेज'क सीमारेखामे सीमित भ' क' रहि गेलाह। हुनक व्यथित मोन मैथिल लोक आ मैथिल समाजसँ विरक्त सन भए गेल हेतनि,तेहेन सन लागैत अछि।ओ मैथिली प्रेमी तन मन धन लगा देलनि मैथिली सिनेमा "ममता गाबए गीत"क निर्माणमे,आ बदलामे हुनका प्रोत्साहन, सराहना ओ प्रशंसाक जगहपर बस संघर्ष, हतोत्साह टा भेटलनि।

"अबारा नहितन" पोथीक माध्यमसँ अपन संघर्षक एहन रोचक विवरण देलनि अछि,जे एकहु क्षण लेल पाठकक मोन दिक नहि भ' सकैत अछि,जे ई की अपन दुखनामा लिखि क' प्रकाशित करा लेलनि अछि लेखक। संस्मरणात्मक उपन्यास रहितहुँ, एहि उपन्यासमे सभ तत्वक समावेश अछि,जे एक टा उपन्यास विधाक रिक्वायरमेंट होइत छै। माने गामसँ ल' क' शहर धरिक सामाजिक परिस्थितिक चित्रण,ओहि समयक राजनीतिक परिस्थिति,गाम घरक आपसी

वैमनस्यता, कुटचालि,भ्रष्टाचार, चीन ओ पाकिस्तान द्वारा भारतपर आक्रमणक चर्चा,प्रवासी मैथिल समाजक दृष्टिकोण अपन मिथिला-मैथिली लेल,सभ टा समटैत अपन व्यथा कथा कहने छथि आ रोचक ढंगसँ कहने छथि। अपन मैथिली प्रेम रोगक चर्चा कतेक सहज,सरल रूपेँ कएलनि अछि लेखक,से एहि छोट सन अंशमे देखल जा सकैछ-"रोगक नाम भेल मैथिली प्रेम रोग।अपन व्यथाक विवरण दिअ पड़त।अहाँकेँ हमर व्यथा राग केहन लागल तकर चिंता हमरा कनिकबो नहि अछि। हमर मोनक संताप अबस्से कम भ' जाएत तेँ हमरा बड़बड़ाए दिअ।" अपन मोनक संताप कम करबाक क्रममे एहन उत्कृष्ट पोथी पाठकक सोझाँपरसब साधारण गप्प नहि।

"अबारा नहितन" उपन्यास पढ़ि जे त्वरित प्रतिक्रिया हमर छल, जे हम मोने मोन बड़बडेलहुँ, "अरे ! एक टा फिल्म तँ एहि पोथीक कथानकपर सेहो बनि सकैत अछि।" 'ममता गाबए गीत' फिल्म बनेबाक क्रममे फिल्मक निर्माताद्वय केदारनाथ चौधरी आ महंथ मदन मोहन दास द्वारा भोगल एहि व्यथा-कथापर 'सुपरहिट' फिल्म बनि सकैत अछि । ई गप्प हम हास्य-विनोदमे नहि,गंभीरतासँ कहि रहल छी। एहि फिल्मक नाम "इएह गूड़ खेने कान छेदौने" राखल जेबाक चाही। हमर अनुमाने टा नहि,पूर्ण विश्वास अछि जे एहि फिल्मकेँ 'ममता गाबए गीत' फिल्मसँ बेसी पसिन करताह मैथिली-प्रेमी दर्शक।कारण एहिमे जे लिखल अछि से यथार्थ अछि,काल्पनिक किछु नहि। आ सत्य घटनापर आधारित,रियल हीरो बला कथापर बनल फिल्म बेसी पसिन कएल जा रहल अछि,एखनुक समयमे। चाहे ओ कोनो व्यक्तिक जीवनपर आधारित होअए किंवा कोनो ऐतिहासिक घटनापर।

मैथिल समाजक सर्वश्रेष्ठ उपाधि "अबारा नहितन" ग्रहण क' आ अपन मान-सम्मान एवं अभिमानकेँ थुर्री-थुर्री होइत देखि,जखन लेखक आ हुनकर मित्र मदन भाइ कलकत्तासँ आपस दरभंगा एबाक निश्चय केलनि,तखन निश्चित

इएह फकड़ा मोनमे आएल हेतनि "इएह गूड़ खेने,कान छेदौने।" जखन कि मैथिली भाषामे फिल्म बना क' लाभ होएत, यश भेटत आकी मैथिल समुदायक बीच प्रशंसाक पात्र बनब,ताहि दिश हिनका लोकनिक ध्यान गेले नहि रहनि।मात्र मैथिली भाषाक रक्षार्थ फिल्म बनेबाक आयोजन कएने रहथि,जेना कि लेखक लिखलनि अछि एहि उपन्यासमे। एहि पोथीमे मैथिलीक पहिल सिनेमाक निर्माण-यात्राक बहन्ने मैथिल समाजमे यत्र-तत्र उपलब्ध पंडित, बुधिआर,बुद्धिजीवी,विद्वान, जे कहल जाए,तनिकर सभक मानसिकताक सटीक आ निर्भीक चित्रण सेहो कएल गेल अछि। उपन्यासक मुख्य पात्र महंथ मदन मोहन दास जीक मुहेँ कहल गेल वक्तव्य देखल जा सकैछ-"मिथिलामे पंडित छथि,बुधिआर छथि,बुद्धिजीवी छथि,मुदा सभटा विद्वान एकटा खास संभ्रांत जातिक छथि। सभहक दुआरिपर अहंकारक माला टाँगल छनि। ओ भाषण देबामे कुशल छथि, कविता कर'मे निपुण छथि, कथा लिख'मे पटु छथि आ आन आन गुणसँ सेहो विभूषित छथि। मुदा तमाम पंडितक बीच प्रतिस्पर्धा छनि। कियो किनकोसँ छोट नहि।सभटा पंडितकेँ एक मंचपर आनब असंभव। एक दोसराक आलोचना करैत करैत अपन अपन अलग अलग मंडली बना क' अपन भितरका इर्खाक पूजे टा क' रहल छथि। आब विचारियौ जे एहि ठामक पंडितक एहन स्वभाव किएक छनि।एकर जवाब अछि जे अत्यधिक संस्कारी,अत्यधिक पांडित्य एहन विरल स्वभावकेँ जन्म दैत अछि। वशिष्ठ एवं विश्वामित्र दुनूक तर्क वितर्क आ एक दोसराकेँ पछाड़ैक जन्मजात प्रवृत्ति। तकरे प्रतिफल अछि जे सभटा पंडित अपन अपन अहंकारक ओढ़नामे नुकाएल छथि। मिथिलाक पांडित्य फूल नहि काँट बनि गेलैए। ई काँट जाबे तक अगिला पाँतमे बनल रहतैक,विद्यापति समारोह होइत रहतैक। मुदा मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रगतिमे मुख्यत: की बाधक छैक, तकर सही सही जानकारी कहियो नहि भेटतै।"

मिथिलाक महान तथाकथित हाइप्रोफाइल व्यक्तित्वक मानसिकताक विश्लेषण करैत एकटा दोसर प्रसंग सेहो मोन पड़ैए। बंबइमे फिल्म "ममता गाबए गीत" लेल वितरकक खोजमे अपसिआँत भेल लेखक,मदन मोहन जी आ भानु बाबूक पाला जखन पड़ैत छनि इनकम टैक्स महकमाक कमीश्नर साहबसँ। महाराष्ट्र सरकारमे चीफ ड्रग कंट्रोलर जीक नाम लैते देरी हुनकर मिजाजक पलटी मारब,महान मैथिलक प्रतिद्वंद्विताक पोल खोलैत प्रकरण अछि। दू गोट महान मैथिल आत्मा, एक दोसराक एहन प्रतिद्वंद्वी ? दुखद अछि ई स्थिति। एहि प्रतिद्वंदिताक फेरामे प्रवासी मैथिल दू खेमामे बँटि जाइत अछि। दुनू महान मैथिलक माथपर सोनाक पाग। सोनाक पागमे कलयुगक वास। कलयुगक सिपहसलार भेल अहंकार। अहंकारक पुत्रवधू भेलीह इर्खा। तोरासँ हम कोन बातमे छोट। तोँ बड़ पैघ, तँ सड़ अपन घरमे। दू फाँक भेल मैथिल समुदायक एकहि टा कार्यक्रम छलै। अपन भाषा अर्थात मैथिली भाषामे एक दोसराकेँ गाड़ि पढ़ब।जे होउक,तन-मन-धनसँ बनाएल मैथिलीक पहिल फिल्म "ममता गाबए गीत" प्रवासी मैथिल महासंघक दू फाँक भेल चक्कीमे पिसा गेलनि।

एहन भयावह स्थितिमे केहनो मैथिली प्रेमी, मैथिल समाजक उपकार लेल कोनो काज करबाक सहास कोना क' सकताह। तैँ बेर बेर लेखक अपन कपारकेँ कोसैत सन चर्चा करैत छथि अपन मैथिली प्रेम रोगक। एहन सन जेना मति मारल गेल छलनि जे ई असाध्य रोग लगलनि। लेखकक शब्दसँ स्पष्ट बुझबामे आबि रहलए,जे मैथिली प्रेम रोगसँ ग्रसित होएब,दुर्भाग्यक गप्प-"सरल चित्त एवं मैथिली भाषालेल पूर्णत: समर्पित दीपक जीक सम्पर्कमे रहैत रहैत हमरा मैथिली प्रेम रोग नीक जकाँ जकड़ि लेलक। वयसक संग रोगमे विस्तार होइत गेल।" ई मैथिली प्रेम रोग सौभाग्यक गप्प बनि सकैत छलनि, जँ समाजक प्रतिष्ठित, बुद्धिजीवी, बुधिआर लोकसँ, एहन मैथिली प्रेम रोगीकेँ उचित मान सम्मान आ समर्थन भेटितनि।

मुदा एकरा विडम्बने कहल जा सकैछ जे लेखकक मैथिली प्रेम,हुनका मात्र दर्दे टा देलकनि। हुनकर दर्द शब्दक माध्यमसँ कोना बहराएल छनि से देखल जाए - "मैथिली प्रेम रोगक संबंध कोनो लेन-देन,नफा-नोकसानसँ नहि,मात्र हृदयक ओहि तन्तुसँ छैक जतए केवल दर्द छैक। दर्दमे पीड़ामे रोगी फुइस नहि बाजैत अछि।"

मैथिली साहित्यिक जगतमे व्याप्त अराजक स्थितिक भयावहताक चर्चा एहि पोथीक एक टा प्रसंगमे हिन्दी साहित्यक सफल ओ प्रभावशाली लेखक फणीश्वरनाथ रेणु जीक वक्तव्यक माध्यमसँ राखल गेल अछि,जखन "ममता गाबए गीत" फिल्मक म्युजिक डाइरेक्टर श्याम शर्मा लेखककेँ कहैत छथिन, "मुहूर्त त' काल्हि होएत। आजुक काज शेष भ' गेलए। की हर्ज हमसभ फणीश्वरनाथ रेणुसँ भेंट करए चली ? हुनका कल्हुका मुहूर्तक निमंत्रण देबनि आ थोड़ेक गप्प-सप्प सेहो करब।"

रेणु जी गप्पक क्रममे कहैत छथिन, "हमहूँ मिथिलेक छी आ हमरो मातृभाषा मैथिलीए अछि। नेनामे हम जखन नेपालक विराटनगरमे रहैत रही,तखन मैथिली भाषामे कइएक-टा कथा लिखने छलहुँ। मुदा मैथिली भाषाक क्षेत्र सकुचल ,समटल आ एक विशेष जातिक एकाधिकारमे। अपने लिखू,अपने पढ़ू।श्रोताक अभाव,खैर छोड़ू ओहि प्रसंगकेँ। समय बदललैए आ आब मैथिली भाषामे फिल्म बनि रहलैए,ई हमरा प्रसन्न क' रहलए।" (पृष्ठ संख्या-८१)

उपन्यास पढ़ैत काल फणीश्वरनाथ जीक उपर्युक्त वक्तव्य पढ़ि हम सोचमे पड़ि गेलहुँ, माने मैथिली साहित्यक ई स्थिति १९६३-६४ ई.सँ एखन धरि,एकहि रंग रहि गेल।अपने लिखू,अपने पढ़ू बला स्थितिमे कोनो बहुत बेसी सुधार नहिए सन बुझना जाइत अछि।

मैथिली पोथीक उपलब्धताक समस्याक चर्चा सेहो आएल अछि,माने पोथी-पत्रिकाक वितरणक समुचित व्यवस्था, व्यवस्थित नहि रहलाक कारण सेहो पाठक धरि नहि पहुँचि पाबैत अछि पोथी सभ। ओना आब ऑनलाइन उपलब्ध होमए लागल अछि, तथापि ऑनलाइन ऑर्डर ओतबा सहज नै बुझाइत छै बहुत लोककेँ। गामे-गाम,शहरे-शहर एक टा सुनिश्चित स्थानपर मैथिली पोथीक उपलब्धता एखनो धरि नहिए भेल अछि। पता लगाबए पड़ैत छै, जे फलाँ पोथी कतए उपलब्ध भ' सकैए। ओना किनबाक इच्छा रहतनि पाठककेँ,तँ पातालोसँ ताकि लेताह मुदा पोथी कीनि क' नहि पढ़बाक बेमारी सेहो सभदिना रहलनि,मैथिल समाजक लोककेँ।

उपन्यासमे एकर चर्चा सेहो भेल अछि।देखल जाए-"कका कहलनि-कैंचा खर्च क' पत्रिका किननिहार धरतीक एहि भागमे कियो नहि भेटतौ,तैँ हम पत्रिका बेचै नहि छी,बिलहै छी। एक-दू दिनक बाद पत्रिकाक मूल्य नेताजीकेँ पहुँचा दैत छियनि। इहो कहि आबैत छियनि,जे पत्रिका हाथे हाथ बिका गेल।" स्थिति एखनो नहि बदलल अछि।मैथिली भाषाक पत्रिका एखनहु अहिना बिलहल जाइत अछि,बहुत ठाम। पत्रिका बिलहि, प्रकाशककेँ वितरक पाइ पहुँचा दैत छथि,ई कहि जे पत्रिका बिका गेल।

मैथिली भाषाक ई स्थिति दुखद। एहि भाषाक अपन लिपि छै,अपन व्याकरण छै आ सभसँ पैघ विद्यापति सन महान कविक आशीर्वाद छैक। मैथिली भाषाकेँ ई सामर्थ्य छैक जे ओ मिथिलाक संस्कृति, सभ्यता एवंपरम्पराकेँ अक्षुण्ण राखि सकैत अछि। मुदा ई वाक्पटुतासँ नहि कर्तव्यपटुतासँ संभव होएत। मैथिल आ मिथिलासँ जेना मोन टूटि गेल छनि लेखककेँ, तकर कारण सेहो छै। एकठाम लेखक कहैत छथि,"मिथिलामे बहुत तरहक गुण छैक,जाहिमे प्रधान अछि आलस्यक साम्राज्य। एतुक्का समस्याक निदान लेल विष्णुकेँ नहि,महादेवकेँ अवतार लिअ' पड़तनि।तांडव नृत्य

कर' पड़तनि।" पोथीमे कतेको ठाम मिथिलाक दुर्गुण सभकेँ निस्संकोच देखार करैत प्रसंग सभ आएल अछि। भिन्न भिन्न पात्रक चरित्र चित्रण करैत मैथिल लोक सभक निम्नस्तरीय मानसिकताकेँ देखार कएल गेल अछि। बेसी लोक अपन स्वार्थ सिद्धिमे लागल अछि,जे दुर्भाग्यपूर्ण।

कलकत्तामे "ममता गाबए गीत" फिल्मक वितरक ताकबाक क्रममे लेखकक सामना भेलनि मैथिली-सेवामे लागल तृप्ति नारायण उपाध्याय उर्फ तिरपित बाबूसँ। विचित्र कैरेक्टर मुदा एहन लोकसँ निश्चित भेंट भेल होएत, सभकेँ अपन जीवनमे। लेखकक शब्दमे देखल जाए,"अछिंजलसँ धोअल तिरपित बाबूक मुखमंडलसँ सज्जनताक आभा प्रस्फुटित भ' रहल छल। हुनक जीवनक एकमात्र उद्देश्य रहनि मिथिला- मैथिलीक कोनो तरहक सेवाक काज होइ, अपन सर्वस्व न्योछावर क' ओहि पुनीत काजमे योगदान करब। फिल्मक सभ टा समस्याकेँ जड़िसँ समाप्त क' देब, तकर वचन दैत छी।" तिरपित बाबू जाहि तरहेँ गणेश टॉकिजक व्यवस्था करबाक नामपर साठि रुपैया आ प्रोजेक्टर चलबै बला लेल दू बंडिल बीड़ी लेल पाइ ठकि अन्तर्धान भ' गेलाह,से हास्यास्पद, संगहि दुखद सेहो। एतबे नहि,मैथिली भाषामे बनल फिल्मक प्रलोभन द' ओ बहुतोसँ बहुत किछु ठकने हेताह,से अनुमान छलनि बाबू साहेब चौधरीक। बाबू साहेब चौधरी, जे वास्तवमे निर्लोभ, निर्भीक आ मिथिला-मैथिली लेल समर्पित लोक छलाह,मैथिली भाषा ओ मैथिलपरम्पराकेँ अक्षुण्ण रखबा लेल प्रतिबद्ध लोक।लेखक द्वारा देल बाबू साहेब चौधरीक परिचयक हिसाबसँ। बाबू साहेब चौधरीक सहयोगी स्वभाव आ मैथिली साहित्यकार लोकनिक असहयोगी प्रवृत्तिक चित्रण बड़ा बेजोड़ केलनि अछि लेखक। शब्द संयोजन देखबा योग्य। देखल जाए- "सरल हृदय बाबू साहेब चौधरी, हमरा दुनूक मदति लेल अधीर छलाह। ताहि क्रममे ओ मैथिली भाषाक अनेक नव-पुरान,छोट-पैघ, मोट-पातर कवि,कथाकार, नाटककार,आलोचक, समालोचकसँ भेंट करौलनि। मुदा

सभ टा साहित्यकार अपन अपन व्यथासँ व्यथित छलाह। हुनकर सभक निजक वेदन ततेक गहींर छलनि जे हम सभ "ममता गाबए गीत" फिल्मक समस्याकेँ कात टारि हुनके दुखमे सहानुभूतिक बर्खा करैत करैत सभसँ पिण्ड छौड़ौलहुँ।" शब्द संयोजनक चमत्कार बहुत ठाम देखबालेल भेटल। सभहक चर्चा करब संभव नहि मुदा जे एकदम स्मरण भ' गेल अछि,से एकाध टा कथ्यक चर्चा हम अवश्य करब। एकटा कथ्य अछि, " संवादक डब कएल जा सकैए मुदा सुन्दरताक डब करब संभव नहि छैक।" ई बात मदन भाइ कहलनि अछि,लेखककेँ।जखन "ममता गाबए गीत" फिल्मक कलाकारक चयन करबाक क्रममे मुख्य हिरोइनक रूपमे अजराक चयनपर विचार भ' रहल छलनि,दुनू मित्रक बीच। अजराकेँ साइन करब फिल्मक बजटपर भारी पड़त,तकर प्रतिक्रियामे उपरोक्त बात कहल गेल छल।

तहिना लाख टाकाक एकटा गप्प कहल गेल अछि लेखक द्वारा, "प्रत्येक व्यक्तिक हृदय कूपमे रचनात्मक उर्जा भरल रहैत छैक।एकर प्रगटीकरण अथवा स्पष्टीकरण समयानुकूल होइत छैक।"

एहि उपन्यासक सभ पात्र एहन-एहन छथि, जेहन चरित्रक व्यक्तिसँ प्रत्येक मनुष्यक सामना भेल हेतनि जीवनमे। कहबाक माने, लोक रिलेट क' पाबैत अछि, कथाक पात्र सभसँ।चाहे ओ लेखकक मित्र शिवकांत होइथ किंवा महंथ मदन मोहन दास सन धीर गम्भीर लोक।विदुर नीतिक अनुगमन कएनहार लेखकक मैट्रिक फेल छोटका कका, बाबू शारदाकान्त चौधरी उर्फ कौआली बाबू होइथ वा लोअर फेल फकिरनाक छोटका नेना कंटिरबा। शिवकान्तक मामा चतुरभुज लाल दास,गामक भगिनमान टने झा,बौआ अर्थात बाबू नारायण चौधरी, फुद्दी कका, मैथिली भाषा लेल पूर्णत: समर्पित दीपक जी, बैद्यनाथ बाबू,मिस्टर टमाटर जी,भानु बाबू,जनिकर अन्तरात्मामे

किछु विचार, स्वयं हीरो बनी, प्रायः पहिनेसँ संचित रहनि,जे अनुकूल समय देखि मुखरित भ' गेलनि।

कलकत्तामे फिल्मक वितरक ताकबाक क्रममे सेहो रंग- रंगक लोकसँ सामना भेलनि लेखक आ हुनकरपरम मित्र मदन भाइकेँ। तिरपित बाबू, बाबू साहेब चौधरी,रतन बाबू,कलकत्ता विश्वविद्यालयक विख्यात प्राध्यापक, हुनक पत्नी, सखा जी, बिड़ला जी माने छोटका बिड़ला जी, जे लेखक आ हुनकर मित्रकेँ "अबारा नहितन"क उपाधिसँ विभूषित केलथिन। संगहि फिल्मक कलाकार आ साउंड इंजीनियर, लाइटमैन सभकेँ मिला, कुल साठि-पैंसठि गोटाक टीम। माने असंख्य पात्रक समावेशसँ तैयार भेल ई उपन्यास विविध रंगक रस,स्वादसँ परिपूर्ण अछि।

एतेक रास पात्र रहितो,कतहु कोनो पात्रक परिचय वा गुणगाम/निन्दा करैत लेखक बहुत शब्द खर्च नहि केने छथि। माने अनेरे पन्नाक पन्ना नहि भरने छथि। सीमित शब्दमे अपन बात स्पष्ट करैत, एक टा रोचक पोथी पाठकक समक्ष प्रस्तुत करबालेल लेखक साधुवादक पात्र छथि। एकठाम लेखक कहलनि अछि,"कमलनाथक प्रशंसामे हम किछु पाँती आरो खर्च करब।" तहिना फिल्मक गीतकार रवीन्द्र नाथ ठाकुर जीक गुणगानमे सेहो सीमित शब्दक प्रयोग करैत गीतकारक असीमित गुणक वर्णन क' देलनि अछि। माने शब्द आ पाँती बहुत संयमित तरीकासँ खर्च कएल गेल अछि, जे पोथीकेँ उबाउ नहि होमए देने अछि। एहि बातक जतेक सराहना कएल जाए,कम अछि।

मैथिली प्रेम रोगसँ वशीभूत भ' मैथिली फिल्म निर्माणक डेग उठाएब बहुत सहासक काज छलनि लेखकक मुदा फिल्म निर्माण एवं फिल्म वितरणक पर्याप्त जानकारीक बिना अति उत्साहमे आबि फिल्म निर्माण प्रारम्भ करब एकटा व्यावहारिक त्रुटि भेलनि लेखकक। जकर नोकसान डेग डेगपर उठबए

पड़लनि फिल्मक निर्माताद्वयकेँ। आरम्भमे फिल्मक बजट चालीस हजारक बनल छलनि,आ फिल्म निर्माणक अन्तकाल धरि बजट चालीस हजारपर ठाढ़े छलनि। येन केन प्रकारेँ मैथिली भाषाक फिल्म बनिओ गेलनि, तकर बात वितरक ताकैमे नौ डिबिया तेल जराबए पड़लनि आ वितरक नहिए भेटलनि।

"अबारा नहितन" पोथीक कथानक,शिल्प वा भाषाक गप्प करी, तँ हम ताकैत रहि गेलहुँ, मुदा त्रुटि तेहेन किछु भेटल नहि हमरा। बस कतहु कतहु वर्तनीक समस्या जेना- कतहु करता,कतहु करताह। कतहु छल,कतहु छलै। कतहु छै,कतहु छैक। कतहु छला,कतहु छलाह, एहन किछु किछु मामूली सन त्रुटि देखाइ पड़ल, सएह टा।

एकटा अनुत्तरित प्रश्न जे लेखक एहि पोथीक अन्तमे रखने छथि पाठकक सोझाँ,से झकझोरए बला अछि, "फिल्म पूरा बनि गेलै तकर सूचना पाबि हमरा दुख नहि प्रसन्नता भेल छल। मुदा एकटा जिज्ञासा मोनमे रहिए गेल रहए। की हम आ मदन भाइ मैथिल समाजमे अपरिचितसँ परिचित भेलहुँ? जवाबक प्रतीक्षामे मदन भाइ संसार त्यागि बिदा भ' गेला। मुदा हम एखन तक प्रतीक्षामे जीविते घुमि- फिरि रहल छी।"

मुदा मैथिल समाज लेल धनि सन। २०१२ ई.मे एहि पोथीक प्रथम संस्करण प्रकाशित भेल अछि। एहि दस बर्खमे लेखकक प्रश्नपर केओ कान-बात धरएबला नहि भेलनि, से दुखद।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

निर्मला कर्ण- राँची,झारखण्ड

केदारनाथ चौधरी व्यक्तित्व एवं कृतित्व

केदारनाथ चौधरी जी मैथिली भाषाक प्रसिद्ध उपन्यासकार छथि । हिनका मैथिली उपन्यास जगत के श्लाका पुरुष कहल जाइत छनि l ई अपन कृति क आधार लोकभाषा के बनौलनि l यैह कारण अछि जे हिनक उपन्यास के पात्र आत्मा में बसि जाइत अछि । हिनक उपन्यास नव पीढ़ी के सेहो आकर्षित करैत अछि। केदारबाबू अपन रोचक उपन्यासक लेल प्रसिद्ध छथि l हिनक उपन्यास एक बेर पढ़नाई प्रारम्भ केला उपरांत बिना समाप्त केने छोड़नाई असंभव होइत अछि पाठक कैँ l

केदारनाथ चौधरी जीक जन्म 3 जनवरी 1936 ई .कैँ नेहरा,जिला दरभंगा में भेल। 1958 ई.मे अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर, आ 1959 ई.मे लॉ केलथि ।अपन पूरा जीवन केदार बाबू प्रबंधन के क्षेत्र में कार्य केलथि l 1969 ई.मे अपने पुनः कैलिफोर्निया वि.वि.सँऽ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर,1971 ई.मे सैन फ्रांसिस्को वि.वि.सँ एम.बी.ए .केलहुँ l एकर पश्चात् 1978 में भारत आगमन भेलनि । सन् 1981-86 के मध्य तेहरान आ फ्रैंकफर्ट में रहलथि । फेर मुम्बई,पुणे होइत 2000 सँ लहेरियासराय में निवास भेलनि ।

आ.केदारनाथ चौधरी लगभग सत्तर वर्षक उम्र में लेखन प्रारम्भ केलथि l हिनक साहित्य जगत में पदार्पण 2004 में प्रकाशित उपन्यास "चमेली रानी "सऽ भेलनि।

हिनक लिखल चमेलीरानी,आयना,माहुर,हीना,करार, आवारा नहितन पढ़वाक सौभाग्य भेटल l हिनक उपन्यासक विशेषता शुद्ध मैथिली भाषाक प्रयोग एवं रोचकता,सँगहि भाषा में प्रवाह अछि l हिनक उपन्यास पढ़वा काल बुझना जाइत अछि जेना मिथिलांचल में भ्रमण कऽ रहल छी l वैह वातावरण,वैह संस्कृति,वैह मिथिलांचलक बात व्यवहार,आँखिक समक्ष आबि जाइत अछि l हिनक उपन्यास पर हिनक विचारधाराक छाप स्पष्ट बुझाएत l सब चरित्रक बीच बुझाएत जेना केदार बाबू अपने होथि l मैथिली भाषाक प्रचार-प्रसार हेतु भागीरथ प्रयास केलथि केदार बाबू l मैथिली फिल्म "ममता गाबय गीत "के निर्माण ओकर एकटा स्तम्भ रहल l "ममता गाबय गीत "के निर्माण सन् 1966 में भेल जेकर मदनमोहन दास आ उदयभानु सिंहक संग सह निर्माता छलाह केदार बाबू l

हिनक उपन्यास "आवारा नहितन "एक तरह सऽ प्रस्तावना अछि फिल्म "ममता गाबय गीत "के l "ममता गाबय गीत "के निर्माण कोना भेल वैह पूरा कथा पुस्तक में अत्यंत रोचक ढँग सँऽ वर्णित भेल अछि l किनका सँऽ संवाद-विचार कऽ हिनक मैथिली के प्रति स्नेह-भाव बढ़लनि,किनका द्वारा हिनक भाषा प्रेम में उन्नति भेलनि तेकर विशद वर्णन "आवारा नहितन "में भेल अछि l

वर्ष 2016 के लेल मैथिली भाषा'क सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार 'प्रबोध साहित्य सम्मान "हिनका भेटलनि l शांति निकेतन के प्रोफेसर डॉ .उदय नारायण सिंह नचिकेता जीक अध्यक्षता में गठित दस सदस्यीय निर्णायक मन्डली हिनक नामक चयन केने रहथिन। मैथिली आंदोलन के अग्रणी नेता प्रबोध नारायण सिंह के नाम पर ई सम्मान 2004 सँ देल जाइत अछि l वर्ष 2016 में केदारनाथ चौधरी जी के हुनक रचना "आवारा नहितन "के लेल" केदार सम्मान "सँऽ पुरस्कृत कएल गेलनि l

"केदार सम्मान "प्रगतिशील हिंदी कविता के शीर्षस्थ कवि केदारनाथ

अग्रवाल जीक स्मृति में केदार शोध पीठ के द्वारा देल जाइत अछि l ई सम्मान प्रति वर्ष भेटय बला एक प्रमुख साहित्यिक सम्मान अछि l ई साहित्य सम्मान सृजनक उत्कृष्टता कैँ रेखांकित करवा हेतु केदारनाथ अग्रवाल जी क परम्परा में लोकतांत्रिक, प्रगतिशील, आधुनिक, विवेकसम्मत, वैज्ञानिक चिंतन के पक्षधर, सृजनकार के प्रदान कएल जाइत अछि l

केदारबाबू अपन उपन्यासक द्वारा सदिखन स्मृति में रहताह l हिनक उपन्यासक सृजन नव पीढ़ी के दृष्टिगत राखि कएल गेल अछि l केदारबाबू अपन उपन्यासक द्वारा मैथिली साहित्य के नव दिशा देलनि l यैह कारण अछि जे "प्रबोध सम्मान "सँऽ सम्मानित हिनक कृतिक पुन :प्रकाशन नेशनल बुक ट्रस्ट सँऽ भऽ रहल अछि l ई मैथिली साहित्य एवं सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलक हेतु गौरवक विषय अछि l

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आभा झा, दिल्ली

प्रेमक अद्वैतक अद्भुत आख्यान -हीना

आइ व्यावसायिकताक एहि युगमे जखन सभ मानवीय भावना लेन-देनक बटखरा पर जोखल जा रहल अछि,

रक्त-सम्बन्धोक पवित्रता धोखरिक' बेदरंग भए गेल अछि, वैवाहिक संबंध प्रेमक नहिँ, आर्थिक- सामाजिक- समृद्धिक नेओं(नींव) पर ठाढ़ कएल जा रहल अछि,निष्काम मैत्री आ निःस्वार्थ सम्बन्धक गप मात्र पोथीक शोभा बनिक' रहि गेल छैक, ओहेन समयमे श्री केदारनाथ चौधरीजीक **'हीना'** नामक उपन्यास पढ़ब हृदयकेँ एकटा सुखद अनुभूति आओर आत्मिक आनन्दसँ भरि दैत अछि।

वस्तुत: साहित्यकार समाजक सृष्टि आ स्रष्टा दूहू होइत अछि।ओकरा जेहन दुनियां रुचै छै,ओहने दुनियांक सृजन ओ साहित्यक माध्यमसँ करैत अछि आ एहि तरहेँ ओ समाजक सोझां एकटा उदाहरण सेहो रखैत अछि। संभवत: लेखकक हृदयकेँ समंधक नाम पर भ' रहल वणिग् वृत्ति औँटैत होनि,प्रेमक नाम पर मांसलताक प्रसार विरक्त करैत होनि अथवा जाति-धर्मक सिक्कड़िमे कुहरैत घाहिल प्रेमक पीड़ा विह्वल बनबैत होनि, फलस्वरूप ओ कल्पनाक यान पर चढ़ि सात्विक, निर्मल, परस्पर नितान्त समर्पित सिनेहक यात्रा करबा आ करयबा लेल प्रस्तुत भेल होथि।अस्तु!

'हीना'क(हिना) शाब्दिक अर्थ होइत छैक मेंहदी। मेंहदी आ प्रेमक तुलना अत्यन्त स्वाभाविक- पीसैत कालहुमे मेंहदीक सुगन्धि वातावरणमे पसरि जाइत छैक,मेंहदी जकाँ प्रेमोक रंग धीरे धीरे चढ़ैत प्रगाढ़ होइत छैक। ओएह मेंहदी जखन हाथ पर रचाओल जाइत छैक,हाथक शोभा अद्वितीय भए जाइत छैक ,तहिना प्रेमक अनुभूति आ आस्वाद जीवनकेँ सुन्दर बनबैत छैक,परमानन्दक भूमिमे ल' जाइत छैक।

केदारनाथ चौधरीजीक एहि उपन्यासक भावभूमि शाश्वत, निर्मल, निष्काम प्रेम थिक जे भौगोलिक- सांस्कृतिक - धार्मिक परिधिसँ मुक्त पल्लवित- पुष्पित होइत अछि आओर अपन सौंदर्य आ सुवाससँ समाजमे सकारात्मक परिवर्तन अनबामे सफल होइत अछि ।किन्तु प्रेमक बाट कतौ आसान भेलै अछि? **बिनु तपस्यें जखन पार्वतीओकेँ शिव नहिं भेटलखिन, तखन सामान्य जनक त' कथे की?**

प्रेमानुभूतिक प्रबल वेगसँ उद्दीपित शिव कुमार आ हिना वैवाहिक बंधनमे बन्हा त' जाइत छथि, मुदा ओ दुन्नू बिसरि गेल छलाह **सामाजिक अनुशासन, जाति- धर्मक सुदृढ़ प्राचीर, उचित- अनुचितक समाज- स्वीकृत मापदंड!** परिणामो स्वाभाविके! जाही क्षण धर्मक बाह्य आवरणकेँ चरम-परम कृत्य माननिहार शिबूक पिताकेँ सत्यक पता चललनि,पुश्त दर पुस्तक संचित संस्कार आ विश्वाससँ उपार्जित अहंकार पर वज्रपात भेलनि ।ओ तत्क्षण पुत्रकेँ शरीर- स्पर्शक अधिकारसँ वंचित कए प्राण त्यागि दैत छथि।आब संगीतक मधुर- मोहक- कोमल दुनियांमे रहनिहार सामाजिक- व्यवहार- ज्ञान-शून्य शिबूकेँ अचक्के लागल यथार्थक कठोर आघात सहि नहिं होइत छनि , ओ विधनाक निर्मम निष्करुण निर्णय देखि हतबुद्धि भए कतौ निरुद्देश्य बहरा जाइत छथि!

एम्हर गामक संस्कार- व्यवहारसँ अनभिज्ञ हिना अचानक भेल एहि कुकाण्डसँ हतबुद्धि अवश्य भेलीह किन्तु कर्तव्य ज्ञानशून्य नहिँ। ओ धैर्यपूर्वक शिबूक सभ कर्तव्य संपादित करब अपन धर्म बूझि हुनक पिताक श्राद्धादिकर्म अप्रत्यक्ष रूपेँ शिबूक मित्र ठक्कन आ कल्लूक सहायतासँ सम्पादित करबैत छथि।ओ यवन पिता आ ईरानी मायक संतति होइतो हिन्दू धर्मक विवाहक एहि मंत्रक साकार रूप में अनैत छथि -

" **मे हृदयं ते हृदये निदधानि'** अर्थात् ह'म अपन हृदय अहाँक हृदयमे रखैत छी-जखन **मम-परक भेदे तिरोहित ,तखन केहन पार्थक्य?**

कैलिफोर्नियाक सुविधापूर्ण जिनगीक मोह छाड़ि ओ तपस्विनीक जिनगी जिबैत प्रतीक्षा करए लगलीह अपन प्रियतमक, हुनकहि गाम आ हुनकहि घ'रमे! कहियो त' भक्क टुटतनि शिबूक,कहियो त' मोन पड़थिन पत्नी! **एत' प्रेमक पराकाष्ठा अछि,मिलनक अधीरता अछि,धरतीक धैर्य अछि आ अछि प्रतीक्षाक अनन्त घड़ी**! पचास बरख धरि शिबू बताह बनल रहलाह,पत्नीसँ दूर पड़ाइत रहलाह परञ्च हिनासँ हीरा मौसी बनलि तपस्विनी हुनकहि गाममे शिक्षाक प्रसारमे,कर्मोन्मुखताक निदर्शनमे,गामक तरक्कीक ब्योंतमे स्वेच्छासँ अनाम जिनगी जिबैत रहलीह।ओ अपन व्यक्तित्व ग्रामीण संस्कृति आ परिवेशमे मात्र मिज्झरेटा नहिँ कएलनि, अपितु विलीन क' लेलनि अपन स्वतंत्र सत्ता! हुनक प्रेम कायिक नहिँ अपितु आत्मिक छलनि आ तैं विकल- विषण्ण होइतो शान्त छलीह,कानि-खीझि नहिँ, परोपकारमे अपन जिनगी बिता रहल छलीह। करुणरस सम्राट् भवभूति संभवतः प्रेमक एहि अद्वैतक अनुभव करैत लिखलन्हि अछि-

अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु यत्

विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः।

कालेनावरणात्ययात् परिणते यत् प्रेमसारे स्थितं

धन्यं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत् प्राप्यते ।।

एम्हर सामाजिक व्यवस्थाक भंजनक प्रभावेँ पिताक देहांतक आघातसँ मतिविशेष भेल शिबू अपराध- बोध आ ग्लानिक भार ढोऐत वैवाहिक संबंध स्वीकार करबाक साहस नहिँ कए सकलाह, मुदा हृदयमे प्रेमक विशुद्ध भाव गहीरसँ गहीरतर होइत रहलनि,जमा होइत होइत घनीभूत भ' गेलनि आ फूटि पड़लनि करुणाक उद्रेकक रूपमे।पहिनहुँ हुनक स्वरमे माधुर्य आओर करुणाक संगम छलनि मुदा आब त' हृदयसँ बहरायल निछच्छ पीड़ाक उद्गार पाथरकेँ पानि बना रहल छल।**ओ बौआइत रहैत छलाह, मुदा घुरि-फिरि अबैत छलाह ओही गाममे,जत' हुनक जड़ि छलनि,जत' मित्र छलनि आ जत' प्राणवल्लभा पत्नी निष्कम्प दीपशिखा जकाँ एसकरि जरि रहल छलीह।**

कहल जाइत छैक वेदना संगीतक उत्स होइत छैक।क्रौञ्च युगलमेसँ एकटाक वध आ दोसरक करुण चीत्कार

आदिकवि वाल्मीकिक कवित्वक प्रस्फुटनक कारण बनल,शोके श्लोक बनि गेल छलै।तहिना करुणासँ पोर पोर तीतल शिबूक संगीतक टाहि हिना आ ठक्कन- कल्लूक संग समस्त गामक लोककेँ द्रवित करैत छलै।

प्रेमक पराकाष्ठा आ अनन्त प्रतीक्षाक प्रतीक एहि अनाम अपूर्ण प्रेमक साक्षी छलथि मात्र दू गोट व्यक्ति- ठक्कन- यानी मालिक बाबा आ कल्लू!

प्रेम प्राप्तिक स्थितिमे संकुचित भ' जाइत अछि मुदा विप्रलम्भमे ओएह प्रेमक व्याप्ति सीमाहीन भए जाइत छैक,ओ सभहक भए जाइत छैक,सभहक कल्याणक कारण बनैत छैक।

उपन्यासक मूल विषय- वस्तु हिना ओ शिव कुमारक प्रेम, अनुपम त्याग, सर्वस्व समर्पणक पवित्र आख्यान एवं अर्धनारीश्वरक संकल्पनाक निदर्शन अछि, मुदा प्रेम प्राप्तिक पर्याय नहिँ बनि सकल ,ओ रहल मौन, पवित्र ,निर्मल- एकदम गंगाजल सन!

अवश्य उपन्यासक आवश्यकतानुसार घटनाक्रममे आओर आनो आन पात्र सभ छथि,साधूपुरा सन छोट गामक सिमानमे होइत राजनीतिक कदाचारो अछि, छोट- छीन स्वार्थक लेल दोसरक जीवन सुड्डाह करबाक क्षुद्र प्रवृत्तिओ अछि, प्रेम आओर वासनाक घालमेल सेहो अछि (पार्वती- गगन ,कोबी आदि चरित्र में), मुदा मित्रताक निर्मल भावना आ दू प्रेमीकेँ मिलयबा लेल समस्त युवावर्गक एकता ओहि सभ कुत्सित भाव पर भारी पड़ैत अछि । शिबू-हिनाक बाद जखन मंगली आ गंगाक प्रेम जाति- पातिक सिमानकेँ तोड़ैत उत्फाल होइत अछि त' सामाजिक कायदा- कानूनक कारण आजीवन एकाकीपनक दंश सहबा लेल विवश हीरा मौसीक संग सामाजिक वर्जना आ दबावक कारण विक्षिप्तताक कगार पर पहुंचल शिवकुमारो डेरा जाइत छथि आ दूनू प्रेमीकेँ मिलयबा लेल पचास बरखक बाद एकसंग गाम तेजि दैत छथि। एहि तरहेँ लेखक उपन्यासकेँ सुखान्त बनबैत छथि।

संक्षेपमे एतबहि जे उपन्यासक शीर्षकक अनुरूप हिनामे सहज प्रेमक रंग, निश्छल त्यागक सुवास, सौंदर्यक विलक्षणता आ सकारात्मकताक तिलिया-फुलिया अछि आ एतेक गुणक कारण सहृदय पाठक लेल सुग्राह्य अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

शिवशंकर श्रीनिवास- संपर्क-9470883301

चमेली रानी

'चमेली रानी' केदार नाथ चौधरीक चर्चित उपन्यास थिक। एकर प्रकाशन 2004 ई. मे भेल।

एहि उपन्यासमे उपन्यासकार कहैत छथि जे एहि देशक राज-सत्ता एहिठामक जनताकेँ लूटि रहल अछि, दोसर दिस जे एहि ठाम विभिन्न डकैतक गुट अछि ओहो जनताकेँ लूटि रहएलैए। एहि स्वतंत्र देशक जनता राजनीति केनिहार व्यक्ति द्वारा कोना ठकल जाइए आ लुटाइए आ दोसर दिस विभिन्न डकैत द्वारा कोना लूटल जाइए। ओहिमे राजनीति केनिहारमे कतेक भिन्नता ओ समानता अछि, अहिकेँ बहुत कौशलसँ देखबैत सम्मुख 'बिहार' राज्यकेँ रखैत कथा कहैत छथि जे बहुत बेबाक ढंगसँ कहल गेल अछि। जाहि कहबमे कोनो पर्दा नहि राखल गेल अछि जे ईहो प्रश्न उठबैत अछि जे की एना कहल जेबाक चाही? उक्त प्रश्न-स्थलकेँ हम आगू उठा ओहिपर विवेचन करब। संप्रति एकर कथापर ध्यान दी।

कथा कीर्तमुखक परिवार वर्णनसँ प्रारंभ होइत अछि। कीर्तमुखक पत्नी छलि शनीचरी। अंग्रेज हाकिम डन्सफोर्डक रखैलक बेटी छलै सुनयना, ओकर बेटी छलै शनीचरी। ओहि शनीचरीकेँ चिनगारीजी माने सोस्लिस्ट पार्टीक सदस्य जे बादमे नेता आ मंत्री भेलाह अपन प्रिय मोदियाइनक ओहिठाम ओकरा आनि रखलनि ओ मोदियाइन शनीचरीकेँ चिनगारीजीक लेल जुगता कऽ रखबाक लेल गंगा कातसँ आनि कीर्तमुखकेँ बियाहि देलकै जकरामे

पुरुषत्वक अभाव रहै। जखन चिनगारी मंत्री बनि मोदियाइन लग एलाह तँ ओ मोदियाइन स्पष्ट कहलकनि-"गंगा कातसँ एकटा मनुक्खकेँ आनि जकर नाम छै कीर्तमुख, शनीचरीक बियाह करा देलियै। आखिर समाजसँ, लोक-लाजसँ अहाँक रक्षा करब आवश्यक छल। कीर्तमुखकेँ सहवास करबाक लूड़ि नहि छैक। सनीचरीसँ बच्चा अहाँ जन्माउ आओर बाप रहत कीर्तमुख।" चिनगारीजी बेसी दिन नहि टीकि सकलाह। रोगी भऽ मरि गेलाह आ शनीचरी आजाद भऽ गेलि। मोदियाइनक आमदनी बढ़ि गेलै। एहि क्रममे ओकरा पाँच टा बेटा भेलै-युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, सहदेव आ नकुल। नकुलक जन्मकाल शनीचरी मरि गेलि। हम्मर मोदियाइनक एक मात्र बेटी 'चमेली' हाइवेपर फैलसँ घर बनेलक। ओकर धर्मपिता नामी डकैत भुखन सिंहक अभिभावकत्व ओकरा भेटल छलै। ओ पढ़लि-लिखलि छलि। फटाफट अंग्रेजी बजै वाली, तेजतर्रार आ मुँहफट। ओकरे इशारापर भूखन सिंहक गैंग नचैत छल। अही चमेली रानीक नेतृत्वमे उक्त उपन्यासक कथा आगू बढ़ैत अछि।

इमहर गुलाब मिसिर राज्यक मुख्यमंत्री छथि। एकटा अनाथालयमे पलल बच्चा कोना सहारा पाबि ऊँच कुल-मूल संग भ्रष्ट रस्तासँ शिक्षाक डिग्री पाबि एकाएक राजनीतिक दलक नेता भऽ मुख्यमंत्री कुर्सी पाबि शासन करैत अछि ओकर आश्चर्यजनक कथामे आएल अछि।

उपन्यास चमेली रानी गिरह द्वारा संपूर्ण राज्यमे जाल बिछा पूँजीपतिकेँ लूटल जाइत अछि ओकर वर्णन बहुत रोचक ढंगसँ कएल गेल अछि, एहि गिरोहमे स्त्री-पुरुष दूनू अछि। दूनू भेष बदलि जाहि रूपे मालदार यात्री ओ मालदार भ्रष्ट नेताकेँ लुटैत अछि ओ अद्भुत नाटकीय ढंगसँ कथाकेँ पुष्ट करैत, रोचकता भरैत आगू बढ़ैत अछि।

डकैतक गिरह अपन डकैती क्रममे कतेको हिंसा ओ क्रूरतम काजकेँ अंजाम

दैत आगू बढ़ैत अछि किंतु आश्चर्य तखन लगैत अछि जे गिरहक नायिका एहन व्यक्तिक चुनाव अपन पतिक रूपमे करैत अछि जकरा लग संवेदना छैक। अर्जुन पहिले दिन चमेली रानीक आह्वानपर ओहि गिरोहमे सम्मलित भऽ ट्रेनमे डकैती करैत अछि, ओहि लूटक क्रममे एकटा सोहागिन स्त्रीक विनती कएलापर जे मंगलसूत्र ओकर सोहागक निशानी छियैक, एकरा नहि छिनय। अर्जुन ओहि स्त्रीक संवेदनासँ संवेदित भऽ ओकर मंगलसूत्र नहि छीनैत छैक। ई बात चमेली रानी बुझैत अछि। ओ दूर रहैत सभक कार्य पता रखैत अछि। ओना ओ अर्जुनकेँ कहैत अछि जे एहि तरहक कमजोर व्यक्ति हिंसा नहि कऽ सकैत अछि आ तें ओकरा आगू कोनो तरहे केकरो हत्या करबाक भार नहि देल जाएत, कारण डकैतकेँ कोनो तरहक संवेदना नहि राखक चाही। किंतु विवाह करैत अछि ओही अर्जुनसँ।

संपूर्ण उपन्यासमे देखाओल गेलैए जे डकैत गिरोहक बीच एक-दोसरक प्रति वएह स्नेह-प्रेम छैक जे कोनो परिवारमे एक-दोसराक बीच रहैत छैक। अपन नायक प्रति, मित्रक प्रति ओ अपन कार्य प्रति अद्भुत-अद्भुत निष्ठा ओ प्रेम छैक। ओहि गिरहक बीच कोनो तरहक विश्वासघातक जगह नहि छैक। पन्ना, दोसर गिरहक सरदार, कोनो हालतिमे भूखन सिमहक अधलाह नहि करत। किएक तँ ओ ओकर मित्र थिक। भले ओकर गिरहो फूटै छै। किंतु राजनीतिमे ककरो प्रति कोनो संवेदना नहि छैक। ओहिठाम मात्र कुर्सी महत्वपूर्ण छैक आ महत्वपूर्ण छैक ओकर कोनो लाभ अंश।

उपन्यासमे आएल अछि- "राजनीतिक सवसँ विशिष्ट गून थिक धूर्तता"। आ धूर्तता गुलाब मिसिरमे भरल अछि। जे भूखन सिंह ओकर गिरह द्वारा कतेको बेर गुलाब मिसिरक सहायक भेल छल आ जखन अहमदुल्ला खांक संपूर्ण खजाना लूटल जाइए। अहमदुल्ला जे देश विरोधी छल, जनताकेँ शोषण करैत छल। ओकर खजानाकेँ जखन चमेली रानीक गिरोह लूटि लैत अछि

आ नांगटनाथकेँ ट्रेनमे लुटि हत्या कऽ दैत अछि तखन गुलाब मिसिरक क्रोध असमान छूबए लगैत अछि, आ ओ कोनो हालतिमे भूखन सिंहकेँ मारि देबए चाहैत छथि आ एहि लेल दोसर गिरोहक सरदार पन्नासँ भेट करैत अछि आ ओकरा आदेश करैत छथि जे भूखन सिंहकेँ मारि देथि। किंतु पन्ना नहि मानैत अछि, ओक कहैत अछि- "गलत, भूखन सिंह मेरा बड़ा भाइ जैसा है। भूकन भाइ का राजनीति से कोई लेना-देना नहीं है। तुम्हारा इन्टेलिजेन्स गोबर टीम है। तुम्हारे कहने से मैं अपने देवता समान भाइ की हत्या नहीं कर सकता"। राजसत्तापर बैसल लोककेँ सतत कोनो गतिविधिसँ ओकरा पहिने राजसत्तेपर खतरा बुझाइत छैक। चमेली रानी द्वारा हुनक सहयोगीपर हमलाकेँ ओ अपन कुर्सीपर अबैत खतरा बुझै छथि आ हुनका अर्थात गुलाब मिसिरकेँ पन्नाकेँ किछु कहबाक साहस नहि होइत छनि किंतु पन्नाक बाडीगार्ड ध्रुवा केर बेटीक अपहरण करबा ध्रुवासँ कहैत छथि जे जँ ओ छलसँ जहर दऽ भूखन सिंहकेँ नहि मारत तँ ओकर बेटीकेँ मारि देल जेतै। आ पन्नासँ जखन भूखन सिंह भेट करए अबैत अछि तँ ध्रुवा ओकर शराबमे जहर मिला दैत छैक। भूखन सिंह तुरंत बूझि जाइए आ ब्रजनाथकेँ कहि कहि ओतएसँ विदा होइए। ओकर बाडीगार्ड ब्रजनाथ ओकरा बाद पहुँचि उतारैत अछि आ भूखन सिंह अपन इच्छाइ टेप कऽ ब्रजनाथकेँ दैत कहैत छैक जे ई टेप ओ टेप चमेली रानीकेँ सुना दैक। पन्ना आश्चर्यचकित भऽ ध्रुवासँ सभटा बात बुझि ओकर हत्या कऽ दैत अछि।

चमेली रानी अपन धर्मपिताक हत्यासँ बहुत हताश होइत अछि किंतु पन्नाक अभिभावकत्वमे आगा बढ़ैत अछि आ ततबा समधानि कऽ आगू बढ़ैत अछि जे धूर्तताकेँ धूर्ततासँ कटैत संपूर्ण प्रदेशमे पन्नाक निर्देशनमे जाल बिछा गुलाब मिसिरक सत्तापर चुनावक माध्यमे पहुँचि जाइत अछि। उपन्यासक कथामे गुलाब मिसिरक अपहरण होइत अछि, ओ अज्ञातमे चल जाइत छथि ,ओहि अज्ञातक पर्दासँ बहराइ नहि छथि तकर कारण स्पष्ट नहि होइत

अछि। हमरा जनैत खुजल मैदानमे गुलाब मिसिरकेँ पदच्युत करबासँ पाठक लग पारदर्शी संवाद पहुँचैत से नहि भऽ पबैत अछि। ओ चमेली रानी जनताक शोषण विरुद्ध अपन गतिकेँ रखैत राजनीतिसँ राजनीतिक धूर्तता कए कऽ विजय प्राप्त करैत अछि जे स्पष्ट कहैत अछि जे राजनीतिमे केकरो धूर्तता बिना परास्त नहि कएल जा सकैए। उपन्यासक उक्त दृष्टि हमरा जनैत लोकपक्षीय नहि भऽ पबैए कारण कोनो चक्रचालि वा षड्यंत्र लोकहितमे नहि भऽ सकैए चाहे उपरसँ ओ जे लागए तँइ उक्त उपन्यास यथास्थितिक परिचय तँ दैत अछि किंतु पाठककेँ निर्विकार-पथक प्रेरणा देबामे पाछू रहि जाइत अछि।

मैथिली भाषामे कोनो दैनिक पत्र-पत्रिका बेसी दिन टिकल भले किछु-किछु दिनपर पुनः-पुनः नव दैनिक पत्र बहराइत रहलैए। उक्त पत्र सभ निश्चित रूपसँ भाषा प्रेमक प्रतीक थिक, किंतु ओकर बंद होएब स्पष्ट कहैत अछि जे मिथिला भूमिपर एखन तक भाषाक लेल लोक जागरण नहि भेलैए।

एहि उपन्यासमे मैथिलीक दैनिक 'स्वयं प्रकाशक'क लोकप्रियताक चर्चा कएल गेल अछि जे संपूर्ण रूप एहि उपन्यासक कल्पना संसारक प्रकाशन अछि। 'स्वयं प्रकाशक'क लोकप्रियताक कारण अछि जे ओहिमे नव-नव, एहन-एहन समाचार छपैत अछि जे लोकमे ओकरा पढ़बाक उत्सुकता बढ़ि जाइत छै। ओकर लोकप्रियताक उदाहरण इएह छैक जे हिंदी दैनिक पत्र सभ ओहि पत्रसँ ईर्ष्या करऽ लगैत छैक। अर्थात मैथिली दैनिक 'स्वयं प्रकाशक'क लोकप्रियताकेँ देखबैत उपन्यासकार कहैत छथि जे मैथिली दैनिक एहि मिथिला भूमिपर लोकप्रिय भऽ सकैए जँ ओकरा राजनीतिक दृष्टिसँ चलाओल जाए। उपन्यासमे आएल विभिन्न प्रसंग वर्तमान समाजक मनोदशा के जेना कहैत अछि जे वर्तमान समयमे समाजकेँ लाभ स्थिति देखा ओकरा जिम्हर चाही तिम्हर कऽ सकैत छी, मात्र जनता बूझए जे ओकर

तारणहार के अछि। एक बेर यदि जनता तारणहार बुझि गेल तँ अहाँकेँ छोड़त नहि। जेना पहिने गुलाब मिसिरकेँ बुझै छल बादमे चमेली रानीकेँ बूझए लागल।

उक्त सभ बात अपन कथा प्रसंगसँ कहैत उपन्यास आजुक भ्रष्ट शासन तंत्र ओ जनताक कोमल मानसिकतापर ओकर प्रभावकेँ स्पष्ट रूपे स्पष्ट करैत आजुक समयक भयावहतासँ परिचय करबैत छथि जे महत्वपूर्ण अछि।

गुलाब मिसिर अनाथालयसँ सुपथपर आगू अबैत तँ निश्चित रूपसँ पाठककेँ नव सनेस भेटितैक मुदा से नहि भऽ पबैत अछि तकर कारणो स्पष्ट अछि जे एहि उपन्यासक मुख्य उद्येश्य आजुक समयक भ्रष्ट स्थितिकेँ अनबाक अछि जाहिमे उपन्यासकेँ बहुत हद तक सफल कहबाक चाही।

असमदुल्ला खांक अजीब दृश्य जाहि अश्लीलता परिदृश्यमे देखाओल गेलैए ओ हमरा जनैत उपयुक्त नहि अछि। ओना हम मानै छी जे कोनो दृश्य ओ शब्द यदि उपन्यासक कथाक लेल आवश्यक अछि तँ ओ अश्लील किएक ने रहए ओकर प्रयोग हेय नहि थिक से उपन्यास अहमदुल्ला ओ रजियाक बीचक अश्लील दृश्य निष्प्रयोजक लगैत अछि। उपन्यासकार मैथिलीमे उपन्यास कहैत एहि आएल विभिन्न पात्रक भाषाक प्रयोग कएल गेल अछि। हमरा जनैत उपन्यासकार सभ बात हमरा अपन भाषामे कहि रहला अछि तँइ पानक संवाद कहलासँ की लाभ? हमरा जनैत उक्त विषय हमरा अनावश्यक लगैए।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

दीपक मंजुल, हिन्दी सम्पादक, एन.बी.टी., इण्डिया, नई दिल्ली

मैथिली साहित्यक "कबीर"- हमरा सभक केदार बाबू

जिनगीक चारिम आश्रममे आबि कऽ ओ लिखनाइ शुरु केलन्हि आ पैंसठि पार "लेखक"क परिचितिसँ ६-६ टा उपन्यासक ओ लेखक बनि गेला। ई विश्वास योग्य तँ नै लगैत अछि मुदा अछि ई पूरा-पूरी सत्य। अपन पहिले उपन्यास "चमेली रानी" सँ मैथिली साहित्यमे ओ खाली अपन स्थाने नै बनेलन्हि वरन् एकटा "स्थापित" साहित्यकारक रूपमे सेहो चिन्हल जाय लगला। फेर तँ "करार", "माहुर", "हीना", "अबारा नहितन" आ "अयना" धरिक यात्रामे हुनका मैथिली साहित्यक दूटा पैघ सम्मान "प्रबोध साहित्य सम्मान" आ "झारखण्ड मैथिली मंच"सम्मानसँ सेहो सम्मानित कयल गेलन्हि।एहेन प्रतिभा सम्पन्न छियासी पार वयोवृद्ध साहित्यकारकेँ मैथिली साहित्य समाज केदार नाथ चौधरीक रूपमे जनैत आ सम्मान दैत अछि। केदार बाबू मैथिली फिल्मक "जनक"क रूपमे सेहो ओतबे सम्मानित छथि। प्रथम मैथिली फिल्म "ममता गाबय गीत" क ओ निर्माता सेहो रहल छथि।

सन् साइठक युगमे मैथिली फिल्म निर्माण लेल जे ओ प्रयास केलन्हि से मैथिली फिल्म उद्योग लेल एकटा महत्व्वपूर्ण घटना मानल जाइत अछि। कबीर सन घर सुड्डाह कऽ तमाशा देखबाक ऊहि केदार बाबूकेँ मैथिली फिल्म निर्माण दिस लऽ गेलन्हि मुदा अपन सर्वस्व अर्पण केलाक बादो फिल्मक ३/४ भाग मात्र पूर्ण कऽ सकला आ छातीपर पाथर राखि अइ सँ फराक भऽ

गेला। हालेमे दिवंगत रवीन्द्रनाथ ठाकुर फिल्मकेँ पूर्ण करबाक भार उठेलन्हि आ फेर ओ फिल्म पूर्ण भेल आ प्रदर्शितो भेल। केदार बाबूक उपन्यास "अबारा नहितन" हुनकर फिल्म निर्माणक अही संघर्षपर आधारित अछि जकरा पढ़ि कोनो पाठक ऐ फिल्मक निर्माणक "क" सँ "ज्ञ" धरिक जनतब लऽ सकैत अछि। ओना तँ केदार नाथ चौधरी फिल्मक निर्माणमे असफल भेला मुदा मैथिली समाज हुनका पहिल मैथिली फिल्मक "जनक" क पदवीसँ सम्मानित कऽ उचिते केलक।

एहेन बहुप्रतिष्ठित आ आजुक मैथिली साहित्यक बहुपठित लेखक श्री केदार नाथ चौधरी जी सँ हमर परिचय २० बर्खसँ बेशी पुरान अछि। एक्के नग्र लहेरियासरायक रहनिहार केदार बाबूक मुख्य बजार स्थित हमर घरक सोझाँक "ड्राइक्लिनिंग"क दोकानमे मोटा-मोटी सभ दिन उठनाइ-बैसनाइ होइ छलन्हि। हमर घर "घरदुकनिया" छल, आगाँ दोकान आ पाछाँ घरवास। ई दोकान पोथी आ सम्बन्धित समानक छल, जतऽ हम तीनू भाइ बैसै छलौं। हमर बाबूजी सेहो सेवानिवृत्तिक बाद ओतऽ बैसऽ लगला। सभसँ पैघ भाइ मुख्य दोकानदार छला आ हम आ माँझिल छलौं सहायक। केदार बाबू ड्राइक्लिनिंगक दोकानपर समय बितबैक गर्जसँ अबै छला। से कहियो काल हुनकासँ गप-शप भऽ जाइ छलय मुदा तइमे अखन धरि आत्मीयताक प्रवेश नै भेल छल।१९९० केर दशक मे पैघ भाइ अरविन्द गुप्ता दिल्ली आबि गेला परीक्षाक तैयारी लेल, आ पाछाँ-पाछाँ हमहूँ आबि गेलौं। सन् २०००मे हम सरकारी नोकरीमे आबि गेलौं सम्पादक बनि। पुस्तक प्रकाशन आ प्रोन्नयन संस्था, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत सरकारमे हिन्दी सम्पादकक रूपमे हम एलौं। आ एम्हर भैया प्रतियोगी परीक्षामे सफल नै भेलापरान्त "साक्षी भारत" क सम्पादकक रूपमे कार्यारम्भ केलन्हि। संगे ओ हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीमे पुस्तक-प्रकाशन कार्य सेहो आरम्भ केलन्हि।

संयोगे कहू जे २००३ मे केदार बाबू दिल्ली एला, अपन जमायक डेरापर, आ हमरा ओतऽ आमंत्रित केलन्हि आ तखन अपन एकटा पाण्डुलिपि देलन्हि आ कहलन्हि जे एकरा पढ़ू आ जँ नीक लागय तँ भैया कँ कहियन्हु एकरा छापय लेल। कहबाक खगता नै जे किछुए पन्ना पढ़लाक बादे हमरा ऐ पोथीमे "सम्भावना" बुझायल आ भैया सेहो एकरा अविलम्ब छापलनि। सन् २००४ मे "चमेली रानी" नामसँ हुनकर पहिल मैथिली उपन्यास छपि गेल छलन्हि आ तुरत्ते मैथिली समाज ऐ पुस्तककेँ स्वीकारऽ लागल। फेर ओ पाँछा घुरि कऽ नै तकलनि आ "करार", "माहुर", "हीना", "अबारा नहितन" आ "अएना" शीर्षकसँ पाँच टा आर उपन्यास धाँइ-धाँइ प्रकाशित भऽ गेलनि। हुनकर ई सभटा उपन्यास परम्परागत काना-खीजी बला सामाजिक उपन्यास नै वरन् परम्पराभंजक उपन्यासक रूपमे पढ़ल आ बूझल गेल। केदार बाबू मैथिली उपन्यासकेँ ओकर पारम्परिक रूपसँ बहार निकालि एकटा नब लीख खेचलन्हि आ मैथिली साहित्य समाजकेँ सिखेलन्हि जे सासु-पुतोहु, ननदि-भौजी आ निन्दा-चुगली सँ फराको एकटा दुनियाँ छै आ साहित्यकारक ई दायित्व छै जे ओ अपन लेखनीसँ नब बौस्तु आनथि जइसँ पाठकक रुचि बनल रहय। तँ स्पष्ट भेल जे केदार बाबू मैथिलीक परम्पराभंजक "कबीर" बनला।

केदार बाबूक ई सभटा उपन्यास दिल्ली स्थित हमर पैघ भाइ श्री अरविन्द गुप्ताक प्रकाशनगृह "इण्डिका इंफोमीडिया"सँ छपल आ ई सभटा उपन्यास विक्रयक नव प्रतिमान बनेलक। मैथिलीमे पाठक नै हेबाक बा कम हेबाक जतेक अनघोल छल सत्य तँ यएह अछि जे ई एकटा भ्रम छल कारण मैथिली समाज भयंकर रूपसँ पढ़ुआ समाज अछि मुदा पुरस्कार लोलुप स्वनामधन्य साहित्यकार "पढ़ऽ योग्य" सामिग्री उपलब्धे नै करा सकल छला आ उनटे प्रबुद्ध पाठके पर आरोप लगबै छला। केदार बाबूक उपन्यास जे बिक्रीक प्रतिमान बनेलक से सिद्ध केलक जे पाठक किछु नवक आस जोहि रहल छल

आ स्वनामधन्य-साहित्यसँ ओकर मोहभंग भऽ गेल छल। केदार बाबूक बहुपठित उपन्यास "अबारा नहितन" केर प्रकाशन इंडिका इंफोमीडियाक बाद भारत सरकारक राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एन.बी.टी., इण्डिया) सँ सेहो भेल। कहबाक आवश्यकता नै जे ई मैथिली पाठकक स्नेहे छलै जे राष्ट्रीय पुस्तक न्यास कैँ ऐ पोथीक प्रकाशन लेल विवश केलकै। ऐ पाँतिक लेखकक ई सौभाग्य छै जे ओ हिन्दी सम्पादकक अतिरिक्त मैथिली भाषाक अतिरिक्त प्रभारीक रूपमे सेहो राष्ट्रीय पुस्तक न्यासमे काज कऽ रहल अछि आ ऐ पुस्तकक प्रकाशनमे किंचित् योगदान दऽ सकल।

केदार बाबूक जीवनक प्रवासी पक्षक जँ चर्च नै कयल जाय तँ किंशाइत ई आलेख अपूर्णे रहत।" ममता गाबय गीत"क निर्माणमे भेटल असफलताक बादे दुखी, निराश आ हताश केदार बाबू अपन "करिअर"क विषयमे सोचैत विदेश-गमन लेल विवश भेला। सन् १९६६ मे केदार बाबू अमेरिका लेल प्रस्थान कऽ गेला। ओतऽ पढ़ाइ संग कमाइ केर सिद्धांतक आधारपर पढ़ाइ संग जीवनयापन आ पढ़ाइक खर्चा लेल काज केलनि। अर्थशास्त्रक ओ छात्र छला आ ओतऽ ओ ओही विषयमे आगाँक पढ़ाइ आ शोधकार्य आदि केलनि।अमेरिकाक सैन फ्रांसिस्कोमे रहैत ओ एम.बी.ए.क पढ़ाइक संग जीवनयापन लेल कइएक तरहक काज करै छला। बैंक ऑफ अमेरिका मे काज करैत अमेरिका प्रवासक एगारहम बर्ख जखन ओ यूरोपक लक्जमबर्ग एला तँ छ सप्ताहक छुट्टी भेटलनि जकर उपयोग ओ यूरोप क विभिन्न देश जेना यू.के., फ्रांस, जर्मनी, रूस आदि आ ईरानक भ्रमणमे केलन्हि। आ फेर जखन ओ भारत आपस एला तँ घर-परिवारक लोक हुनका तेना ने गछारलखिन जे फेर ओ घुरि कऽ आपस नै गेला। फेर तँ ई घरे-परिवारक भऽ गेला आ भारतेमे रहि गेला, रमि गेला।

आइ छियासी पारक वयसमे हुनकर साहित्यपर तीन टा छात्र पी.एच.डी. कऽ रहल छथि, जे हुनका लेल गर्वक गप अछिये, ई मैथिली भाषा समाज लेल सेहो धरोहर सिद्ध हएत।

मैथिली साहित्य समाजमे "केदार नाथ चौधरी" क रूपमे समादृत लेखककेँ ऐ पाँतिक लेखक केदारे बाबूक रूपमे मोन पाड़ैत अछि आ ओ जे सनेस अपन अभिनव उपन्यासक रूपमे दऽ कऽ अपन अतुलनीय योगदान देलन्हि तइमे अपन पैघ भाइ अरविन्द गुप्ताक संग हमहूँ अपनाकेँ कने-मने सहयोगी बुझै छी। आ सेहो सत्ये जे अइ अधिकार-भावक पाछाँ केदार बाबूक हमरा सभक ऊपर स्नेह-भाव सेहो कतौ-ने-कतौ दोखी अछि।जखन कखनो हम-दुनू भाँय लहेरियासराय जाइ छी तँ १० मिनटक दूरमे अवस्थित बंगाली टोला स्थित हुनकर डेरा "हिडेन कॉटेज" पर दसो मिनट लेल जाइते छी आ हुनकर "कुटी"क पहिल तल पर हुनकर आवासपर हुनका आ हुनकर पत्नीक (जिनका हम माताजी कहैत छियनि) स्नेहसँ अभिसिंचित भइये कऽ घुरैत छी। दू कप चाह आ दूटा बिस्कुट कोनो औपचारिकता नै वरन् अतिशय स्नेह आ सम्मानेक अनुभव करबैत रहल अछि। हुनकर स्नेह-वर्षासँ हम दुनू भाइ सदैव भीजले अनुभव करै छी। हमरे नै वरन् समस्त मैथिल समाजक "केदार बाबू" शतायु होथि सएह ईश्वरसँ कामना करै छी। मैथिली साहित्य समाज हुनकासँ आरो बहुत रास आशा रखने अछि। आशा अछि केदार बाबू अपन प्रशंसक आ पाठक लोकनिकेँ निराश नै करताह।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

कामेश्वर चौधरी-संपर्क-9717245666

अंग्रेजिए पढ़ल लोक मैथिलीकेँ उबारि सकत

कोनो लेखकक जीवनकालमे पत्रिका द्वारा "विशेषाङ्क" प्रकाशित करब बहुत प्रशंसनीय अछि। एहि लेल "विदेह"क सम्पादक एवं पूर्ण मण्डलीकेँ हार्दिक धन्यवाद। अर्थशास्त्रमे एम.ए.क पढ़ाइ आ तत्पश्चात् कलकत्ता स्थित ब्रिटिश फर्म (केलिस डाइरेक्टरी)मे चाकरी। मैथिली भाषाक प्रति विशेष अनुराग तेँ चाकरी छोड़ि बम्बइक लेल प्रस्थान। ईएह छथि श्री केदार नाथ चौधरी (केदार बाबू), जे गाममे लोक द्वारा "केदार भैया" एवम् परिवारमे "छोटका कका"क नामे जानल जाइत छथि।

हमर विवाह (सन् १९७०)मे ओ अमेरिकाक "सन फांसिस्को"मे छलाह। किछुए दिनक बाद अमेरिका छोड़ि गाम आबि गेल छलाह। हुनकर सान्निध्य एवम् प्रेम बहुत भेटल। देश विदेशक विषयमे हुनकर ज्ञान हुनक विशिष्ट सम्प्रेषण क्षमतासँ भेटैत रहल। किछुए सालक बाद (सन् १९८७) मे दरभङ्गा (लहेरियासराय) चलि गेल छलाह- अपन "हिड्डेन काटेज"मे। हिनक लेखन-कार्य ओतहि आरम्भ भेल, जखन कोनो प्रबुद्ध साहित्यकार लहेरियासरायमे कटाक्ष कयलनि जे अंग्रेजी पढ़ल लोक मैथिलीमे कोना लिखताह। ताही क्रममे बिहारक राजनीतिमे उठल बिहारिमे मिथिलाञ्चल समाजकेँ उद्वेलित करैत लिखलनि प्रथम उपन्यास "चमेली रानी"। एहि पोथीक कथानक, भाषा-विन्यास एवम् विशिष्ट शैली- पढ़बाक बादे एकर लोकप्रियताक कारणक पता

चलत। ओही क्रममे हिनक तेसर पोथी "माहुर" छल जे चमेली रानीक कथानककेँ आगाँ बढ़ओलक। "करार" दोसर पोथी छल जे आध्यात्मक चर्चा गामकबासीक बीच होइत रहल। "हीना" आ अन्तिम पोथी "अयना"सँ पूर्व चारिम पोथी छल "अबारा नहितन"।

ई चारिम पोथी केदार बाबूक मैथिली भाषाक प्रेम रोगक कथा थीक। मैथिलीमे फिल्म बनय आ सेहो श्रेष्ठ स्तरक, तँ ओ दरभंगाक महंत जी (मदन बाबू)क संग कलकत्ताक चाकरी छोड़ि बम्बइ बिदा भऽ गेलाह। फिल्म कोना आरम्भ भेल, टीम (दल)क संगठन, कथानक, कलाकार, फनकार एवम् गायक-गायिकाक सङ्गोरकरैत एकटा विशिष्ट "समूह"केँ सार्थकता देलनि। "अबारा नहितन" पोथी हिनक आत्म-कथात्मक उपन्यास थीक जाहिमे अपन टीमक श्री उदयभानु सिंह एवम् श्री परमानन्द (फिल्म डाइरेक्टर)क संग बम्बइमे त्रिदीप कुमार जी, अजरा, लताबोसक कोना चुनाव केलनि,दरभंगामे श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर लोकप्रिय गीतकारकेँ कोना तकलनि आदि वर्णित अछि। बम्बइमे गायिका गीता दत्त, सुमन कल्याणपुर आ गायक श्री महेन्द्र कपूरतथा श्री श्याम शर्माक संग लोकप्रिय गीत सभक रिकार्डिंग कयलनि। राजनगर जाय फिल्मक शूटिंग भेल जे अनुभवी कैमरामेनप्रसादजी कयलनि। फिल्मक नाम छल "ममता गाबय गीत"- मैथिलीक प्रथम फिल्म।

ताहि समय हुनका यू.एस.ए.क गोल्डन गेटक कॉलेजमे एम.बी.ए.क लेल प्रवेश भऽ गेल आ ओ कैलिफोर्निया चलि गेलाह। "ममता गाबय गीत" बहुत दिनक बाद स्व. रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा विमोचन कयल गेल।

एहि कथा प्रवाहमे हिनक मैथिली प्रेम, संघर्षशील फिल्म-निर्माणक प्रक्रिया आ मिथिलाञ्चलक समाजक व्यवहार विशेष रूपेँ परिलक्षित होइछ। अमेरिकाक प्रवाससँ गाम आबि छओ टा (६)पोथीक लेखन हिनक जीवनक बड़ पैघ उपलब्धि रहल। भाषाक सर्वग्राही स्वभाव, सामयिक विषयक विवेचना एवम् मैथिल समाजक चित्रणसँ भरल-पुरल हिनकर कथा-

साहित्य,मैथिली पाठकक बीच अत्यन्त लोकप्रिय भऽ गेल अछि। स्व. हरिमोहन बाबूक व्यंग्य लेखनक बाद मैथिली साहित्यमे लोक-समाजक चित्रण करैत "जनभाषा"मे लेखन करैत हिनकर पोथीसभ सभकेँ सम्मोहित करैत रहत।

हिनक साहित्य साधना एवम् लेखन-कर्मकेँ शत-शत नमन।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

लक्ष्मण झा सागर, संपर्क-9903879117

अबारा नहि...तन!

पाँच छ: बरख पुरान गप थिक। एकटा अज्ञात नम्बरसँ फोन आयल छल। फोन कान लग लगा कऽ उतारा देल जे हलो अपने के बजैत छी? अपनेक नाम सेब नै अछि। क्षमा करब।नै चिन्ह पाबि रहल छी? प्रत्युतर आयल छल - हम छी केदार नाथ चौधरी।लहेरियासरायसँ बाजि रहल छी। तकरा बाद प्रणाम पाती भेल। असलमे हमर एकटा आलेख कोनो पत्रिकामे छपल छल से पढ़लाक बाद हुनकर फोन आयल छल। कहलनि जे सबसँ पहिने त हमर नाम सेभ कऽ लेल जाय। हम बेसी काल आब अहाँ के फोन पर तंग करब। हम तँ लाजे बुझी जे काठ भऽ गेल रही। से ठीके तकर बादसँ बराबरि फोन पर बातचित होइत रहैत छल। अपन नव उपन्यास लेल योजना बतबैत रहैत छलाह। उपन्यास छपि गेला पर स्नेहसँ पठा दैत रहैत छलाह। पछिला एक दू सालसँ कोनो सम्पर्क नै रहल अछि। पता लागल जे आब शरीर संग नै दऽ रहल छनि। लिखब पढ़ब तँ बाधित छन्हियें जे अपन नित्य क्रियाक्रम अपने करबामे असौकर्य होइ छनि। से सब सुनि मोन कचोटैत रहैत अछि जे हमरा जा कऽ हुनका देखबाक चाही। जे से ताहि लेल अपन भाग्य के दोष दैत छी।

हुनकासँ पहिल परिचय हुनक लिखल चमेली रानी उपन्याससँ भेल। हम मैथिलीमे एहन उपन्यास पहिले-पहिल पढ़ने रही। एक बेरे अछौं नै भेल। फेर पढ़ल। देखल जे उपन्यासमे निर्मली आ सिमरियाक चर्च भेल अछि। फोन केलियनि। कहलनि जे सब घटना,पात्र आ स्थान सत्य अछि। रोचक आ पाठकक रुचि लेल कने घीक छौंका दऽ देने छीयै। से सहीमे चौधरी जी अपन

पहिल उपन्यास चमेली रानीसँ मैथिलिक साहित्यिक जगतमे अपन परिचिति बना लेने रहथि। ठाम-ठीम हिनक उपन्यास लेखनक विलक्षनताक चर्च-वर्च हुअय लागल छल।

चारि किंवा पाँच बरख पहिलेक बात थिक। रामलोचन ठाकुर जीक संग चेतना समिति, पटनाक विद्यापति पर्व समारोहमे भाग लेबाक लेल पटना गेल रही। फेर रामलोचन जीक आग्रह पर बैजू(बैद्यनाथ चौधरी) जीक कार्यक्रममे दरभंगा गेलहुँ। हमरा दुनू गोटे कैं दरभंगा रेलवेक यात्री निवासमे आवासक वेबस्था भेल छल। रातिमे 3 बजे सुतय आयल रही दुनू गोटे से भोरे 8 बजे जगौल गेल रही। जगबै वाला छलाह श्री केदार नाथ चौधरी। भोरे भोर एहेन गोर-नार लमगर-खरगर सुदर्शन व्यक्तित्वक स्वामी श्री केदार नाथ बाबूक दर्शनसँ मोन हर्षित भेल छल हमरा दुनू गोटेक। आँखि जुरा गेल छल। घुरती रेलक टिकट कोलकाताक लेल जे प्रतीक्षा सूचीमे छल से कंफर्म भऽ गेल छल। मने कहल जे जाइ छै जे नीक लोकक भोरमे दर्शन भेलासँ जतरा शुभ होइत छै से ठीके जतरा बनि गेल छल। केदार बाबू असलमे भेंट ठाकुर जीसँ करय आयल छलाह अपन बासा लहेरियासरायसँ मुदा संयोग एहन जे हमरो भेंट भऽ गेलाह।

हुनकासँ बड़ी काल धरि हुनक विदेश यात्रा आ मैथिलीक सेवामे कैल काज सभक विस्तारसँ गप भेल। मैथिली फिल्म लेल अपन लक्ष्य आ प्रयास लेल बहुत नीक जकाँ जानकारी देलनि। मिथिलाक माटिसँ अपन तादात्यम केर उल्लेख केलनि। मैथिली साहित्यक गोलैसी आ पुरस्कार प्रक्रिया पर बड़ सहजता आ विनम्रतासँ बात केलनि। नव रत्न गोष्ठी,दरभंगाक पराक्रम आ वैभव पर बात केलनि। समकालीन दरभंगा लहेरियासरायक साहित्य आ साहित्यकारक रुझान पर चिन्तित होइत देखलियनि। सम्पूर्ण बातचीतमे कतहुसँ हुनकामे ककरो प्रति कोनो ने तँ शिकाइत आ ने दुर्भावना लक्षित

भेल। हम प्रसन्न रही जे मिथिलाक एक महान उपन्यासकार के एतेक लगसँ देख सकल रही।

स्वस्ति फाउन्डेसन,सहरसा जहन अपन वार्षिक प्रबोध साहित्य सम्मान लेल श्री केदार नाथ चौधरी जीक नामक घोषणा केलक तहन हमरा रामलोचन ठाकुर जीक कहल सब बात जे हम दुनू गोटेक बीच ट्रेनमे भेल छल से मिलैत सन लागल। मैथिली जगतमे सर्वत्र प्रशंसा भेल नचिकेता जीक। वाजिबो छल कियैक त एते कम समयक अंतरालमे चारि पाँच टा मैथिलीमे एकसँ नीक एक उपन्यास प्रकाशित कय केदार बाबू एकटा रेकर्ड बना लेने छलाह। एहि लेल हिनका पर किछु मैथिलीक लोक सब आरोपो लगेलकनि जे अपन बेसी पोथी पाइ दऽ कऽ सोमदेव जीसँ लिखेलनि। से आरोप कतेक सही आ कतेक मिथ्या तकर तहमे नै जा कऽ एतेक बात त निधोख कहल जा सकैत अछि जे केदार नाथ चौधरी मैथिली साहित्य के नव भाव भूमिक आ नव स्वादक उपन्यास विधाक मौलिक वस्तु देलखिन्ह। करार, माहुर आ चमेली रानी पढ़लाक बाद हमर ई अपन व्यक्तिगत मत अछि।

आब अबैत छी जे जहन श्री केदार नाथ चौधरी जी कलकत्तामे मैथिली आन्दोलनमे अपन सक्रियता बनौने छलाह ताहिसँ सम्बन्धित घटना क्रम पर। कलकत्ताक अपन प्रवासमे केदार नाथ चौधरी जी नेता नै बनल छलाह। कार्यकर्ता बनल रहैत छलाह। कोनो सांस्कृतिक वा साहित्यिक कार्यक्रम लेल चन्दा संग्रह करबाक लेल मैथिल सभक घरमे जाइत छलाह। एक टा संभ्रांत मैथिल अपन परिवारक लोक के कहलखिन जे केबार नै खोलू। फेर कियो चन्दा माँगय आयल हैत। ई सभ मैथिलीक नाम पर चन्दा संग्रह कऽ कऽ अपन अपन पेट भरै जाइ अछि। मारू। भगाउ एकरा सब के। आबारा नहि तन।

से आबारा आन कियो नै केदारे बाबू छलाह। आ से जहन हमर उक्त आलेखमे अपन नामक चर्च नै देखलनि तँ दुखी भऽ कऽ हमरा फोन केने रहथि। कहलनि

जे अहाँ हमर पोथी आबारा नहितन नै पढ़ने छी भरिसक। यदि नै पढने छी तँ हम पठा दैत छी। से पठा देने रहथि। हम पूरा पढ़लाक बाद अपन भूल स्वीकार करैत कहलियनि फोन पर जे अहाँ तँ कलकत्तामे मैथिलीक सम्पूर्ण इतिवृति लिख देने छियैक। से अपनो लोकनिसँ आग्रह करब जे जिनका किनको कलकत्तामे मैथिलीक बारेमे कोनो जानकारी लेबाक हो। हमरा लोकनिक विभूति लोकनि की की दशा भोगने छथि मैथिलीक अभियान लेल से बुझबाक हो तँ हिनक पोथी जरूर पढ़ी - आबारा नहितन।

एखन तँ हम अपन मैथिलीक महान सपूत श्री केदार नाथ चौधरी जीक स्वस्थ जीवनक जगदम्बासँ कामाना करैत छियनि। विदेहक समस्त टीमक प्रति आभार व्यक्त करैत छी जे अहाँ लोकनि हुनका पर केन्द्रित अपन एक अंक निकालि रहल छियनि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अजित कुमार झा- संपर्क-9472834926

अबारा नहितन : एक अनुपम कृति

केदार भैया (श्रद्धेय केदार बाबूकेँ गामपर नेनासँ ल' क' बूढ़ा सब अही नामसँ हुनका सम्बोधित करैत छलनि तेँ हमहूँ ई आजादी ल' रहल छी) एवं शिवकांत मैट्रिकमे फेल भेलाक उपरांत असाध्य पीड़ासँ मर्माहत भ' एकमी पुल लग बागमती नदीक प्रचंड वेगमे जल समाधि लेबय लेल विदा भेल छलथि आ एहन विषम परिस्थितिमे शुद्ध देशी घीमे छानल जिलेबी-कचौड़ीक सुगंधिसँ आकृष्ट भ' जीवनक अंतिम इच्छा पूर्ति हेतु ढनजी महाराजक भोजनालयमे प्रवेश आ अकस्मात कौआली बाबूसँ भेँट एकटा अद्भुत संयोगे कहबाक चाही अन्यथा 'आबारा नहितन' एवं पहिल मैथिली सिनेमा " ममता गाबए गीत" केर अस्तित्व जन्मसँ पूर्वहि अन्त भ' गेल रहितैक। कौआली बाबूसँ विदुर नीति सीखि केदार भैया अपन असह्य पीड़ाकेँ बिसरि गेलाह आ गाम पहुँचि क' मस्त मौला जीवन बिताबय लगलाह। पढ़ाई लिखाई केर आब हुनका लेल कोनो महत्व नहि छलनि मुदा एकदिन हिनका बौआ (गामक एक बुजुर्ग स्वतंत्रता सेनानी) अपना पास बजा क' विस्तारपूर्वक गप्प केलखिन आ केदार भैयाकेँ फेल होयबाक कारण स्पष्ट भेलन तखन हिनका पुनः पढ़ाई शुरू करबाक हेतु प्रेरित कयलनि आ ओहिकेँ बाद कौआली बाबू द्वारा सिखाओल विदुर नीतिकेँ त्यागि केदार भैया जे योग्यता प्राप्त कयलनि से त' सबकेँ बुझले अछि। तत्पश्चात् कलकत्ताक 'केलीज डाइरेक्टरी'मे एक सौ पच्चीस रुपैयाक नौकरीमे रमि गेलाह। समय नींकेँ कटि रहल छलनि मुदा अहि बीच

हिनका एकटा असाध्य रोग ध' लेलकनि। हँ प्रेम रोग, मुदा एहन ओहन नहि जेहन साधारणतया होइत छैक। हिनका त' मिथिला-मैथिली वाला प्रेम रोग ध' लेलकनि। सूतल- जागल, उठल-बैसल, चौक-चौराहा, बाटे-घाटे सदर काल बस एक्कहि चिंता जे मैथिली भाषाक विकास कोना होएत एवं अहि यज्ञमे ओ कोन समिधासँ आहुति देताह? बहुत तरहक सलाह सब भेटलनि मुदा कोनो चित्तपर नहि चढ़ैत छलनि। हिनक एक मित्र बैद्यनाथ बाबू हिनका मिथिलाक्षरक पुन: स्थापना हेतु कार्य करबाक सुझाव देलकनि। मिथिला मैथिली करय वाला नेता सबहक हाल देखि मोन स्थिर नहि क' पाबि रहल छलथि । मैथिली हेतु किछु नीँक करबाक लेल संकल्पित त' छलथि मुदा कोन माध्यमसँ ताहि प्रश्नक उत्तर नहि भेटि पाबि रहल छलनि । बहुत मंथन कयलाह मुदा कोनो निष्कर्षपर नहि पहुँचि पाबि रहल छलथि ।

अही उहापोहक स्थितिमे केदार भैया अपन मित्र महंथ मदन मोहन दास जीकेँ पास पहुँचलाह। अपन समस्याकेँ विस्तारसँ हुनका कहलनि। जवाबमे महंथ जी कहलखिन: " जाबे तक सम्पूर्ण मिथिलाक लोक अपनाकेँ मैथिल नहि बुझत ताबे तक कोनो तरहक अभियान सफल नहि हेतैक। तैँ हम विचार देब जे कोनो एहन योजना बनाउ जाहिमे कल्पने सही, कल्पनाकेँ साकार करैक मार्ग होइ। कल्पनाकेँ यथार्थ बनबैक एकहि टा मंत्र सफल होयत जे मंत्र मिथिलामे रहनिहार प्रत्येक जाति, प्रत्येक समुदायकेँ मैथिल बनैक प्रेरणा देतै, अनिवार्यता बुझौतै।"

मैथिली प्रचार प्रसारक माध्यम मनोरंजन हो से विचार महंथ जीकेँ छलनि। महंथ जी मैथिली फिल्म बनयबाक सलाह देलखिन आ केदार भैयाकेँ अहि महत्वपूर्ण जिम्मेदारीकेँ उठयबाक आग्रह सेहो केलखिन। निस्संदेह पग पगपर केदार भैयाकेँ मदद करबाक हेतु महंथ जी संकल्पित छलथि। ई सब सुनि केदार भैया गुमसुम भेल अंतर्द्वन्दमे पड़ल छलथि । हुनक मनोदशा देखैत महंथ

जी बाजल छलाह: " विचार विषम स्थितिमे पहुँचि गेलया। हम एतबा कहब जे अगुता क' किछु निर्णय नहि लिअ। कलकत्ता जाउ आ अपनाकेँ तौलू। मैथिली सेवा लेल वाकपटुता नहि कर्तव्यपटुता चाही। एक तरहक बलिदान लेल अहाँ अपनाकेँ तैयार करु। हम अहाँक तैयारीक सूचनाक प्रतीक्षामे रहब।"

सन् 1961 उमर मात्र 25 बरख, गदह पचीसीक आयु। विवाहेटा भेल छलनि, दुरागमन बाँकिए छलनि। एहन परिस्थितिमे मिथिला मैथिली हेतु बलिदान करबाक लेल मोनमे सतत् युद्ध चलि रहल छलनि। आखिर प्रेम रोगी छलथि आ सेहो लैला-मजनू अथवा रोमियो-जूलियट वाला नहि मुदा माँ मैथिलीक हेतुअपन नौकरीकेँ बलिदान करय वाला प्रश्न छल। महंथ जीकेँ आदेश छलनि जेँ भावनाकेँ लहरिमे डूबि क' नहि मुदा बहुत सोचि समझि क' निर्णय लेबाक छलनि। सन् 1962मे एक प्रेम रोगी अपन मातृभाषा मैथिलीक मान बढ़ाबय हेतु नींक नौकरीकेँ त्यागि अपन वाकपटुता नहि मुदा कर्तव्यपटुताक परिचय दैत बलिदानक पथपर चलयसँ पूर्व गाम पहुँचलाह। परिवारक सदस्य सब बंटवारा ल' क' बाझल छलथि तैँ किनको फुर्सत नहि छलनि जे केदार भैयाकेँ विषयपर सोचितथि। आखिर केदार भैया सेहो कोना अहि फेरामे पड़ितथि। नौकरी त' छोड़िए देने छलाह आब अपन जमीन जायदादक मोह त्यागि माँ मैथिलीक सेवामे किछु नींक करबाक भावनासँ ओतप्रोत भ' आगूक कार्यक्रम तय करबाक हेतु महंथ जीकेँ पास मिर्जापुर पहुँचलनि कि तखने देशमे भूचाल आबि गेलै। पंचशील नीतिकेँ धत्ता बतबैत आ हिन्दी चीनी भाई भाई केर नाराक मध्य भारतक पीठमे चीन छूरा घोँपि देलक। चीनसँ दोस्तीक भ्रममे नेहरु जी निफिक्र छलथि मुदा चीनक पुरान इतिहास छैक जे ई भरोसाकेँ लायक नहि अछि। ई एक लुटेरा देश अछि आ अपन विस्तारवादी नीतिकेँ कारण छल करयमे सिद्ध हस्त अछि। केदार भैया आगू लिखैत छथि: " समय चक्र मलहमक काज करैए। नौकरी

छोड़ब, परिवारमे बंटवाराक कलह आ देशपर चीनक आक्रमणसँ उपजल मानसिक प्रताड़ना हमरा एहन स्थितिमे पहुँचा देने छल जे सोचल विचारल सब तरहक काजसँ विरक्ति भ' गेल छल। उत्साहमे ब्रेक लागि गेल छल। मुदा जखन थोड़ेक समय बितलै तखन जा क' मोनमे विचारल बात फेरसँ अपन जगह पकड़लक। हम मदन भाई लग पहुँचलहुँ। अन्ततोगत्वा 23 सितम्बर 1963 ई० क दिन हम आ मदन भाई मैथिली भाषामे फिल्म निर्माणक उद्देश्यसँ बम्बई लेल प्रस्थान केलहुँ।"

मैथिली प्रेम रोगसँ ग्रसित दुनु मित्र माया नगरी बम्बई पहुँचलाह, जहाँ हिनका सबकेँ अपन स्वप्न साकार करबाक छलनि। पहुँचि त' गेलाह मुदा स्वप्न साकार करबाक मार्ग आसान नहि छलनि किएक त' दुनु गोटामेसँ किनको अहि विधाक ज्ञान नहि छलनि। एहन समय आवश्यकता छलनि एकटा सूत्रधारक आ से छलथि महंथ जीकेँ एक पुरान परिचित मधुबनी जिलाक रहुआ संग्राम वासी उदय भानु सिंह उर्फ भानु बाबू। 'इंडियन नेशन' एवं 'आर्यावर्त'क बम्बईमे संवाददाता एवं विज्ञापन संग्रह कर्ताकेँ रुपमे कार्यरत छलथि भानु बाबू। दुनु मित्र खोजि हेरि क' भानु बाबूक कार्यालय पहुँचलाह। सर्वप्रथम किछु औपचारिकताक निर्वहन भेल आ तकर बाद महंथ जी अपन बम्बई अयबाक उद्देश्य विस्तारपूर्वक भानु बाबूकेँ सुनौलनि। भानु बाबू हिनकर गप्प निर्विकार भावसँ सुनैत रहलाह एवं अंतमे अपन चपरासी घटोत्कचकेँ दफ्तर बन्द करबाक आदेश दैत दुनु आगंतुककेँ साथमे लैत चर्च गेटक समुद्री किनारा पकड़ि अपन भारी भरकम शरीर आ ताहिपरसँ नम्हर डेग दैतमेरिन ड्राइव पहुँचलाह। फुटपाथ एवं समुद्रक बीच एकटा चौड़गर देबाल छल जाहिपर भानु बाबू बैसि रहलाह एवं हुनकर अनुसरण करैत दुनु मित्र सेहो ओहिपर बैसि गेलाह।मेरिन ड्राइवक दृश्य अति मनोरम लगैत छैक देखयमे। किछु देरमे एक अपरिचित व्यक्ति तीनू गोटेकेँ हाथमे डाभ थमा गेलनि। डाभक आनन्द लैत भानु बाबू अहि अपरिचित डाभ वालाक परिचय

देलनि। भोगेन्द्र झा उर्फ भोगी बाबू फुलपराससँ बम्बई हीरो बनय आयल छलथि मुदा बहुत संघर्ष कयलाक उपरांत कोनो सफलता नहि भेटलनि तखन पेटक भूख जीवन केर असली रंग देखाबय लगलनि। भानु बाबू अपन एक मित्र जे कि फलक व्यापारमे छलथि हुनका कहि भोगी बाबूकेँ अपन स्वप्नक नगरी बम्बईमे डाभ बेचबाक काजमे लगा देलखिन। केदार भैया दुविधामे पड़ि सोचय लगलाह: ' भोगी हीरो बनय लेल बम्बई आयल रहथि आ एखन डाभ बेचि रहल छलाह। की हम आ मदन भाई चिनिया बदाम बेचब? नहि यौ, हम सभ हीरो बनय लेल नहि, हीरो बनब' लेल बम्बई गेल रही। तखन चिंता कथीक?"

बहुत सोचि विचारि क' दोसर दिन दुनु मित्र भानु बाबूक डेरापर पहुँचलाह आ चाह जलपानक उपरांत तीनू गोटे नजदीकेमे एकटा सोलीसीटरक दफ्तरमे पहुँचलाह। दू घंटाक समय लगलनि आ विभिन्न तरहक धारा युक्त कान्ट्रैक्ट पेपर तैयार भेलै। रुपैयाक आठ आना महंथ मदन मोहन दास, छह आना उदय भानु सिंह आओर दू आना केदार नाथ चौधरीक हिस्सा तय भेलनि आ अहि तरहें प्रथम मैथिली भाषाक फिल्म " ममता गाबए गीत"क श्री गणेश भेल छल। फिल्मक विषय वस्तु ल' क' विस्तृत चर्चा भेलन्हि। केदार भैया एवं महंथ जी भक्ति फिल्म बनाबय चाहैत छलथि मुदा भानु बाबूकेँ सोच किछु हटि क' छलनि। ओ जानकारी देलखिन जे मिथिलाक एकटा लाल दरभंगा जिलाक मोरो ग्रामवासीपरमानन्द चौधरी एकटा नामी डाइरेक्टरक सहायककेँ रुपमे कार्य क' रहल छलथि । अहि कार्यक हेतु वएह उपयुक्त व्यक्ति हेताह जिनका फिल्म निर्माणक ज्ञान छन्हि आ हुनकेँसँ बातचीत कयलाक उपरांत फिल्मक कथा फाइनल होएत। दोसर दिन चारु गोटेकेँ मीटिंग भेलनि। मैच पहिनहेसँ फिक्स छलनि। डाइरेक्टर साहेबकेँ संग भानु बाबू फिल्मक कथा तय क' लेने छलथि । फिल्मक बजट लगभग चालीस हजारकेँ छल। भानु बाबूकेँ तूफानी निर्णयमे दुनु मित्र भसिया रहल छलाह। अहि संदर्भमे महंथ

जी कहैत छथि: " केदार भाई जे भ' रहलैए तकरा होब' दिऔ। मैथिली भाषाक प्रति स्नेह हमरा अहाँकेँ एतय अनने अछि। भाषाक प्रतिष्ठा कोना कायम हेतै ताहि लेल भानु बाबू सहित सभटा मैथिलकेँ जिम्मेदारी छनि ने! एकटा बात कठोर सत्य छैक जे हमरा-अहाँकेँ फिल्म बनबैक लूरि नहि अछि। तखन त' दोसरेकेँ भरोसे ने काज हेतैक।"

भानु बाबू फिल्मक नाम रखलनि " नैहर भेल मोर सासुर"। फिल्मक प्रसिद्ध नाम " ममता गाबए गीत" त' बहुत बादमे फुरायल रहैक। 'इम्पा'मे " नैहर भेल मोर सासुर" नामसँ फिल्मक रजिस्ट्रेशन भेलै आ फिल्मक गीत-संगीत, रिकार्डिंग, एडिटिंग, प्रोसेसिंग इत्यादि कार्यक हेतु ' बम्बई लैब' केर चयन भेल। दस हजार टका जमा कय रजिस्ट्रेशनक कागत प्राप्त कयलाह। संभवतः ओही दिन अथवा एक दू दिन पहिने भोजपुरी फिल्म " गंगा मैया तोहें पिअरी चढ़ैबो"क सेहो रजिस्ट्रेशन भेल छलैक।

भानु बाबूकेँ पत्र पाबि दुनु मित्र अपना संग गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीकेँ ल' क' बम्बई पहुँचलाह। संगीतकारकेँ रुपमे पटना खगौल वासी श्याम शर्माकेँ चुनल गेलन। ओहिकेँ बाद स्टार कास्ट फाइनल भेल। बजट बहुत तेजीसँ भागि रहल छल तथापि सुमन कल्याणपुर, गीता दत्त एवं महेन्द्र कपूर आ श्याम शर्माकेँ आवाजमे सदाबहार गीतक रिकार्डिंग सम्पन्न भेल। फिल्मक मुहूर्त खूब धूम धामसँ पटनामे मनाओल गेल जाहिमे बिहारक तत्कालीन राज्यपाल फिल्मक क्लिप दबलनि। फिल्म मंडली महेन्द्रू घाटसँ पनिया जहाजपर सवार भ' पहलेजा घाट होइत आउटडोर शूटिंग लेल दरभंगा महाराजक पुरना राजधानी राजनगर विदा भेलाह। फिल्मक शूटिंग केर दौरान अनेक तरहक बिर्रोक आक्रमण भेलै। अन्हड़ उठैत रहलै। कतेकोकेँ कपार फुटलै, कतेकोकेँ छातीमे दर्द पैसलै। दू महीना तेरह दिनक बाद शूटिंग समाप्त भेल फिल्मक आरम्भमे बनल बजटक दोबर खर्च भ' चुकल छलै मुदा

एडिटिंग काल ज्ञात भेलन जे फिल्मक शूटिंग अधूरा भेल अछि। केदार भैया लिखैत छथि: " आब 'ममता गाबए गीत' ममताक नोरे टा बहा रहल छल। ' हारि क' दुनु गोटे गाम वापस अयलाह एवं पाँच मास बाद पुनः हिम्मत जुटौलनि आ अधूरा काजकेँ पूरा कयलनि। अहिबेर लगभग एक मास शूटिंग चलल छल। बम्बई जायकेँ तैयारीमे छलथि मुदा ओही समय पाकिस्तान भारतपर आक्रमण क' देलक। भारत युद्ध जीति गेल मुदा ताशकंदमे शास्त्री जीकेँ आकस्मिक निधनसँ पूरा देश मर्माहत छल। समय सब घावकेँ भरैत छैक। शूटिंग भेल सब निगेटिव ल' क' दुनु गोटे पुनः बम्बई पहुँचलाह। ओत्तह पहुँचि ज्ञात भेलन जे एखन लगभग चालीस हजारक आओर आवश्यकता छलनि,अर्थात् बजट जस के तस। आब विषम आर्थिक तंगीमे पड़ि गेलाह। भानु बाबू सुझाव देलखिन जे बम्बईमे मिथिला मैथिली लेल समर्पित संस्थाक मदद लेल जाय। अपन अहि उपन्यासमे एहन संस्था सबहक क्रियाकलापकेँ पढ़ि मोनमे विरक्ति भ' जायत। एत्तह असफलता हाथ लगलाक बाद भानु बाबू हरदा बाजि दैत छथि । यद्यपि निराशा हाथ लगलनि तथापि दुनु मित्र उम्मीद नहि छोड़लाह। ई सोचि जे कलकत्तामे प्रवासी मैथिलक संख्या बहुत अछि ओत्तह केर संस्थासँ किछु सहयोग जरुर भ' जायत मुदा ओत्तहु वएह ढ़ाककेँ तीन पात। संस्था एवं ओकर मठाधीश सबहक अद्भुत चरित्र चित्रण अहिसँ नींक कत्तहु नहि पढ़ने छी। बम्बईसँ दू डेग आगू निकलल कलकत्ता आ अहि दुनु मैथिली प्रेम रोगीकेँएत्तहि "आबारा नहितन " केर उपाधिसँ संबोधित कएल गेल छलनि। मैथिल समाजक सर्वश्रेष्ठ उपाधि "आबारा नहितन" ग्रहण क" आ अपन मान सम्मानकेँ थुर्री थुर्री करैत दुनु मैथिली प्रेम रोगी अपन होटलकेँ बेडपर पड़ि रहलाह। ठीक एहने समयमे केदार भैयाक पितियौत फोनपर सूचना दैत छथिन्ह जे हिनका कैलिफोर्निया विश्वविद्यालयक गोल्डेन गेट कॉलेज, सैन फ्रांसिस्कोसँ एडमिशनक एप्रूवल वाला पत्र गामपर आयल छन। महंथ जी बहुत प्रसन्न होइत छथि एवं केदार भैयाकेँ सब किछु

बिसरि अहि नींक मौकाकेँ नहि छोड़बाक लेल आग्रह करैत छथिन्ह।16 मई 1966केँआठ डालर जेबीमे राखि केदार भैया बैंकाक होइत सैन फ्रांसिस्को लेल हवाई जहाजमे बैसि गेल रहथि। कलकत्ता एयरपोर्ट धरि हिनका अरियातय लेल एकमात्र हिनकर मित्र मदन भाई अर्थात् महंथ जी पहुँचल रहथि।

सन् 2001मे केदार बाबू स्वदेश अर्थात् अपन गामपर घर बना क' रहय लेल अयलाह मुदा से संभव नहि भेलन। लहेरियासरायक बंगाली टोलामे कनिएटा जमीन कीनि क' घर बनयलाह आ एकर नाम रखलनि 'हिडेन काॅटेज'। ओहिकेँ बादसँ एत्तहि रहय लगलाह। पासेमे महंथ जी केर आवास सेहो छलनि। रिटायरमेंट वाला जीवन नींकेसँ बिता रहल छलथि । सन् 2003 संभवतः जून अथवा जुलाई केर महीना आ बज्र दुपहरियाक समयमे एकटा मैथिल युवक हिनकासँ भेँट करय अयलनि। अपन परिचय दैत ओ बाजय लगलाह: " हमर नाम विजय कुमार मिश्र अछि। हम पत्रकार छी। हमरा मैथिली सिनेमाक कब्र खोधयमे रुचि अछि। हम कइएकटा मैथिली भाषामे बनल, बिन बनल सिनेमाक कब्र खोधि चुकलहुँ अछि। कनिए काल पहिने उमा बाबूसँ भेँट भेल रहय। ओ " ममता गाबए गीत" फिल्मक कब्रक पता देलनि। हमर प्रश्नक अपने उत्तर दिअ। की अहाँ मैथिली भाषामे बनल ' ममता गाबए गीत' फिल्मक कर्ता धर्ता छी? अगर हँ त' अहाँ मैथिल समाजमे अपरिचित किएक छी?"

पत्रकार विजय कुमार मिश्रकेँ संगमे ल' क' केदार बाबू अपन मित्र महंथ मदन मोहन दास जीकेँ घर पहुँचलाह। ओही दिन केदार बाबूकेँ जानकारी भेटलनि जे गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी महंथ जीसँ लिखित अधिकार प्राप्त कय अहि फिल्मकेँ रिलीज करबौलनि। विजय जी केर अपरिचित किएक वाला प्रश्नपर जवाब दैत महंथ जी कहलखिन: " जतेक ठूसि-ठूसि अँटतैक तकर

दोबड़, तेबड़ विद्वान मिथिलामे छथि । अहाँ पत्रकार छी, अहाँकेँ त' सभ किछु बुझले होएत? मुदा तइयो सुनि लिअ। मैथिल विद्वानकेँ पुरस्कार देबय वाला जतेक संस्था छैक तकरा सही-सही विद्वानक चुनावमे प्राणांतक पीड़ा होइत छैक। तेँ संस्थाक कर्णधार सभटा पुरस्कार अपनेमे बाँटि लैत छथि । हम आ केदार भाई जँ मिथिला समाजमे अपरिचित छी ताहिमे हर्जे की? हमरा सभकेँ पुरस्कारक लोभ नहिए, तखन परिचित किएक होइ। पुरस्कारक लेल गोलमे के जैत? मैथिली प्रेम रोगमे जे भोगलहुँ से भोगिलेलहुँ, आब की?"

केदार बाबूअहि उपन्यासक अन्तिम पैराग्राफमे लिखैत छथि: " फिल्म पूरा बनि गेलै तकर सूचना पाबि हमरा दुःख नहि प्रसन्नता भेल छल।मुदा एकटा जिज्ञासा मोनमे रहिए गेल रहए। की हम आ मदन भाई मैथिल समाजमे अपरिचितसँ परिचित भेलहुँ? जवाबक प्रतीक्षामे मदन भाई संसार त्यागि बिदा भ' गेला। मुदा हम एखन तक प्रतीक्षामे जिविते घुमि-फिरि रहलहुँ अछि।"

मिथिला मैथिलीक यथार्थ चरित्र चित्रण अहिसँ नींक शायद संभव नहि। इंडिका इन्फोमीडिया, नई दिल्लीसँ सन् 2012मे प्रकाशित " अबारा नहितन " 136 पृष्ठक एक अनुपम कृति अछि। अद्भुत रोचक शैलीमे लिखल अहि पोथीक प्रथम पृष्ठ पढ़बै त' बिनु एकरा शेष कयने उठनाइ कठिन होयत। मूल्य मात्र 100 टका।परम आदरणीय स्व० रामलोचन ठाकुर जीकेँ शब्द अथवा मोनक उद्गारकेँ लिखने बिना हम विराम नहि ल' सकैत छी: " अबारा नहितन " एक अबाराक कथा-गाथा थिक। अद्भुत, अभिनव, अविस्मरणीय कथा-गाथा! अफसोच जे मिथिला-मैथिलीमे एहन अबारा दोसर नहि भेल। जँ दस-बीसोटा एहन अबारा भेल रहैत त' निश्चिते आइ मिथिला-मैथिलीक दोसर रुप रहितैक। ई अबारा थिका अपन प्रिय बन्धु महंथ मदन मोहन दासक संग केदार

नाथ चौधरी। मिथिला विभूति मदन मोहन दास आइ हमरा लोकनिक बीच नहि छथि, ई पोथी हुनको श्रद्धांजलि थिक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

भीमनाथ झा-संपर्क-7482066855

तोर समान एक तोहेँ माधव

२००४ ई.। मास ठेकान नहि। कटहरबाड़ी गुमतीपर लाइन टपैत काल मोदू बाबू (लालबाग) अभरला। देखिते कहलनि-अहीं ओतऽ चलल छी। केदारनाथ बाबू अहाँकेँ देबा लेल ई पोथी देलनि अछि। ई कहैत चकमक गत्ता बला पोथी बढ़ा देलनि। चमेली रानी- केदारनाथ चौधरी। पुछलियनि-लेखक ध्यानपर नहि आबि रहल छथि।

कहलनि डॉ.शभूनाथ चौधरीक छोट भाइ थिका। मैथिलीक पहिल सिनेमा 'ममता गाबय गीत'क निर्माता सदस्य छला। लहेरियासरायमे रहै छथि। अहाँकेँ आ विभूति आनंदकेँ खास कऽ देबा लेल कहलनि अछि।

'बेस' ई कहि आँगा बढ़ि गेलहुँ। खा कोनो प्रतिक्रिया मनमे नहि आएल। अपितु, कवरपरक फोटो 'बजारू' पोथी जकाँ लागल आ सत्त पूछी तँ कने वितृष्णेक भाव जागल।

पोथी पड़ले रहलै। गोटेक मासक धकमे सूचना भेटल जे ओहि पोथीपर पूहर होममे समीक्षा-गोष्ठी आयोजित छै, ताहिमे हमहूँ आमंत्रित छी। आब तँ पोथी देखब अनिवार्य। से जखन पढ़ब शुरू केलहुँ तँ दोसरे लोकमे पहुँचि गेलहुँ।

हम 'फास्ट रीडर' नहि छी। थम्हि-थम्हि कऽ पढ़ै छियै। मुदा ई पोथी तँ जुलुम छलै। थम्हऽ दैते ने छल। जकरा कहै छै एकै श्वासमे, तेना पढ़ि गेलहुँ।पढ़ला उत्तर तात्काले दू टा जिज्ञासा मनेमे उठल। एक टाक तँ उठिते निराकरण भऽ गेल। कने सोचलापर दोसरोक, मुदा लगले भऽ गेल। पहिल छल- अइ तरहक विषय-वस्तुपर मैथिलीमे कतहुँ पढ़ने छी?

-नहि

दोसर छल-चुम्मक जकाँ पाठककेँ अपना दिस घिचबाक कलामे कतऽ अछि ई उपन्यास?- 'कन्यादान'क बाद दोसर कहू ने 'मरीचिका'क बाद तेसर नम्बरपर। हम नहि बुझै छी जे हमरा ई कते आकृष्ट केलक से आब कहबाक काज अछि।

समीक्षा गोष्ठीमे पहिले-पहिल देखलियनि। सुदर्शन व्यक्तित्व, शालीन ओ मृदुभाषी, प्रसन्नानन, वयसे हमरासँ आठ-दस वर्ष जेठे लगला।

पचासक करीब प्रबुद्ध समाजक उपस्थिति। जाइत देरी परिचय नहि केलहुँ। उपरि कऽ अपन परिचय देब हमर स्वभाव नहि। ईहो पूर्वमे देखने नहि हेता। तँइ बजबा लेल जखन हमर नाम लेल गेल, तखने ई बुझने हेता। स्वाभाविक छल-कृतिक जमि कऽ प्रसंशा भेलै। ताहिमे हम स्वयंकेँ सेहो शामिल केलहुँ। सभा समाप्तिक बादे दुटप्पी भऽ सकल। ई कंटेक्ट नम्बर लेलनि। फोन-मोबाइलपर गप होइत रहल। ई हमरासँ सभ तरहेँ जेष्ठ-श्रेष्ठ। आदरणीय।

किंतु क्यो हिनक विश्वासी हमरा दऽ हिनका बेसी बढ़ा-चढ़ा कऽ कहि देने हेथिन, तकरा ई भरिसक गीरह बान्हि लेलनि आ हमरा मैथिली साहित्यिक 'जानकार' बुझऽ लगलाह आ ताही तरहेँ गप्पो करऽ लगलाह। मुदा वास्तविकता तँ ई थिक जे शास्त्रीय आ व्यावहारिक

ज्ञान, अनुभव, प्रतिभा, साहित्यिक योगदानमे हमरा के पुछैए, कतोक नामी-कलामी 'उलार' भऽ जेता।

२००४ मे हिनक चमेली रानी एलनि आ ओ हिनक नामकेँ संपूर्ण मैथिली वातावरणमे गमगमा देलकनि। उपन्यास उद्यान तँ नूतन सुरभिसँ महमहा उठल। हजार प्रतिक संस्करण धराधरि चारि खेप आएल आ जकरा कहै छै 'छूह उड़िआएब' से उड़िया गेल। वएह टा नहि, ओही जोड़क एकपर एक चारि टा उपन्यास 'करार' (२००६), 'माहुर' (२००८), 'हीना' (२०१३), तथा 'अयना' (२०१८) अबैत गेलनि आ लोक हाथे-हाथ लोकैत गेल। हीनामे तँ हुनक स्नेहादेशकेँ शिरोधार्य करैत भूमिका-स्थानीय अपन अभ्युक्ति देबहि पड़ल। हम अपन सीमा जनैत छी। उपन्यासक मर्मकेँ छूबाक हमरा क्षमता नहि तँइ उचित मूल्यांकनो नहिए संभव भेल। मुदा ई तँ जकरा स्वीकारि लेलनि तकरा तारि देलनि। हिनक पाँचो उपन्यास मैथिली साहित्यिक सचारमे स्वादिष्ट व्यंजनक विन्यास अछि।

मैथिलीक आरंभिक सिनेमा 'ममता गाबय गीत'क ई प्रमुख निर्माता रहथि। ओकरे उत्थान-पतनक प्रमाणिक उपाख्यान थिक 'अबारा नहितन'- जे संस्मरण साहित्यिक अमर कृति भऽ गेल अछि। सिनेमा जगतक रंगीन दृश्य जे पर्दापर देखै छी, तकर निर्माण प्रक्रियामे केहन-केहन भयावह आ विकट श्वेत-श्याम अदृश्य दृश्य सभकेँ पार करबामे निर्मातार्केँ कोन-कोन बेलना बेलऽ पड़ै छै, से समान्य लोक नहि बुझितै जँ ई पोथी नहि लिखल जैतै। सिनेमापरक ई पोथी, हम तँ कहब साक्षात् सिनेमा देखब थिक। मैथिली सिनेमा सभ भने फ्लॉप भऽ गेल हो, मुदा सिनेमापरक मैथिली पोथी, जे एखन धरि एकमात्र अछि, से धरि सुपरहिट भऽ गेल अछि। नेशनल बुक ट्रस्ट दिससँ एहर हिंदी अनुवाद सेहो उपल्बध अछि।

पाठ़कीय सम्मान तँ हिनका जकाँ विरल लेककेँ प्राप्त होइ छै। आ, हमरा जनैत साहित्यकारक हेतु सर्वोच्च सम्मान वएह थिकै। एकमात्र वएह सम्मान थिकै जाहिमे पक्षपातक गुंजाइश शून्यवत् छैक। सांस्थाकिक सम्मान समान्यतः पाठकवर्गकेँ आब नहि करै छै। किंतु एखन धरि ओहो विमर्शवाह्य नहि भेलै अछि। ताहू क्षेत्रक, राशि आ प्रतिष्ठाक दृष्टिएँ, सर्वोच्च 'प्रबोध साहित्य सम्मान-२०१६' सँ ई विभूषित भेला, जाहिसँ हिनक विशाल पाठक वर्ग प्रफुल्लित भऽ उठल छल। ताहि अवसरपरक लिखित भाषणमे हिनक साहित्य दृष्टि एवं पाठकीय रुचिक समाजिक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण श्रोतागणकेँ बहुत दिन धरि मन रहलैक।

जाहि वयसमे आबि गेल छथि ताहिमे लेखन कार्य शिथिल पड़ि जाएब स्वाभाविके थिक। किंतु, हिनक चेतना, समृति, उत्कंठा आ उर्जा पूर्ववत् कायम छनि। भने शारिरिक गति मंद पड़ि गेल होउन, किंतु सारस्वत मति स्वच्छंद विचरण करबा लेल तत्पर छनिहेँ। जतबा आ जेहन साहित्य जथा ई दऽ देने छथि, ततबोसँ हिनक नामक पतक्खा फहराइत रहतनि,किंतु हमरा लोकनिक, हिनकर हजारो "फैन" आ लाखो प्रबुद्ध मैथिल समाजक कामना छै जे हिनक दोसर पारीकेँ सेहो देखए।

ईश्वरक दरबारमे उजूर पहुँचाएबे टा हमरा लोकनिक सकमे अछि, से बारंबार पहुँचा रहल छियनि। हुनका कहबनि की?-ओ तँ सभटा जनिते छथिन, देखिते छथिन।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

हितनाथ झा-संपर्क-09430743070

ह्रास होइत सभ्यता संस्कृतिक इतिवृत्तिक अयना : "अयना"

मिथिलाक सामाजिक -आर्थिक -साहित्यिक-सांस्कृतिक व्यथा-कथा , प्रेम-अनुराग-विरागक सचित्र चित्रण, ह्रास होइत सभ्यता -संस्कृतिक इतिवृत्ति , हाहाकार करैत जीवनक मर्मस्पर्शी कथाक वर्णन ठीक ओहने जेहन अयनाक प्रति छबि देखा पड़ैत छैक, ने कोनो काट-छाँट, ने कोनो कम-बेस, ने कतौ कृत्रिमताक भान, ने कतौसँ शब्दक आयात,ने निर्यात, विशुद्ध अपन भाषाक शब्द-लालित्यक प्रयोग कयने छथि जेना अयनाक सामने ठाढ़ होथि जतय कृत्रिमताक कोनो गुंजाइस नहि,सोझ तँ सोझ,टेढ़ तँ टेढ़, गोल तँ गोल,चाकर तँ चाकर, भोर,दुपहरिया,सांझ,राति,जखन देखब, जेना देखब,जकर देखब, जाहि स्थिति-परिस्थितिमे देखब, ओहिना स्पष्ट रूप झलकि सामनेमे आबि जायत। उपर्युक्त बात हम केदार नाथ चौधरीक 'अयना' उपन्यास पढ़लाक बाद विश्वासक संग कहि रहल छी, जाहिमे कनेको कृत्रिमता नहि अछि,कारण उपन्यासकारक लेखनीक अपन निजता छनि, विशिष्टता छनि, सहजता आ सरलता छनि, ग्रामांचल -शब्दक बहुलता छनि, कथ्य आ तथ्यक प्रचुरता छनि,कल-कल बहैत नदीक जल धाराक सदृश भाषाक प्रवाह छनि, पाठककेँ अपना दिस आकर्षित

करबाक पूर्ण क्षमता छनि।

ई पोथी मनलग्गूक संग समाजक कुप्रथापर जबर्दस्त प्रहार अछि, घटना - कल्पनाक समुचित उपयोग उपन्यासक श्रृंगार अछि, ढोंगीक अनुचित व्यवहारक भंडाफोड़ अछि, विद्रूप समाजक कुत्सित व्यवहारक कार्य -कलाप अछि, सामाजिक बन्धन तोड़बाक हेतु लेड़ चुबैत कामवासनाक देखार करैत घुटन अछि, आतंकवादक आतंक अछि, चिन्ताक संग चिंतन अछि, शब्दचित्रक मिथिलाक रंग-विरंगक अचार जकाँ विन्यस्त सचार अछि, राजनीतिमे चलैत भाइ-भतीजाबादक कारणसँ सरकारी कार्यमे अयोग्य व्यक्तिक नियुक्तिसँ कार्यपर पड़ैत प्रभावक चुभन अछि, आर अछि मायक ममता, पिताक निर्ममता, उच्च वर्गक लोलुपता, भाइ -बहिनक स्नेह, ठेला वलाकक उपकारक नेह, बेइमानक इमान आ वचनबद्धताक प्रमाण। प्रारम्भ होइत अछि, मैथिली पोथीक लेखक,प्रकाशक,ग्राहकक चिन्तासँ, लेखकक गोंधियागिरीक हम सुनरी कि पिया सुनरासँ,ढेर लागल किताबक ढेरीमे दीवार खाइत चिन्तासँ, किन्तु विशुद्ध लेखक,कविकेँ एकर कोन चिन्ता,ओ तँ जीवाक लेल लेखनी करैत अछि, ईश्वर प्रदत्त प्रतिभाक उपयोग करैत अछि आ से उपन्यासकार कवि-लेखक उदयचन्द्र झा 'विनोद'क निम्नलिखित पाँतीक उद्धरण कयलनि अछि -' हम लिखैत छी कविता,सूर्यकेँ अर्घ्य दैत छी,ककरो किछु फर्क भने नहि पड़ौक, हमरा पड़ैत अछि।अहाँ पढ़ू वा नहि, हमरा लिखय पड़ैत अछि। हमरा लेल कविता लिखब,आइयो अछि आवश्यक, परमावश्यक अछि जीवाक लेल।"

से सत्ते,जीवाक लेल साहित्यक सृजन होइत छैक, तात्कालिक प्रभाव पड़ौ वा नहि पड़ौ,कालजयी रचनाक पाठक सभ समयमे भेटतैक, सभ पीढ़ीमे भेटतैक, आगाँक पीढ़ीक लेल तत्कालीन समाजक अयनाक काज करतैक,बाँकी माल-जालक निघेस जकाँ आगिक ज्वालामे विलीन

भ' जेतैक। साहित्य अखबारक पन्ना नहि अछि,जे तत्काले पढ़ल जायत,नहि तँ बासि भ ' जायत। उत्कृष्ट साहित्य कहियो नहि बासि होइत अछि,अपितु युग-युग ओहिमे निखार अबैत रहैत अछि, ओकर उपयोगितक अनुसन्धानपर अनुसन्धान होइत रहैत अछि,आगाँकक पीढ़ीक लेल अनुकरणीय होइत रहैत अछि।

एहि उपन्यासमे शब्दक लालित्य, जेना पूर्वमे कहलहुँ अद्भुत अछि, एक्कहि डारिये कतेकपर निशाना अछि,तकर मात्र हम एक उद्धरण प्रस्तुत करबाक प्रयास करैत छी, बाँकी पूराक पूरा पोथी अपने जँ पढ़बै,तँ बिना पूरा पढ़ने कतौ निकलि नहि सकबै, कतौ नीरस नहि, रस तँ नैराश्यमे सेहो छैक,किन्तु हिनकर पोथीमे बिज्जू (सरही)आमक रंग -विरंगक स्वाद छनि -मधुर -खटगर-अम्मत-चहटगर।

" हमरे गामक जटाधर मिश्र धनिक लोक तऽ छथिहे संगहि छथि कलाक पुजेगरी। हुनकर पौत्रक उपनयनमे हमहूँ निमन्त्रित छलहुँ।मुफ्फरपुरसँ दू टा बाइजी आयल छलीह। दुनू बाइजी मानि लिअ इन्द्रक दरबारक परी-मेनका आ तिलोत्तमा।हम सौन्दर्यक उपासक छी से बजबामे हमरा लाज नहि होइए। दुनू बाइजीक नृत्यमे जे छटा छल ताहिसँ रसक बरखा भ ' रहल छल।दुनूक कंठसँ निकलल मधुर गीत स्वतः संगीत बनि हमर मोनकेँ आप्लावित क ' देने छल।हम दुनू बाइजीक अद्भुत नृत्य एवं कर्णप्रिय संगीतमे एतेक ने रमि गेलहुँ जे हमरा समयक ठेकान नहि रहि सकल। लगभग अर्धरात्रिक वेलामे आपस अपन आँगन पहुँचलहुँ।आषाढ़क महिना,तितल अन्हरिया राति,किछुए काल पहिने एक जबर्दस्त अछार भेल रहैक, आँगन पिछर, टोर्चक बैटरी कमजोर, भगजोगनीक इजोत,पैरक चट्टीमे थाल-कादो लेभरल। कहुना दुआरिपर चढ़लहुँ। मुदा पिछरि गेलहुँ। कतबो अपनाकेँ सम्हारलहुँ तइयो दुआरिपर सूतलि फुलकाहीवाली टहलनीक छोटकी बेटी कुसमियाक देहेपर

ओघरा गेलहुँ। कुसमिया चिचिया उठल -माइगे माइ ! अनघोल जकाँ भ ' गेलै। कोठलीसँ पत्नी बाहर एलीह। हुनकर हाथक टॉर्चमे पेट्रोमेक्सक प्रकाश।उपस्थित दृष्यकेँ अवलोकन करैत ओ बजलीह - लुच्चा ! मनसाक लुचपना हमरासँ अधिक के बुझत। "

काल -पात्रक समुचित चयन "अयना" उपन्यासक पठनीयता सदैब रहत,ताहि हेतु प्रबोध साहित्य सम्मान एवं केदार सम्मानसँ सम्मानित, मैथिलीक पहिल सिनेमा 'ममता गाबय गीत 'क लेखक,निर्माता श्री केदारनाथ चौधरी बधाइक पात्र छथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अमरनाथ झा- संपर्क-9110932557

अपरिचितसँ परिचितिक यात्रा: केदारनाथ चौधरी

लिफापपर अहाँक पता लिखैत हम कते तरहक मनोभावसँ गुजरल रही। हिडेन कॉटेज लिखैत लागल जेना ई घर शिमला, दर्जिलिंग वा कोनो रमणीय पहाड़ी उपात्यकाक बीच शांत-निश्चल-एकांतमे बसल हुअए। मोनकेँ एकटा शीतल हरितिमा घेरि लैत अछि। आगू बंगाली टोला, लहेरियासराय लिखतहि हमरा मूँहपर एकटा स्मित मुस्कान खेलए लगैत अछि। अचानक हुनक हँसी हमरा सुनाइ दैत अछि। हम हुनका दिस तकैत छी। हुनकर झलकैत दाँत नजरि अबैत अछि। हुनकर हँसी एक तरहे जबाब छल। मुदा हम संतुष्ट नहि होइत छी। हम पुनः कहै छियनि " वा अहाँ विदेशमे बहुत दिन रहलहुँ तकर प्रभाव एकर नामाकरणपर अछि"। ओ मुस्काइत संक्षिप्त उत्तर दैत छथि "विदेशसँ घुमलाक बाद २००१ मे कनियें टा जमीन कीनि कऽ कनियें टा घर बनेलहुँ, किएक तँ घर कतहुँसँ देखबामे अबैत छलै तँइ नाम देलियै "हिडेन कॉटेज"। हम आर किछु पुछतियनि ताहिसँ पहिनहि ओ पुछलनि- अहाँ हमरा चिन्हलहुँ केना? हमर जबाब छल- एहि दू दिनसँ पोथीक ब्लर्बपर छपल अहाँक फोटो बेर-बेर देखि कऽ। हुनक एकटा पैघ ठहक्का प्लेटफार्मपर पड़ल।

हमरा लोकनिक ग्पप राँची स्टेशनक प्लेटफार्मपर चलैत भऽ रहल अछि। ओ जयनगर-राँची एक्सप्रेससँ राँची आएल छलाह। हमरा लोकनि स्टेशनक बाहर ठाढ़ गाड़ी दिस जे हुनका लऽ जेबाक लेल अनने छी, बढ़ि रहल छी। हम आ मोहन झा पड़ोसी। झारखंड मैथिली मंचसँ जुड़ल मैथिलीक कार्यकर्ता छी, राँची स्टेशनपर हुनका रिसीभ करबाक लेल आएल छी।

हम गप्प कऽ रहल छी मैथिलीक जनप्रिय लेखक केदारनाथ चौधरीक, जिनकर पोथी "अबारा नहितन" केँ बर्ख २०१३ केर 'विदेह साहित्य

सम्मान' सँ सम्मानित करबाक अवसर छै आ ओ राँची आएल छथि। झारखंड मैथिली मंचस, राँची मैथिली भाषा आ साहित्यिक उन्नयन हेतु एकटा गौरवपूर्ण परंपराक आरंभ करैत बर्ख २०११ सँ 'विदेह साहित्य सम्मान' प्रतिवर्ष लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारकेँ हुनक मौलिक कृतिपर प्रदान करैत अछि। केदार बाबूक पोथी 'अबारा नहितन'केँ विदेह साहित्य सम्मानसँ सम्मानित करबाक अवसर अछि आ ताहि लेल झारखंड मैथिली मंच, राँची द्वारा आग्रहपूर्वक बजाओल गेल छथि।

'अबारा नहितन' पहिल मैथिली फिल्म "ममता गाबय गीत" कोना बनल तकर रोचक, विलक्षण एवं आकर्षक कथा अछि। बिना भावुक केने मर्मस्पर्शी वर्णन हिनक कथा-कलाक अद्भुत गुण अछि। जे लेखककेँ जीवनक यथार्थ सेहो अछि। कठोर यथार्थ। एहि पोथीक हिन्दी अनुवाद सेहो भेल अछि। NBT (नेशनल बुक ट्रस्ट) एहि पोथीक पुर्नप्रकाशन सेहो केने अछि। मैथिली सिनेमा एखनहुँ निरंतरतामे नहि अछि। कहि सकै छी टी.भी सिरियल आ सिनेमा डेगा-डेगी बढ़ि रहल अछि। 'ममता गाबय गीत' सिनेमा पर्दापर भनहि बादमे आबि सकल, मुदा ई कहबामे कोनो हर्ज नहि कि जे स्थान हिन्दी सिनेमाक इतिहासमे "राजा हरिश्चंद्र" (वर्ष-१९१३) एवं पहिल बजैत फिल्म "आलम आरा" केर अछि वएह स्थान मैथिली सिनेमाक इतिहासमे 'ममता गाबय गीत' केर अछि आ रहत। मैथिली सिनेमाक पहिल नायिकाक स्मरण अबितहि मोन पड़ैत छथि अजरा आ संगहि मोन पड़ैत अछि कालजयी फिल्म 'मदर इंडिया'। सुनील दत्तक नायिका 'चंद्रा' केर भूमिकामे गुजराती बाला अजराक अनुपम सौंदर्य आ विलक्षण अभिनय।

ई पोथी फिल्म निर्माणक कथागाथा सँ तँ परिचित करबिते अछि, संगहि अपन पारदर्शी कथाभाषा, उत्सुकता आ खिस्सा कहबाक चासनीमे अंत-अंत तक पाठककेँ डुबौने रहैत अछि। पाठककेँ अपूर्व स्वाद भेटैत रहैत छनि। वर्णन

शैलील मधुरता, सरसता केखनो गुदगुदबैत अछि, केखनो हँसबैत अछि। मुदा एतबे नहि उपन्यास अपन अंतक पश्चात पाठकक समक्ष एकटा प्रश्नचिह्न सेहो ठाढ़ करैत अछि। ई पोथी फिल्म निर्माणक कथेगाथा नहि अछ, एहिमे एकर अतिरिक्तो बहुत किछु अछि। जेना एहि पोथीक संबंधमे स्व. रामलोचन ठाकुरक लिखल अंश अछि "अबारा नहितन एक अबाराक कथागाथा थिक। अद्भुत, अभिनव, अविस्मरणीय कथागाथा। अफसोस जे मिथिला-मैथिलीमे एहन दोसर अबारा नहि भेल। जँ दस-बीसो टा एहन अबारा भेल रहैत तँ निश्चित आइ मिथिला-मैथिलीक दोसर रूप रहितैक"। उपरोक्त पाँति मिथिला-मैथिलीक सौंबंधमे बहुत बात उजागर करैत अछि। उजागर करैत अछि मैथिलक स्वाभाव, स्वार्थपरता। मैथिली नामधारी संस्थासँ जुड़ल लोकक चरित्र। अपन मैथिल भाइ-बंधुक किरदानीक कथा कहैत उपन्यासकारक शब्द मात्र शब्द नहि रहि जाइत अछि बल्कि चित्रमय संसारक खंड-खंड झाँकी बनि जाइत अछि। वचनवीर ओ क्रियाहीन समाजक कथा बनि जाइत अछि। फिल्म निर्माणक पश्चात वितरक नहि भेटबाक कारण नगरे-नगर बौआइत, मान-अपमानक मधुर-तिक्त घोंट पिबैत निर्माताद्वय महंथ मदनमोह दास ओ केदारनाथ चौधरी। सभटा बर्दास्त करैत अंतमे अबाराक उपाधि। परिणाम स्वरूप वितरककेँ अभावमे बनल फिल्म डिब्बामे बंद कऽ अपन जीवनयापन लेल विदेशक रुख एवं महंथ मदनमोहन दासक अपन महंथानक कार्यमे लागब। पोथीक निम्न पाँति हृद्यकेँ मथि दैत अछि-" मैथिल समाजक सर्वश्रेष्ठ उपाधि 'अबारा नहितन' ग्रहण कऽ आ अपन मान-सम्मान एवं अभिमानकेँ थुर्री-थुर्री करैत दिनक लगभग दू बजे आपस होटल पहुँचल रही। हम आ मदन भाइ भोजन कयल आ चुपचाप अपन बेडपर पड़ि रहलहुँ- जाहि कर्मकेँ केलासँ मोनकेँ दुख, अशांति आ शोक भेटैत छै से पाप भेल। जाहि कर्मकेँ केलासँ मोनकेँ सुख, शांति आ तृप्ति भेटैत छैक से पुण्य भेल। अएँ यौ केदार भाइ, हमरा दूनूक फिल्म निर्माणक काज पाप भेलै कि

पुण्य? मदन भाइक प्रश्न सटीक छल।

केखनो कऽ विचार करैत छी तँ लगैत अछि कि फिल्म निर्माता द्वय समयसँ आगू छलाह वा जे सूतक समाजकेँ जगेबाक प्रयास करैत छैक ओकरा कोपभाजन हुअए पड़ैत छैक। आइ फिल्म निर्माण आ टी.भी सिरियकक क्षेत्र थोड़े गति पकड़लक अछि। मुदा की तात्कालीन मिथिलाक सुतल समाज एकरा स्वीकार करबाक लेल तैयार छल जे मैथिलीमे फिल्मक निर्माण भऽ सकैत छै। हरिमोहन बाबूक नायिका बुच्ची दाइ चुप जकाँ ई समाज चुपचाप आँखि मुनने छल। १९६५-६६ मे बनल सिनेमाकेँ पर्दापर अबैत बीस साल लागि गेल। ताहि लेल रवीन्द्रनाथ ठ़ाकुर जे ओहि फिल्मक गीतकार छथि, हुनक प्रयास सराहनीय अछि। इतिहास भरल-पड़ल एहन उदाहरणसँ जे समयसँ पूर्व कएल गेल काजकेँ प्रसंशा भेटबाक बदला निंदा भेटल अछि। गुरूदत्तजीक फिल्म "कागज के फूल" बादमे प्रसंशित आ चर्चित भेल मुदा प्रारंभमे उपेक्षाक शिकार भेल। नोबेल केर हकदार देशमे पहिल टेस्ट ट्यूब बेबीक जनक डा. सुभाष मुखोपाध्यायकेँ बादमे अंतरराष्ट्रिय स्तरपर मान्यता भेटलनि मुदा अपना समयमे भेटलनि तिरस्कार आ मृत्यु। मुदा एहिमे दोष केकर? यद्यपि समय एलापर समाज मान्यता दैत अछि। आइ मैथिली फिल्म निर्माणक दिशामे निर्माताद्वयक देन अद्वितीय अछि।

विदेह साहित्य सम्मान समारोहक अवसरपर तीन दिन तक हुनक संग-साथ भेटल। जतए मैथिली पोथी लेखक मात्र दू सए-तीन सए प्रति छपबैत छथि ओतए हिनक उपन्यासक कए-कए टा संस्करण निकलल। केदार बाबूक साहित्य हुनक पाठकक भरोसे जनप्रिय भेल अछि। हुनक सुधी पाठक हुनक उपन्यासक कथ्य एवं कथा कहबाक जिज्ञासु प्रवृति (आगू की हेतै)क कारणे हुनकासँ एकटा आत्मीयता स्थापि कऽ लैत अछि। इएह हुनक साहित्यक विशेषतो अछि।

एक दिन हम हुनका पुछने रहियनि- अहाँक पोथी सभपर पाठक आ लेखक लोकनिक केहन प्रतिक्रिया? हुनक जबाब छल-पाठकक प्रतिक्रियाक फल थिक पोथीक एकसँ बेसी संस्करण मुदा लेखकक प्रतिक्रया बड्ड क्रूर। एहि संदर्भमे एकटा प्रसंग मोन पड़ैत अछि जे हुनकहिसँ सुनने रही- एक बेर अमरजी (चंद्रनाथ मिश्र 'अमर') संवाद पठेलनि जे हम अहाँसँ भेंट करए चाहैत छी। हम हुनका ओतए गेलहुँ। ओ साक्षात कल जोड़ि कहलनि "अहाँक लेखनक आगू हमर लेखन फूसि"। एते कहैत ओ अचानक चुप भऽ गेला आ हमरा दिस स्मित मुस्कानक संग तकैत रहलाह। ओहि नजरिक अनुभूति हमरा आइयो भऽ रहल अछि।

युवावस्थामे लागल मैथिली प्रेमरोग विदेशसँ आपस भेलाक बाद एकटा लेखककेँ रूपमे प्रस्फुटित भेल। परिणामतः २००४ आएल हिनक पहिल उपन्यास 'चमेली रानी'। २००६ मे दोसर उपन्यास 'करार'। चमेली रानीक दोसर भाग 'माहुर' प्रकाशित भेल २०१० मे। चारिम 'हीना' २०११ मे आ २०१२ मे 'अबारा नहितन'। सभ पोथी पाठक हाथों हाथ लेलनि। प्रबोध साहित्य सम्मानसँ सम्मानित केदर बाबूक छोट-छोट वाक्य, संक्षिप्त विश्लेषण आ पारदर्शी कथा भाषा पाठककेँ बान्हने रहैत अछि। हि८नक प्रतिभा, प्रतिबद्धता, मातृभाषक प्रति समर्पण, जनप्रियताक एहिसँ पैघ प्रमाण की भऽ सकैत अछि कि केदार बाबू मैथिली पाठकक मोनमे बसै छथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अशोक-संपर्क-8986269001

केदार नाथ चौधरीक उपन्यास

मैथिलीमे उपन्यासक उदय संग एकटा विशेष बात ई भेल जे मात्र मनोरंजन लेल एहिठाम उपन्यास नहि लिखल गेल। ओकर एक समाजिक संपृक्ति वा उद्येश्य अवश्य रहैत छल। पत्र-पत्रिको जे प्रकाशित हएब प्रारंभ भेल से कोनो व्यावसायिक हितकेँ देखैत नहि भेल। एकर एक प्रभाव अवश्य पड़ल जे पाठकक रुचिकेँ प्राथमिकता नहि भेटल। साहित्य संग समाज आ तखन पाठकक मनोरंजन तँ ओहिमे रहिते छल। मुदा फिल्मी पत्रकारिता सन सनसनीखेज, उत्तेजनापरक और चहटगर पत्रिका सन कोनो समानान्तर पत्रकारिता मैथिलीमे देखबामे नहि आओत। उपन्यासोमे देवकीनंदन खत्रीक 'चंद्रकान्ता' (१८८८) सन तिलस्मी आ ऐयारी बला उपन्यास समान्यतः नहि लिखल गेल जे पाठकक संख्या बढ़बैमे सहायक भेल हो। हरिमोहन झाक 'कन्यादान' (१९३३) उपन्यासक लोकप्रियताकेँ कियो नकारि नहि सकैत अछि मुदा ओहिसँ ओकर समाजिकता आ उद्येश्यकेँ, कलात्मकताकेँ पृथक करब संभव नहि अछि। तँइ मैथिलीमे गंभीर आ कलात्मक ओ लोकप्रिय उपन्यासकेँ भिन्न-भिन्न कोटिमे बाँटि देखब संभव नहि अछि। एहि भिन्नताक शुरूआत मुदा एकैसम शताब्दीमे आबि कऽ एहिठाम संभव भेल अछि।

हिंदी आ अन्य भाषा सभमे एहन लोकप्रिय कोटिक उपन्यासक अनेक रूप भेटैत अछि। जाहिमे प्रमुख अछि ऐयारी आ जासूसी उपन्यास, रहस्य-रोमांसक उपन्यास,प्रेमपरक उपन्यास, विज्ञान संबंधी उपन्यास, साहसिक अभियानपर आधारित उपन्यास, रोमांटिक ऐतिहासिक उपन्यास आ सेक्स तथा हिंसा बला उपन्यास। पश्चमी साहित्य सभमे तँ लोकप्रिय उपन्यास सभमे तँ अपार विविधता अछि। मैथिलीमे दोसर लोकक प्राणीक एहि धरतीपर जन्म लऽ ओकर क्रिया-कलाप, जीवनपर आधारित उपन्यास सेहो एकैसम सदीमे लीखल गेल अछि। श्याम दरिहरेक एहन उपन्यास सभकेँ एहि क्रममे देखल जा सकैत अछि। केदार नाथ चौधरीक उपन्यास सभ एहने लोकप्रिय उपन्यास सभ थिक जकरा खूब पढ़ल गेल चर्च-वर्च भेल।

हुनक पहिल उपन्यास 'चमेली रानी' (२००४) अपराधी आ राजनीति, भाषा-संस्कृति आदिक गठजोड़पर रोचक ढंगक उपन्यास अछि। पाठककेँ पढ़बामे खूब मोन लगैत छै। अपराधतंत्रक एक समानान्तर दुनियाँ समक्ष अबैत चल जाइत छैक। चमेली रानी संगठित रूपसँ डकैती करबैत अछि। ओ कनही मोदियाइन क बेटी थिक। चमेली दशमाक परीक्षा देने अछि। होस्टलमे रहि कऽ। कनही मोदियाइनक डेरा हाइवेपर रहैक। ओकरा ओहिठाम सभ चीजक इंतिजाम रहैक। माय के मृत्युक बाद बाद चमेली हाइवेपर नवका अड्डा बनेलक। अपराधक ओकर कारबार बढ़ैत गेलै। अपन तकनीकी संसाधनक बदौलति ओ पैघ-पैघ हाथ मारए लागलि। अपार रुपैया-सोना, डालर आदि जमा करैत गेल। प्रान्तक मुख्यमंत्री सेहो अपराधी रहथि। बादमे चमेली सेहो मिथिला-मैथिलीक राजनीति करैत समाज सेवाक बाना धऽ कऽ मुख्यमंत्री तककेँ चुनौती दिअ लागलि। मुख्यमंत्री बनबाक योजना बनबए लागलि। बहुत रास असंभव संयोगपर आधारित घटना सभहक समावेश, चमत्कारिक संरचनाक संग ई उपन्यास मनोविलास लेल बुनल काल्पनिक उपन्यास थिक। ई उपन्यास पूर्वक मैथिली उपन्यास सभक अपेक्षा नव विषयपर लिखल

गेलाक कारणे पाठक बीच खूब पढ़ल गेल। चौधरीजीक दोसर उपन्यास 'करार' (२००६) भूत-प्रेत, प्रेतयोनिसँ मुक्ति, ईश्वरीय सत्ताक जयघोष, तंत्र-मंत्रमे आस्थासँ भरल उपन्यास थिक। दरभंगामे आएल बाढ़िसँ शुरू भेल ई उपन्यास एक मृत व्यक्तिक अपन जीवन-कथाकेँ अमर बनेबाक लालसापर अन्त होइत अछि। रहस्य-रोमांच उतपन्न करबाक लेल ओ मृत व्यक्ति पंडित राजशेखर दत्तक देह धारण कऽ अबैत छथि आ अपन कथा सुनबैत तेरह सय बर्ख पुरान राजा-रानी, राजकुमारी, कपालिक आदिक प्रेम ओ घृणाक गाथा सुनबैत छथि। एहि गाथामे पियासल, अतृप्त भूत-प्रेत बनल लोक सभकेँ प्रेत योनिसँ मुक्तिक विवरण अछि। एहि उपन्यासमे त्याग-मोक्ष, मृत्युक गप्प, आत्मा-परमात्मा, पांडित्य-उपदेश आदि सभ किछु भेटैत छैक। उपन्यासकारक मनोरथ छनि जे पाठक एकरा रुचिसँ पढ़थि, चर्च करथि। से पाठक सभ उपन्यास पढ़लनि अछि। एहि उपन्यासमे जे दू-चारि टा जीवित मनुक्ख अछि तकरा चकविदोर लगैत छैक, पंडित ककाक कथा सुनि कऽ। पंडित कका कथो सुनबैत छथि आ संगमे राखल रोटी-तरकारी सेहो खुआबैत छथि। बादमे पता चलैत छैक जे पंडित कका तँ बहुत पहिने मरि गेल छथि। जे कथा सुनौलक से हुनक भूत छल।

हम हिनक तेसर उपन्यास 'माहुर' (२००८) एखन धरि नहि पढ़ि सकल छी। तँइ ओहिपर किछु कहब संभव नहि अछि। चारिम उपन्यास 'हीना' (२०१३) अंतर्जातीय आ अंतरधार्मिक विवाहक कथानकपर आधारित अछि। संगहि गाममे अबैत समाजिक-आर्थिक प्रगति आ ईर्ष्या-द्वेष, जातीय-भेद-भावक यथाशक्ति सेहो समक्ष अनैत अछि। उपन्यासमे सभसँ पैघ लोक महावीर यादवक बालक ठक्कन यादव छथि। लोक हुनका मालिक बाबा कहैत अछि। हुनकर आश्रम ओ सदाशयतामे संपूर्ण गाम अपन दुख-अभावसँ फराकति पबैत अछि। ओ प्रभावशाली लोक छथि। गाममे इन्दौर शाहरक लग रहनिहार गायक निसार हुसैन खाँसँ ठक्कन यादवक दोस्त शिव कुमार मिश्र

संगीतक शिक्षा ग्रहण करैत छथि। खाँ साहबक पौत्री हीनासँ हुनकर विवाह होइत छनि। ई बात बुझि हुनकर पिताक मृत्यु भऽ जाइत छनि। हीना साधुपुरामे आबि कऽ रहैत छथि। सभ हुनका हीरा मौसी कहैत छनि। शिव कुमार सेहो शीबू बाबा बनि गाममे एकदम एकांतमे रहैत छथि। मालिक बाबाक पौत्र गंगाकेँ दलित कन्या मंगलीसँ प्रेम होइत छनि। दूनू विवाह करए चाहैत अछि। मुदा गामक लोक एहिमे षड्यंत्र कऽ विवाह नहि हुअ दिअ चाहैत अछि। मालिक बाबा विवाह चाहैत छथि मुदा हुनक मृत्यु भऽ जाइत छनि। हीरा मौसीक प्रयाससँ गंगा आ मंगलीक मनोरथ पूर्ण होइत अछि। जहिना एक दिन पिताक मृत्यु देखि शिवकुमार विक्षुब्ध भेल रहथि तहिना गंगा आ मंगलीक विवाहमे अड़चन देखि नहि सकला शिवकुमार, गंगा आ हीना (हीरा मौसी) गाम छोड़ि दैत छथि। मघली आ गंगा हीरा मौसीक संपतिक वारिस भऽ जाइत अछि।

केदार नाथ चौधरीक पाँचम उपन्यास 'अयना' (२०१८) मैथिलीक कथा-कविताक पाठककेँ तकबाक एक यात्रामे शून्यसँ महाशून्य धरि पहुँचब थिक। अहू उपन्यासमे भूत-प्रेत, मुसलमान आतंकवादी आ ओकर व्यापार आदिक वर्णन अछि।

एक उपन्यासकार एहि खोजमे दिल्ली धरि जाइत छथि। विभिन्न लोकक मत सुनैत छथि, सरकारी साहित्यिक संस्थाक यथार्थसँ अवगत होइत छथि आ अंततः करुणासँ विलगित होइत छथि। उपन्यास कहैत अछि जे मनुक्खक समग्र जीवन एक अयना थिक। अयनामे अपन छविकेँ देखैत-देखैत मनुक्ख अपन आयुकेँ शेष कऽ लैत अछि। मुदा किछु एहनो भाग्यशाली लोक छथि जे अयनामे अपन छविक अतिरिक्त सृष्टिकर्ताक अद्भुत देखैत छथि, विभिन्नतरहक चमत्कारकेँ देखैत छथि आ कखनहुँ काल भगवानसँ साक्षात्कारो कऽ लैत छथि। उपन्यासमे अवकाश प्राप्तिक बाद एक सुविधा

संपन्न व्यक्ति मातृभाषा मैथिली दिस आकृष्ट होइत छथि। उपन्यासक रचना करैत छथि। तकरा बाद साहित्य क्षेत्रक आ समाजक यथार्थ सभसँ परिचित होइत छथि। पाठकक समस्याकेँ, पाठकक अभावकेँ बूझि ओकर कारण तकबाक लेल हरान होइत छथि। एहि क्रमे मोहनाक कथा कथा आएल अछि जे अपन बअिनिक रक्षा करैत मारल जाइत अछि। साहित्य आ समाजक खोज करैत उपन्यास अन्ततः जिनगीक शून्यसँ साक्षात्कार करैत अछि। से साक्षात्कार शून्यसँ महाशून्य धरि पहुँचि जाइत अछि।

जेना कहल केदार नाथ चौधरीक उपन्यास सभ एक लोकप्रिय उपन्यास अछि। एहन उपन्यास सभक समग्र साहित्य संसारमे अपन फराक अस्तित्व होइत छैक। तखन ओ नीक अछि अथवा बेजाए, आवश्यक अछि वा अनावश्यक, समाज लेल हानिकारक अछि वा लाभकर से प्रश्न अवश्य विचारणीय अछि। पँजीवादी समाजमे एहन उपन्यासक अपन खास महत्व होइत छैक। लोकप्रिय उपन्यासमे जे अनेक तत्व होइत छैक तकर रचनात्मक उपयोग श्रेष्ठ उपन्यासकार सेहो करैत छथि। श्रष्ठो उपन्यासमे एहन उपन्यासक कथा शैली आर शिल्प-संरचनाक भऽ सकैत अछि। एहन उपन्यास सभ थिक जखन राजनीति आ अपराधकेँ बिलगाएब कठिन भऽ गेल छै। जखन लोक वर्तमानसँ कटि कऽ अतीतमे आश्रय ताकए लगैत अछि। अतीत महत्वपूर्ण लागए लगैत छैक। प्रत्यक्षसँ बेसी परोक्षमे विश्वास करए लागल अछि। रहस्य-रोमांच, भूत-प्रेत पसिन्न पड़ए लगैत छैक। एहन उपन्यासक लोकप्रियता एहन समयक एक यथार्थ थिक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल"-संपर्क-8789616115

चुम्बकीय लेखनक दृष्टान्त "अबारा नहितन"

हम मैथिली फिल्म "ममता गाबए गीत" नहि देखि सकल छी, किन्तु पोथी "अबारा नहितन" पढ़िक" फिल्म देखि सकबाक आनन्द प्राप्त भ" चुकल अछि। आदरणीय केदार नाथ चौधरीजीक पोथी "चमेली रानी" हम अठारह बरख पहिने पढने रही। ओ पोथी पढ़िक" चौधरीजीक लेखनक जादूसँ परिचित भेल रही। आइ ई पोथी पढ़िक" ओहूसँ बेशी आनन्द आएल। हमरा लगैए जे जिनका ई पोथी पढबाक सौभाग्य प्राप्त भेल हेतनि हुनको हमरे जकाँ अनुभव भेल हेतनि।

चौधरीजी समस्त मैथिली प्रेमीक हृदयमे अपन महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त क" चुकल छथि। ई पोथी सेहो सभ मैथिली प्रेमीक सोझाँ सभ दृष्टिसँ विशिष्ट स्थान पाबि चुकल अछि। ई पोथी एकटा इतिहास सेहो अछि जाहिमे देशमे स्वतंत्रता प्राप्ति बाद समाजमे आएल उथल-पुथल, चीन द्वारा भारतपर आक्रमण आ ओकर परिणाम, पाकिस्तान द्वारा भारतपर आक्रमण, भारतक जीत, ताशकंद समझौता,प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्रीक मृत्यु, सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक परिवर्तन, मिथिलाकें एक सूत्रमे जोड़बाक लेल मिथिलाक्षर अभियान आ मिथिला राज्यक सपना, मैथिलीकें संविधानमे स्थान दिएबाक लेल आन्दोलनक सुगबुगाहटि, गाम, कलकत्ता आ

मुंबई स्थित मैथिल लोकनिक दशा आ दिशा आदिक बहुत पारदर्शी चित्र प्रस्तुत कएल गेल अछि।

छोटका कका अर्थात कौआली बाबू,टने झा, बौआ अर्थात नारायणजी चौधरी,नेताजी,अमरनाथ चौधरी "दीपक",बैद्यनाथ बाबू,बाले बाबू,टमाटर जी,मदन भाई,भानु बाबू,रवींद्र जी,श्याम शर्मा,सुमन कल्यानपुर,गुजराती मुसलमान हिरोइन अजरा,कमलनाथ,बिच्छू जी,शिव कुमार चौधरी,टंच जी,खगेन्द्र जी,प्यारे मोहन,जलील,लता बोस, प्रसाद जी,हीरो त्रिदीप कुमार, डायरेक्टर सी. परमानन्द, मुंबइक चीफ ड्रग कंट्रोलर,इनकम टैक्स कमिश्नर,कोलकाताक यदुवीर बाबू,तिरपित बाबू,बाबू साहेब चौधरी,रतन बाबू,मैथिल बन्धु,मैथिल विभूति,मैथिली सखा जी,बिड़लाजी, छोटा बिड़ला, दरभंगाक डा.शंभूनाथ मिश्र,मैथिलीक प्राध्यापक उमा बाबू आ पत्रकार विजय कुमार मिश्र आदि विभिन्न स्वभाव आ विभिन्न किरदार बला व्यक्ति सभक माध्यमसँ ई पोथी फिल्म "ममता गाबय गीत"क निर्माणक इतिहास प्रस्तुत करैत अछि।

पोथीक भूमिकामे भीमनाथ बाबू एकदम ठीक कहैत छथि जे केदार बाबूक चुम्बकीय लेखन,वर्णन शैलीक मधुरता एकरा अतिशय मनलग्गू उपन्यास बना देने अछि। कौआली बाबूक विषयमे कहैत छथि : कका मैट्रिकमे तीन बेर फेल केलाक बादो राजनीतिक चासनीमे डुबाओल भविष्यक इमिरतीकें चूसि रहल छलाह आ प्रसन्न छलाह। टने झाक कहब छलनि जे टीक कटेनाइक अर्थ भेल विचारमे प्रगति आनब। नारायण चौधरी पढ़ाइ नहि छोड़बाक सलाह दैत छथिन। देशक स्थितिपर टिपण्णी करैत कहैत छथि : प्रधान नेता देशक छोट-छोट समस्या सभसँ विरक्त संसारक गुरुपद प्राप्त करबाक लेल व्यग्र छलाह। वैद्यनाथ बाबू मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक विकास लेल मिथिलाक्षरक प्रचार-प्रसारकें आवश्यक बुझैत छथि। टमाटरजी मिथिला राज्यक विचार

रखैत छथि किन्तु अखबारमे जानकी नंदन सिंहक नाम देखि तमसा जाइत छथि। मदन भाइक कहब छनि जे मिथिलाक पांडित्य फूल नहि काँट बनि गेल अछि, एकटा संकुचित सोच,एकटा निरर्थक गौरवसँ मुक्त कर" पड़तैक, एक ख़ास जातिक एकाधिकारकें तोड़" पड़तैक। ओ भाषाक विकासमे फ़िल्मक भूमिकाकें सभसँ महत्वपूर्ण मानैत छथि, ओ कहैत छथि जे फिल्म बनलासँ भाषाक पहिचान उजागर हेतै,मिथिला आलस्यमे ओंघरायल अछि,उपजाति एवं परम्परा एकरा दरिद्र बनौने छैक आ सभटा दुखक निदान फिल्मक माध्यमे कएल जा सकैत अछि। मदन भाइ कोनो धार्मिक फिल्म बनाबक विचार रखैत छथि आ फिल्मक लेल नोकरी छोडिक" आएल एहि पोथीक लेखकक संग मुंबई पहुँचैत छथि।

मुंबईमे जिनकासँ सहयोग लेब" चाहैत छथि ओ स्वयं पचास प्रतिशतक हिस्सेदारी आ अपन पसंदक सामाजिक कथापर आधारित फिल्म बनेबाक लेल हिनका सभकें विवश क" दैत छथि। भानुजीक कहब छनि जे ई फिल्म सम्पूर्ण मिथिलामे समरसता अनबाक लेल क्रांतिकारी सिद्ध हएत। मुंबईमे चीफ ड्रग कण्ट्रोलर आ इनकम टैक्स कमिश्नर दुनू गोटे दू मैथिल समुदायक नेतृत्व करैत छलाह। ओहि सन्दर्भमे कहल गेल अछि जे दू फाँक भेल मैथिल समुदायक एकहिटा कार्यक्रम छलै : अपन भाषा अर्थात मैथिली भाषामे एक-दोसराकें गारि पढ़ब। पोथी पढैत काल बेर-बेर हरिमोहन बाबू मोन पड़ि जाइत छथि। फ़िल्मक कथामे मदन भाइ आ भानू बाबूक विचारमे अन्तर स्पष्ट करैत कहल गेल अछि : मदन भाइक कथनक एकोटा शब्द भानू बाबूक कर्ण-यन्त्रमे प्रवेश नहि क" रहल छलनि। आगाँ कहैत छथि, चूड़ा-दही-चीनी भोजन करय गेल रही। आगूमे पोलाव-विरयानी-मुर्ग मोसल्लम परसि देल गेल। महंथ जी अर्थात मदन भाइक संग रहैत छलाह, हुनकास चौल करैत लिखैत छथि : अजराकें देखिक" मदन भाइक कंठसँ हिन्दी कविता धाराप्रवाह निकल" लागल। "मदन भाइ,अजराक सौन्दर्य अहाकें निर्गुणसँ सगुन बना

देलकए।"

राजनगरमे सूटिंगक तैयारीक सम्बन्धमे लिखैत छथि :

"फिल्म निर्माणमे मादक द्रव्यक ओहने महानता रहय जेना पूजाक समय गंगाजलक। बिच्छू जी नित्य एक कनस्तर ठर्रा पहुंचाबैक कठिन दायित्व अपना कन्हापर लदलनि।" खगेन्द्रजीकें हिरोइन अजराक मैथिली शब्द सबहक शुद्ध उच्चारण करबा मे मदति करबाक भार दैत कहलखिन, "अहाँक कर्मइन्द्री तृप्ति प्राप्त नहि करत मुदा पाँचो ज्ञानेन्द्रीय असीम सुखक भोग अबस्से प्राप्त करत तकर हम विश्वास दिअबैत छी।" खगेन्द्रजीक चित्रण बहुत सुन्दर भेल अछि। ओ कुरता,बन्डीमे आएल छलाह। सेनुरक ठोप केने रहथि, तुलसीक माला छलनि। किछु दिनक बाद हुनक वर्णन करैत लिखैत छथि : पाउडरसँ पोतल दुनू गाल,सेनूरक ठोप निपत्ता, टीक नदारत। मुँहक महक सिगरेटमे गाजाक गंध भरल छलनि। प्यारे मोहन घीचैत ल" जा रहल छलनि मुदा खगेन्द्रजीक चालिमे श्री स्टेप्स डांस बला लचक आ थिरकन साफ-साफ देख"मे आबि रहल छल। ओरिजिनल खगेन्द्रजीक कतहु अता-पता नहि। ""फिल्म मण्डली लेल चाननक गमक बला ठर्रा कनस्तरमे अबैत रह्य। खगेन्द्रजी भांग,गाजा एवं ठर्राक त्रिवेणीमे डुबकी लगबय लगलाह। "कोलकातामे गिरीश पार्कमे सभामे एक गोटे जे हिनका सबहक परिचय देलखिन ओहि पर हिनक टिप्पणी छनि : ओ हमर आ मदन भाइक परिचय एतेक विस्तारसँ देलनि जे परिचयक बहुतो अंश हमरो दुनू गोटेकें नहि बुझल रहय। कोलकातामे जे मैथिल सभ मदति करबाक लेल सोझाँ एलखिन हुनका मैथिल रत्न, मैथिल बन्धु,मैथिल विभूति,मैथिल सखा, बिड़ला,छोटका बिड़ला आदि नामसँ स्मरण करैत छथि,हुनका सबहक वर्णन बहुत आकर्षक भेल छनि। ओतहि कोना आ के "अबारा नहितन" कहलकनि, से अवश्य पढ़क चाही।

कोलकातासँ 16 मइ 1966 क" अमेरिका चल जाइत छथि आ सितम्बर 1977 मे घुरैत छथि, 2001 मे लहेरियासरायमे बंगाली टोलामे "हिडेन कॉटेज"मे रहय लगैत छथि। अही ठाम पुनः मदन भाइसँ भेंट होइत छनि आ पता चलैत छनि जे रवीन्द्रजी महंथजीसँ अधिकार प्राप्त क" क" फिल्म "ममता गाबय गीत" पूर्ण केलनि आ पटना,कोलकाता आ जमशेदपुरमे प्रदर्शन सेहो करौलनि। पोथीक अन्तमे चौधरीजी कहैत छथि, "एकटा जिज्ञासा रहिए गेल जे हम आ मदन भाइ मैथिल समाजसँ परिचित भेलहु ? मदन भाइ त संसार त्यागि देलनि, हम प्रतीक्षामे छी।"

हमरा जनैत चौधरीजीकें एहि जिज्ञासाक समाधान भ चुकल छनि।

सभ मैथिल जे हिनक पोथी पढलक जे जनैत अछि जे केदार बाबूक अपन जन्मभूमिक प्रति प्रेम, भाषा-साहित्य-संस्कृतिक चेतना एवं तकर उन्नति-विकासक चिन्ता अतुलनीय अछि। हिनक चिन्तनमे मिथिला-मैथिली बसैत अछि जे आखरक रूप ध" कागजपर उतरि लोककें अपना दिस आकर्षित करैछ। हिनक भाषाक सहजता-सौन्दर्य आ कहबाक अभिनव क्षमता पाठककें बन्हने रहैत अछि। तें कोनो दोकानमे हिनक पोथीक छुहुक्का उड़ि जाइत अछि। "वैदेही सम्मान (2013)" आ "प्रबोध साहित्य सम्मान (2016)" सेहो हिनक मैथिली साहित्य सेवाक गुण गाबि चुकल अछि।

हिनक मित्र मदन भाइ अर्थात महंथ मदन मोहन दास सेहो हिनक लेखनी द्वारा मैथिल सभक मोनमे नीक स्थान बना चुकल छथि। भरिसक ओ पहिल आ अंतिम महंथ छलाह जिनका मोनमे मिथिला आ मैथिलीक लेल फिल्म निर्माणक बात ध्यानमे एलनि आ फिल्म निर्माणक अनुभव आ ज्ञान नहियो रहैत अपन लक्ष्य लेल मिर्जापुरसँ मुंबइ, मुंबइसँ पटना,राजनगर, फेर राजनगरसँ मुंबइ, मुंबइसँ कोलकाता दौड़ैत रहलाह आ अन्तमे फिल्म बनि

जाइ ताहि उद्देश्यसँ रवींद्र जीकेँ अधिकार सेहो द" देलखिन। ओ सदेह नै छथि, किन्तु हुनक मित्र आदरणीय केदार नाथ चौधरी हुनका "अबारा नहितन" पोथीक माध्यमसँ लोकक हृदयमे स्थापित आ प्रतिष्ठित क" चुकल छथिन। एहि पोथीक कथानकपर कियो फिल्म बनब" चाहथि त फिल्म सार्थक आ लोकप्रिय भ" सकैत अछि आ ओकर मुख्य भूमिकामे रहताह महंथ मदन मोहन दास।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

योगेन्द्र पाठक "वियोगी"- संपर्क- 9831037532

अपरिचित साहित्यकारक नुकाएल गप

हिडेन कॉटेज अर्थात नुकाएल घर। लहेरियासराय के बंगालीटोला मे सत्ते ई पता ताकब आसान नहि छैक कारण मुख्य सड़क के सामनेक भाग मे जे घर छैक ओकर पाछू मे ई छोट सन बंगला बनल छैक, अपन नाम कें सार्थक बनबैत, जकर अपन अलग गेटो नहि छैक। कोनो बात नहि। मुदा आश्चर्य तखन होएत जखन बुझबैक जे एहि हिडेन कॉटेज मे रहनिहार व्यक्ति सेहो, जे मिथिला-मैथिलीक प्रति तन-मन-धन सँ आजीवन समर्पित रहल छथि, प्राय: ओतबे गुमनाम छथि, अथवा किछु वर्ष पूर्व तक गुमनाम छलाह।

चमेलीरानी सन उपन्यास, जकर चारिम संस्करण मैथिली भाषा मे एकटा कीर्तिमान स्थापित करैत पन्द्रह वर्षक भीतरे छपि गेलैक, के रचयिता श्री केदारनाथ चौधरी कें मैथिली साहित्य जगत मे बहुत कम लोक चिन्हैत छलनि आ एखनहु प्राय: सएह स्थिति छैक कारण ओ मुख्यधाराक साहित्यकारवर्ग मे चर्चाक विषय नहि रहलाह। जखन ओ मैथिली भाषाक उद्धार लेल सिनेमाक कल्पना केलनि तखन कियो चिन्हलकनि नहि। मिथिलाक बुद्धिजीवीवर्ग लेल ई प्रयास कोनो अर्थे नहि रखैत छलैक। तें चमेलीरानीक प्रकाशन तक ओ मैथिली साहित्याकाश मे उगले नहि छलाह। छोट-छीन लेख, कथा आ कविता

अदि लीखि कए पत्र-पत्रिका मे ओ छपौलनि नहि, कवि सम्मेलन आदि मे सम्मिलित भेलाहे नहि आ जिनगीक अधिकांश भाग विदेश मे बितौलनि तऽ लोक कोना चिन्हितनि ?

मिथिला मे रहनिहार लोक मैथिली बजिते छल, एखनहु बजैत अछिए, मुदा कोनो एकटा तत्व छलैक जकर अभाव मे लोक कें अपना भाषा पर गर्व नहि भऽ रहल छलैक। ओ तत्व छलैक भावनात्मक एकता। कवि चूड़ामणि मधुपजी एहि तत्व कें चिन्हलनि आ हिन्दी सिनेमाक स्टाइल मे मैथिली लोकगीतक रचना करए लगलाह। कोनो आश्चर्य नहि जे ई गीत सब अत्यन्त लोकप्रिय भेलैक आ पछिला शताब्दीक साठिक दशक मे इसकुलिया बच्चा सँ लऽ कए घसवाहिनी तक के कंठ सँ ई गीत सब चहुँदिसि मुखरित होमए लगलैक। एहि गीतक माध्यमे पहिल बेर बुझेलैक जे मिथिला मे भाषाक लेल भावनात्मक एकता आनल जा सकैत छैक। एकर आगू सिनेमाक माध्यमे मैथिली भाषाक विकास, राष्ट्रीय पटल पर प्रचार आ भावनात्मक एकताक विस्तार केदारबाबूक मौलिक सोच छलनि। मुदा मैथिल समाजक ई दुर्भाग्य जे हुनकर एहि सोच कें अंगीकृत नहि केलक।

मैथिलीक पहिल सिनेमाक सूत्रधार रहितहुँ "अवारा नहितन" के उपाधि सँ विभूषित केदार बाबूक रचना दर्जनो मे नहि छनि, आङुर पर गनैबला - चमेलीरानी, करार, माहुर, हीना, अवारा नहितन आ अन्त मे अएना, सबटा उपन्यासे। मुदा एहि सब रचना मे एकटा समान गुण छैक जे कोनो किताब उठा लेब तऽ ओ मस्तिष्क मे लस्सा जकाँ सटि जाएत, अर्थात जाबे ओकरा समाप्त करबैक नहि, चैन नहि भेटत। "रजनी-सजनी"क तर्ज पर साधारणत: लिखए जाए बला उपन्यासक विपरीत एहि छबो कृति कें हरेक पेज, हरेक पाराग्राफ मे एतेक जिज्ञासा भरल छैक जे बिना आगू पढ़ने आ खतम केने उपाय नहि। आ यदि बिना खतम केने राखि देलियैक तऽ निन्न मे ओहि

उपन्यासक पात्र सब सपना मे आबि ततेक ने उत्पात करत जे फेर उठि कए पढ़नहि कुशल।

चमेलीरानी जासूसी ढंगक उपन्यास छैक जाहि मे रॉबिन हुड सदृश चरित्र लऽ कए खिस्सा बूनल गेल छैक। मिथिलाक समस्या आओर ओकर समाधान हमेशा लेखकक दृष्टिपटल पर बनल छनि। जन आन्दोलन द्वारा राजनीतिक परिवर्तन आनब आ चमेलीरानी कें मुख्यमंत्री बनाएब एकटा समाधान बताओल गेल अछि। मिथिला राज्य आन्दोलन लेल सेहो लेखक सजग रहल छथि आ ओहि मे मुख्य बाधक तत्वक विश्लेषण भावनात्मक एकताक अभावक रूप मे देखैत छथि। लेखक एहि सपना कें मैथिलीक अखबारक सफलता सँ जोड़ैत छथि। चमेलीरानी उपन्यासक कथा सम्पन्न नहि भेल छलैक आ लेखक कें ओकर कड़ी मे "माहुर" लिखए पड़लनि।

हीना मैथिली साहित्यक प्रेमकथा क्षेत्र मे अद्वितीय अछि। एहि उपन्यास मे दूटा अनुपम प्रेम कथाक चर्चा भेल छैक - एक तऽ इरानी मूलक मुसलमान कन्या हीना आ साधूपुराक एकमात्र ब्राह्मण परिवारक गायक युवक शिवकुमार मिश्र के बीच आ दोसर ओही गामक एकमात्र धनीक व्यक्ति ठक्कन यादवक पौत्र गंगा आ चमार जातिक सुन्नरि कन्या मंगलीक बीच। दूनू प्रेम अपना तरहें अद्वितीय छैक। मैथिली मे सुच्चा प्रेमकथाक अभाव कें देखैत ई उपन्यास बहुत प्रशंसनीय भेल अछि।

"अवारा नहितन" कें संस्मरणात्मक उपन्यासक संज्ञा एही लेल देल गेल जे लेखक किछु नाम कें उजागर नहि केलखिन आ बदला मे दू-चारिटा काल्पनिक पात्र उतारि देलखिन। ओना हुनके शब्द मे, "एहि मे वर्णित सबटा घटना सत्य छैक।" माने पात्रक नामेटा बदलल गेलैक, हुनका द्वारा कएल काजक वर्णन अक्षरशः ओहिना लीखल छैक। एकरा पढ़ला सँ स्पष्ट होइत अछि जे लेखक बहुत कमे वयस सँ मिथिला-मैथिलीक उद्धार लेल समर्पित छलाह, एक

हिसाबें बताह छलाह। जे कोनो मार्ग भेटलनि, तकर अनुसरण केलनि, यद्यपि नीक मार्गदर्शक के अभाव मे से सम्भव नहि होइत छलनि आ एहि मार्ग पर चलैत हुनकर बहुत रास सम्पत्ति बोहा गेलनि। जाहि अवस्था मे लोक नीक सरकारी नोकरीक जोगार करैत अछि आ स्थायित्वक जिनगी जीबाक मार्ग प्रशस्त करैत अछि ओहि वयस मे ई बम्बइ के गली-कूची मे बौआ रहल छलाह अपन अभिन्न मित्र महंथ मदन मोहन दासक संग। समाज सँ सबतरि दुतकारल गेलाक बाद हारि कए ई अमेरिका चल गेलाह। ने सिनेमा बनल आ ने मैथिलक भावनात्मक एकता मे कोनो पैघ परिवर्तन भेल। उनटे भीन-भिनाउज होमए लागल। सीताक देल सराप - "गृहे शूराः रणे भीताः परस्पर विरोधिनः। कुलाभिमानो यूयं मिथिलायां भविष्यथ॥" सँ सदा-सर्वदाक लेल अभिशप्त मैथिल समाज कें के बचाओत ?

मैथिलीक विकासक लेल सदैव तत्पर लेखककें बूझल छनि जे "हिन्दीए मैथिली भाषा कें थकुचने अछि।" ताहि कारण ओ साधूपुरा गाम मे होइत नाटकक भाषा कें लऽ कए बेस सजग छथि आ स्कूलक मास्टर दीनजीक माध्यमे लोक कें मैथिली भाषाक नाटक खेलेबाक आग्रह करैत छथिन। तहिना चमेलीरानी मे मैथिली अखबारक सम्पादक आ व्यवस्थापक कें मिथिला सँ दूरक क्षेत्र सँ अबितो मैथिली प्रेम मे सराबोर करौलखिन अछि आ अखबारक पाठक संख्या दू लाख सँ उपर पहुँचा देलखिन अछि।

हम खास कऽ कए चर्चा करब "करार" उपन्यासक। गूढ़ जीवन दर्शन सँ लबालब भरल एहि उपन्यास मे चहटगर फर्मूला टाइप वर्णन सेहो कम नहि छैक। एहि मे लेखक अपन दार्शनिक विद्वत्ता कें कन्हाइ मंडलक माध्यमे व्यक्त केलनि अछि। कन्हाइ मंडलक व्यक्तित्व अति असाधारण छनि। ओ सब किछु पर विजय प्रात केने छथि। विद्वान पात्र कन्हाइ मंडल कहैत छथिन, "मोन कें स्वतंत्र करबाक लेल आवश्यक अछि सब तरहक महत्वाकांक्षाक त्याग।

जकरा संतुष्टि भेटि गेलैक ओ बाजी जीति लेलक।" से तऽ बुझले अछि। पहिनहुँ पढ़ने छलहुँ, "गोधन, गजधन, बाजिधन, और रतन धन खान। जौं आबे संतोष धन सब धन धूरि समान।" मुदा से की भऽ पबैत छैक ?

कन्हाइ मंडल कें प्राण पर अधिकार प्राप्त भेल छनि। प्राण पर अधिकार प्राप्त भेने काल पर स्वत: अधिकार भेटि जाइत छैक आ तखन वयसक कोनो अर्थ नहि रहि जाइत छैक। लोक एक सौ वर्ष जीबए आ कि एक हजार वर्ष, ओ देखबा मे ओहने लागत। अन्तर बुझेबे नहि करत। कन्हाइ मंडल सर्वज्ञानी छथि तें ने पंडित राजशेखर दत्त कें बिना कोनो परिचय के चीन्ह जाइत छथिन। हुनका भूत भविष्य सब किछु बूझल छनि। हुनका इहो बूझल छनि जे पंडित राजशेखर दत्त हुनका गाड़ी पर किएक बैसल छथि आ हुनका माध्यमे विधाता कोन काज करौथिन। कन्हाइ मंडल मिथिलाक ओही विशिष्ट श्रेणी मे छथि जाहि मे जनक राज्य मे धर्मव्याध भेल छलाह, जिनकर कथा महाभारत के वन पर्व मे वर्णित अछि। धर्मव्याध मासु बेचैत छलाह आ कन्हाइ मंडल अपन बैलगाड़ी पर सामान उघि कए एक स्थान सँ दोसर स्थान पहुँचबैत छलखिन। एहि काज सँ दूनूक धर्म मे कोनो बाधा नहि अबैत छनि।

करार उपन्यासक विशेषता इएह जे एकर कथावस्तु एहि मर्त्यलोकक छैके नहि, ओ तऽ सूक्ष्म लोक मे बसल छैक। आब ई सूक्ष्म लोक छैक कतए तकरा बुझबाक लेल हम डूबि गेलहुँ विष्णु पुराण मे। एहि पुराणक द्वितीय अंशक सातम अध्याय मे वर्णन छैक विभिन्न लोक के, लोक माने मनुष्य नहि, संसार, जेना मृत्युलोक, स्वर्गलोक, यमलोक आदि। ओहि ठाम चर्चा भेटत ऊर्ध्वलोक के, जे आकाश मे लटकल छैक, जेना सूर्यलोक, जकरा सूर्यमण्डल कहल गेलैक, चन्द्रलोक जकरा चन्द्रमण्डल कहल गेलैक, एही प्रकारें अछि नक्षत्रमण्डल, बुध, शुक्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, सप्तर्षिमंडल, ध्रुवमंडल, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, सत्यलोक अर्थात ब्रह्मलोक आदि। मुदा एहि मे

सूक्ष्मलोक आ कारणलोक नहि भेटत। ओकरा बुझबाक लेल केदार बाबू रचित "करार" कें छानऽ पड़त। विष्णुपुराणक अनुसार त्रैलोक्य मे अछि भू (पृथ्वी), भुव:, स्व:, जाहि मे भुवर्लोक पृथ्वी आ सूर्यक बीच कतहु अवस्थित छैक आ स्वर्लोक सूर्य आ ध्रुव के बीच। हम कतेक बेर करार पढ़ि चुकल छी मुदा सूक्ष्मलोक आ कारणलोक कोन त्रैलोक्यक भाग छिऐक से बुझबा मे नहि आएल। लेखक अपन कथावाचक पण्डित राजशेखर दत्तक माध्यमे पाठक कें सूक्ष्म लोक, कारण लोक सब किछु बता देलखिन। आब पाठक जानथु। ओ वीर बाबू जकाँ बुझक्कर बनथु आ कि पंकज जकाँ अबूझ। यदि अपने सब बूझि गेलियै तऽ जीत गेलहुँ। से नहियो भेल तऽ एहि मे वर्णित नाओ परहक दृश्य जरूरे चहटगर लागत। एतबहुँ सँ भऽ गेल पैसा ओसूल।

सत्य की छैक ? ई जनबाक लेल हमरा निरक्षरासन करए पड़ल आ "रीडिंग बिटविन द लाइन्स" के लूरिक फेर सँ अभ्यास करए पड़ल। (एकर विशेषता लेल देखू निरक्षराचार्य लिखित "क्रिकेटक कोचक अवतार मे विद्यापति", मिथिला दर्शन, नवम्वर 2017)। शास्त्र-पुराण मे वर्णित विभिन्न लोकक अतिरिक्त साहित्यकार लोकनि एकटा आर लोकक निर्माण केलनि। ओ भेल स्वप्नलोक। असल मे करारक सबटा खिस्सा स्वप्नलोकक खिस्सा छिऐक। खिस्साक किछु अंश तऽ पंडित राजशेखर दत्त एहि लोक मे विचरण करैत देखलनि जखन ओ नाओ पर कने कालक लेल निन्न पड़ि गेलाह। मुदा शुरुएहि सँ लेखक जाहि तरहक वातावरणक श्रृष्टि करैत छथि, दरभंगा शहरक ओ भयंकर बाढ़ि देखबैत छथि आ ओहि विकराल समय मे मृतात्मा पंडित राजशेखर दत्त कें रोटी-तरकारी लऽ कए अवतरित करैत छथि से सब स्वप्नेलोक मे घटित घटना मानल जा सकैत छैक।

अन्त मे हम ओ बात सब लीख रहल छी जे लेखक लिखब छोड़ि देलनि। ई बात सब हम निरक्षरासन द्वारा हुनका मस्तिष्क मे ढुकि कए खोजल जे आन कोनो तरहें सम्भव नहिए होइत।

चमेलीरानी उपन्यासक अन्त नीक भेल छलैक। "चौबेजीक बन्द आँखि मे भूत आ भविष्य दूनू प्रगट भऽ गेल। भूत जे चाणक्यक साम दाम दंड आ भय नीतिक चलते नंद वंशक समूल नाश भेल, आ भविष्य जे चमेलीरानी मुख्यमंत्री पदक शपथग्रहण कऽ रहलीह अछि।" एहि मे लेखक स्पष्ट संकेत दऽ देने छलखिन जे आगू किछु हेतैक। तें पाठकवर्गक आग्रह पर बिनु माहुर खेने "माहुर" लिख देलखिन। मुदा माहुरक अन्त मात्र दूटा सरकारी अफसरक बातचीत सँ होइत छैक। पाठक कें जिज्ञासा बनले रहि जाइत छनि जे जनसाधारण कें अन्त मे भेटलैक की ?

जनसाधारण कें अन्त मे भेटलैक की ? ई तऽ बड़का यक्ष प्रश्न छैक जे आदि काल सँ चल अबैत रहलैक अछि। बाढ़ि अबौक, अकाल पड़ौक आ कि युद्ध होउक, मेवा खेनिहार कें मेवा भेटिए जाइत छैक मुदा जनसाधारण तऽ पिसाइते अछि। इएह ओकर नियति छिऐक। एकरा बदलैक शक्ति विधाता मे नहि छनि। तैयो एहि प्रश्नक उत्तर लेखक की सोचैत छलाह से जनबा लेल हम फेर निरक्षरासन करैत हुनका मस्तिष्क मे प्रवेश केलहुँ। हमरा जे भेटल से नीचा लिखैत छी।

"चमेलीरानीक मुख्यमंत्री बनि गेलाक बाद सबटा अड्डा कें तोड़ि देल गेलैक। भाटाजी कें सेहो छुट्टी दऽ देल गेलनि। एहि दुख सँ हुनका हर्टएटैक भऽ गेलनि। चमेलीरानी सरकार सम्हारलनि। सरकारी तंत्र कें दुरुस्त करबाक प्रयास शुरु भेल। मुदा एकटा आश्चर्यजनक परिवर्तन भेलैक। बूथ स्तरक सबटा कार्यकर्ता दलाली करए लागल। (ई कल्पना नहि यथार्थ छिऐक। सुननहि हेबैक जे हालहि मे अपना देशक एकटा बहुत पैघ राज्यक मुख्यमंत्री अपन कार्यकर्ता

सब कें दलाली बन्द करबाक आदेश दऽ देलखिन।) ओकरा सब कें पेटक सवाल छलैक। ओ सब अच्छेलाल पकड़ी कें नोटक गड्डी लुटबैत देखनहि छलैक। ज्ञाता स्वादो नोट बंडलम् को विहातुम् समर्थः ? लक्ष्मीक तिरस्कार नहि करिएनि। एहि लेल ठीकेदार सब कें सोझे गामक पार्टी ऑफिस मे कमीसन जमा करबाक निर्देश देल गेलैक। कार्यकर्ता लोकनिक विकासक संग राज्यक विकास होइत रहलैक। चमेलीरानीक इमानदारी पर एहि सबसँ कोनो बट्टा नहि लगलनि।"

करारक अन्त मे केदार बाबू ई लिखब बिसरि गेलाह जे पन्डित राजशेखर दत्तक जीवनी कोन भाषा मे लीखल छलनि। हमरा बुझबा मे आबि गेल जे एतेक सुन्दर खिस्सा मैथिली छोड़ि आन भाषा मे नहिए लीखल गेल हेतैक। अगिला बेर जखन बिन बाढ़िए के पंडितजी कें धरती पर आबऽ पड़लनि तखन देखलनि जे विनय अपन काज तऽ पूरा केलक आ हुनकर खिस्सा छपा देलकनि मुदा सबटा किताब के बन्डल ओहिना पड़ल रहि गेलनि। एकोटा किताब नहि बिकेलैक। एहि दुर्दशाक दुख पन्डितजी बर्दास्त नहि कऽ सकलाह आ ठामहि खसि पड़लाह। एहि बेर हुनका ने सूक्ष्म लोक भेटलनि आ ने कारण लोक। ओ प्रेत योनि मे एखनहुँ बौआ रहल छथि आ मैथिल समाज कें सरापि रहल छथिन जे एतेक रोचक हुनकर खिस्सा ओ सब नै पढ़लक।

हीना उपन्यासक अन्त मे लेखक लिखैत छथि, "एहि संसार मे मृत्यु तऽ रोज होइते रहैत छैक। हजार मे, लाख मे प्रतिदिन मनुक्ख धरती त्याग करैत अछि। मुदा मालिक बाबाक मृत्यु ? ... बिना हीरा मौसी आ शिबू बाबाक साधुपुरा केहन लगैत छैक? ... जाए दियौक, एहि बातक विचार नहिए करी सएह उत्तम होएत।" बुझिए गेल हेबैक जे लेखक अपना पेट मे किछु राखि लेलनि जे प्रकट नहि करए चाहैत छलाह कारण खबरि नीक नहि छलैक। एहू लेल हम निरक्षरासनक प्रयोग कएल, हुनका मस्तिष्कक भीतर ढुकलहुँ आ तखन

जे भेटल से एना अछि - "हीनाक चल गेलाक बाद अपन बाबाक मृत्युक समाचार सुनि गगन कें बहुत खुसी भेलैक। ओकरा सबटा राजपाट भेट गेलै। ललित कें सेहो ओ डरा-धमका कए अपना पक्ष मे कऽ लेलक। तें ललित आ पल्लवीक जोड़ी नहिए बनि पौलैक। पल्लवी निराश भेल पटना घुरि गेलीह। गंगाक चल गेलाक बाद साधुपुराक नवयुवक सब नेतृत्वविहीन भऽ गेल। जकरा गगनक कार्यशैली पसिन्न भेलैक से ओहि दल मे सम्मिलित भऽ गेल जकर लीडर कोबी बनि गेल छलैक। अधिकांश नवयुवक मोहभंगक स्थिति मे गाम छोड़ि दिल्ली-पंजाब भागि गेल।"

"अवारा नहितन" नामेक उपन्यास छैक, असल मे सत्येक उद्बोधन छैक एहि मे। तें लेखक जे किछु लिख देलनि ताहि सँ बेसी हमरा निरक्षरासन कैयो कए नहि भेटल। एकरा अन्त मे लेखक लिखैत छथि, "फिल्म पूरा बनि गेलै तकर सूचना पाबि हमरा दुख नहि प्रसन्नता भेल। मुदा एकटा जिज्ञास मोन मे रहिए गेल। की हम आ मदन भाइ मैथिल समाज मे अपरिचित सँ परिचित भेलहुँ ? जबाबक प्रतीक्षा मे मदन भाइ संसार त्यागि विदा भऽ गेलाह। मुदा हम एखन तक प्रतीक्षा मे जीबिते घुरि-फिरि रहलहुँ अछि।" ई लीखल गेल छलैक 2012 मे। तकर चारि वर्ष बाद केदार बाबू कें "प्रबोध साहित्य सम्मान" सँ सम्मानित कएल गेलनि। एहि मे रामलोचन ठाकुरक बहुत पैघ भूमिका छलनि। मुदा फल की ? प्रबोध साहित्य सम्मान अपनहि मुख्यधाराक सम्मान के सूची मे नहि आबि सकल। कारण बहुतो छैक मुदा हमरा जनैत एकटा मुख्य कारण छैक जे कतेको मठाधीश कें, जिनका बड़ आस लागल छलनि एहि सम्मान कें प्राप्त करबाक, निरास होमए पड़लनि। तखन तऽ ओएह गप - "जाहि भोज मे नोत नहि ताहि मे बज्र खसओ"। आ जखन मठाधीस सब अमान्य कऽ देलखिन तखन ओहि सम्मान आ पुरस्कारक मूल्ये की ? तें केदार बाबू एखनहु अपरिचिते छथि।

केदार बाबू कें एकेटा मित्र छलखिन - महंथ मदन मोहन दास। कॉलेजक दिन सँ लऽ कए महंथजीक स्वर्गारोहण तक। जिनगीक चारिम अवस्था मे हिडेन कॉटेज मे रहैत केदार बाबू एकेठाम बैसार करैत छलाह, ओही महंथ भाइक डेरा पर। हुनका गेलाक बाद ओ हिसाबें अपना डेरा मे कैद भऽ गेल छथि। लोक कें भेंट करबा सँ मना करैत रहैत छथिन। तैयो किछु थेथर लोक ओहि हिडेन जगह पर पहुँचिए जाइत छथि। ओही थेथरक श्रेणी मे हमहुँ रहल छी। केदार बाबू कें स्पृहा किछु छनि नहि। तें ओ स्वस्थ जीवन व्यतीत करैत छथि। कन्हाइ मंडल जकाँ प्राण कें ओ जीत लेने छथि तें आब हुनक आयु के कोनो हिसाब करब व्यर्थ। हमरा सबहिक इएह शुभकामना जे ओ एहिना जीवन व्यतीत करैत रहथु। जहिया कहियो ई जीर्ण-शीर्ण काया छोड़ि ओ सूक्ष्म लोक अथवा स्वर्गलोक कें प्रस्थान करताह, हुनकर समाधि पर लिख देल जेतैक अंग्रेजी कवि एलेक्जैन्डर पोपक कविताक पाँती "Thus let me live unseen unknown, Thus unlamented let me die।"

केदारबाबू अनचिन्हार छथि ताहि सँ की ? हुनक सब किताबक अनेको संस्करण छपिये गेल छैक आ पाठकवृन्द आनन्द लऽ रहल छथि। एतेक तऽ निश्चित जे केदारबाबूक कोनो पोथी पढ़ि कए पाठक कदीमाक भुजिया जकाँ नहिए बनताह, अपितु एकदम करकर बंगाली आलूभाजा जकाँ टनटनाइत रहताह। जय मिथिला, जय मैथिली।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

प्रदीप बिहारी-संपर्क-6202140561

मुख्य पात्रक गौण व्यथा : अबारा नहितन

केदारनाथ चौधरी एकटा एहन विरल लेखक छथि, जे मिथिला आ मैथिली हित लेल बताह होइत रहलाह। अपन छात्र-जीवनक आरंभहिसँ मैथिली हित लेल चिन्तनमे जीब' लगलाह। अपन शैक्षणिक कैरियरक बिनु परबाहि कयनहि मैथोलीक हितमे लगलाह आ लागल रहलाह। हुनक उपन्यास 'अबारा नहितन' पढ़लाक बाद हमरा से बुझायल। ई उपन्यास पढ़लाक बाद आर जे सभ बुझायल, से आगाँ कहब।

मैथिलीमे अपन पहिल उपन्यास 'चमेलीरानी'सँ चर्चित केदारनाथ चौधरी देखौलनि जे उपन्यास लिखबाक हिनक लूरि आ उपन्यासक भाषा पाठककें 'दीवाना' बना सकैत छै। ईहो उपन्यास मैथिलीक पाठककें मोहि लेबामे सफल भेल। एहि उपन्यासक विषय-वस्तु, एकर सहरजमीन मैथिलीक आन उपन्यास सभसँ फराक अछि, जे पाठककें आकर्षित करैत अछि। हमरा लगैत अछि जे चौधरी जी अपन भाषाक उन्नति आ साहित्यक कोषमे वंचित विषय सभकें चुनि क' आनबाक आ जमा करबाक आग्रही छथि। भाषाक सहजता आ चमकी हिनका लग छनिहें, अपन गप पाठकक हृदयमे साँठि देबाक अवगति तँ छनिहें आ तें एही क्रममे करार, माहुर, हीना आ अबारा नहितन सन उपन्यास अबैत छनि। प्रसन्नताक गप तँ ई जे हिनक पोथी सभक तीन-तीन, चारि-चारि संस्करण प्रकाशित भेलनि अछि। एकर माने ई जे मैथिलीमे हिनक पाठक छनि।

हमरा हिनक उपन्यास 'अबारा नहितन'क मादे गप करबाक मोन होइत अछि। एहि पोथीक मुखपृष्ठक बादक पृष्ठ पर लिखल छैक- मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गाबय गीत' कोना बनल तकर रोचक कथा-संस्मरणात्मक उपन्यास। उपन्यासमे कथा आ संस्मरण तँ रहितहिं छैक, मुदा हमरा जनैत एहि उपन्यासकें कथा, संस्मरण आ फिल्म-निर्माणक 'रोमांच'कें मोनमे राखि पढ़ने बहुत रास साँचकें बुझबा-गुणबामे पाठक हुसि जयताह। फिल्म-निर्माणक कथाक संग मिथिला आ मैथिलीक समस्या आ विकास पर गंभीर चिन्तन एहि उपन्यासमे अछि। एहि उपन्यासमे मैथिलक विभिन्न चरित्रक गहन आ सूक्ष्म चित्रण अछि। उपन्यासमे एकठाम वर्णित अछि- लेखक अपन अध्ययनक क्रमक कालेजक तातिलमे गाम जयबालेल टेन पकड़' हावड़ा टीसन पर अबैत छथि, तँ ताहि समयक दृश्य देखि मोन द्रवित भ' जाइत छथि। जाइ बला एक, अरिआत' बला बीस जन। सबहक समाद, सबहक आह्लाद। अपने पोखरिमे नहैह', अपने इनारक जल पीबिह'। आदि-आदि। किनको बूढ़ गायकें कसाइसँ बचयबाक चिन्ता छनि, किनको भरना लागल ब्रम्होत्तरा बला खेतकें छोड़यबाक संघर्ष-गाथा छनि, तँ किनको कंटिरबी लेल अन्दाजेक नापसँ फ्राक पठयबाक स्नेह। पलायनजन्य विवशताक नीक चित्रण देखबामे अबैत अछि। एहि क्रममे ओही पृष्ठ 27 पर लिखैत छथि- गरीब, असहाय, निर्बल भेल मैथिलकें अपन जन्मभूमि छोड़लासँ कतेक पीड़ा भ' रहलैए। एकर निदान लेल किछु होयबाक चाही। जागू हे मिथिला! सभ किछुसँ परिपूर्ण रहितहुँ अहाँ दरिद्र किएक छी, निरुपाय किएक छी? आब तँ देश स्वतंत्र छै। तइयो की मिथिलाक समस्या मुँह बौने रहतैक? चौधरी जीक एहि प्रश्नक उतारा, हमरा जनैत, एखनो नहि भेटि सकलनि अछि। देशक स्वतंत्रताक भने अमृत महोत्सव मनाओल जाइक, चौधरी जीक प्रश्न ओहिना ठाढ़ अछि।

एहि उपन्यासमे चौधरी जीक एकटा पात्र छथिन- वैद्यनाथ बाबू। ओ कहैत

छथि जे मिथिला आ मैथिलीक पहचान लेल जँ मिथिलाक्षरकें आवश्यक मानैत छी तँ स्कूल खोलू। एहिठाम (पृष्ठ 35) एकटा आर चिन्ता छैक। ओ ई जे जँ मिथिलाक्षरक बले मैथिली पढ़निहार, मैथिली बजनिहारक फौज तैयार नहि कयल जेतै तँ कालक्रममे मैथिली भाषा विलुप्त भ' जेतै। जेना, ब्रजभाषा आ अवधी भाषाक कविक रचनाकें हिन्दी भाषा अपनामे आत्मसात क' लेलक, तहिना विद्यापतियोक कविता हिन्दी भाषाक अंग बनि जायत। आधुनिक शिक्षाक विस्तार भेने मैथिल परिवारक भाषा मैथिलीसँ हिन्दी आ अंग्रेजी भ' गेलैए। एकरा रोकल नहि जा सकैत अछि। मुदा, सावधान भेल जा सकैत अछि।

एहिना मिथिलाक पंडित लोकनिक प्रतिस्पर्धा, केओ किनकोसँ कम नहि होयबाक दंभ आ किछु जाति आ क्षेत्र विशेषक भाषाक ढोलहोकें मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक प्रगतिक बाधक मानैत चिंता व्यक्त करैत छथि। एहि सभसँ निवारणक बाट ताकबाक प्रयासमे कतोक रचनाकार आ मैथिलीक हित चिंतक सभसँ भेंट करैत छथि आ अंतत: महंथ मदन मोहन दासक संग तय करैत छथि जे मैथिलीमे फिल्म बनाओल जाय। फिल्मेसँ मैथिल सभकें एकत्रित कयल जा सकैत अछि। भाषाकें आमलोक धरि पहुँचाओल जा सकैत अछि। आ फिल्म निर्माणक घुरघुरा दुनू मित्र महंत जी आ चौधरी जीक माथमे पैसि जाइत छनि।

पहिने दुनू तय करैत छथि जे मैथिलीक पहिल फिल्म धार्मिक होअय। फिल्म-निर्माणक क्षेत्रमे दुनूक अनुभव शून्य बटा शून्य बराबर शून्य। मुदा, हिआउ बड़ी टा, संकल्प बड़ी टा, अनुराग बड़ी टा। चलि जाइत छथि बम्बई । ओत' भेंट होइत छथिन उदय भानु सिंह। ओ हिनका दुनूक संग सह निर्माता बनैत छथिन आ बम्बईमे फिल्म जगतमे कार्यरत आ प्रयासरत मैथिली-अमैथिल सभसँ भेंट करबैत छथिन आ फिल्ममे अपन अभिनयक भूमिका ओगरि लैत छथि। मैथिलीमे फिल्म-निर्माण हेबनिमे बढ़ल अछि। लोक प्रयासरत छथि।

मुदा, एकटा लसेढ़ एखनो बेसी फिल्ममे पाओल जाइत अछि जे पूँजी लगौनिहार अपन अभिनयक भूमिका ओगरितहिं छथि। एहन फिल्म सभक दशा सबहक सोझाँ अछि। प्रोफेसनलिज्मक अभाव एखनुक बनैत फिल्म सभमे झलकैत अछि। हँ, एहि सभसँ फराक किछु फिल्मकार छथि, जे अपन प्रतिभा आ इमानदार प्रयासक संग मैथिली फिल्मकें उँचाइ धरि ल' जा रहल छथि। हिनकालोकनिक प्रयाससँ जखन राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्यमे मैथिली फिल्मकें देखैत छी, तँ करेज सूप सन होइत रहैत अछि।

फिल्म बनायब सरल काज नहि छैक। बहुत रास बाधा एहि मार्गमे छैक, जकर सांगोपांग वर्णन उपन्यास 'अबारा नहितन'मे कयल गेल अछि। फिल्म-निर्माण प्रक्रिया पाठकक मोनमे कौतुक जगबैत छैक, मुदा संगहि आरंभिक दुनू निर्माताक पीड़ा सेहो झलकैत छैक। फिल्मक वितरक ताकबाक लेल जे संघर्ष छैक, से पढ़िते बनैत छैक। मैथिल आ मैथिलीक संस्था सभक अपरूप-कुरूप चेहरा सभसँ पाठककें साक्षात् करबैत अछि ई उपन्यास। छगुन्ताक बात ई जे एतेक बरखक बादो चौधरी जी जे चेहरा देखलनि, से बदलल नहि अछि। अपन एहि क्रममे मैथिलीक दधीचि नामसँ विख्यात बाबू साहेब चौधरी हिनका लोकनिक मदति करबा लेल दुआरिए दुआरि हिनका सभक संग जाइत छथि आ अपमान सहैत रहैत छथि।

हँ, एहि उपन्यासक एकटा विशेषता इहो अछि जे मैथिलीक प्रख्यात लोक सभ एकर पात्र छथि। लेखकक ई एकटा साहसिक काज सेहो छनि। सामान्यतः रचनाकार कोनो पात्रक मूल नामसँ सृजन करबासँ परहेज करैत छथि, मुदा चौधरी जीक साहस देखबा योग्य अछि जे मैथिली आ मिथिलाक काजमे बौअएबाक क्रममे नीक आ अधलाह, मृदुल आ कुटिल, जे सभ भेटलखिन, सभके बिनु कोनो आवरणक पाठकक सोझाँ रखलनि अछि।

अबाराक उपाधि पौलाक बाद 'ममता गाबय गीत' बाकसमे बन्न भ' गेल आ कतोक बरखक बाद प्रसिद्ध गीतकार रवीन्द्र (रवीन्द्रनाथ ठाकुरक सत्प्रयासें

रिलीज भेल। उपन्यास कहैत अछि जे फिल्म बाकसमे बन्न भेलाक बाद चौधरी जी उच्च शिक्षा लेल कलकत्तेसँ कैलिफोर्निया जाइत छथि आ 1977 ई मे अपन देश घुरैत छथि। 2001ई मे लहेरियासरायमे घर बनबैत छथि आ रह' लगैत छथि। 2003 ई मे एकटा पत्रकार 'ममता गाबय गीत' फिल्मक कब्र खुनि बहार करैत छनि आ पुछैत छनि- 'की अहाँ मैथिली भाषामे बनल 'ममता गाबय गीत' फिल्मक कर्ताधर्ता छी? अगर 'हँ' तँ अहाँ मैथिल समाजमे अपरिचित किएक छी?

ई प्रश्न चौधरी जीकें आहत कयने होयतनि। हुनका लग एहि प्रश्नक उत्तर उपन्यासक अंत धरि नहि छनि। उपन्यासक अंतिम पाराग्राफमे ओ लिखैत छथि - 'फिल्म पूरा भ' गेलै तकर सूचना पाबि हमरा दुख नहि प्रसन्नता भेल छल। मुदा एकटा जिज्ञासा मोनमे रहिए गेल रहए। की हम आ मदन भाइ मैथिल समाजमे अपरिचितसँ परिचित भेलहुँ? जवाबक प्रतीक्षामे मदन भाइ संसार त्यागि बिदा भ' गेला। मुदा हम एखन तक प्रतीक्षा मे जिविते घुमि-फिरि रहलहुँ अछि।'

एहि समाजकें अपन नायककें चिन्ह' नहि अयलैक अछि। 'अपना'सँ पैघ केओ देखाइते ने छैक। विभिन्न क्षेत्रमे चौधरिए जी सन सेवारत बहुत रास मुख्य पात्र सभ छथि, जिनक परिचितिजन्य गौण व्यथा एखनहुँ प्रश्नक संग ठाढ़ अछि। मुदा, ई प्रश्न मिथिलाक समाज लेल धनि सन। हमरालोकनि ने अपन चश्मा साफ करैत छी आ ने बदलिते छी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आशीष चमन- संपर्क- 6206839141

मधुबाला नहि नहि लालदाय

यात्रा-वृतांत. आत्मकथा, जीवनी एवं संस्मरण साहित्य केर मनोरम विधा मानल जाइछ। एहि विधाक रूचिगर होयबाक पाछू मानव स्वभाव प्रमुख अछि। दोसराक जीवनके झाँपल हिस्सार्केँ अनावृत होइत देखब, सूनब ओ गूनब हमरा सभकेँ बड्डु आह्लादित करैत अछि। जतऽ यात्रा-वृतांत द्वारा मानवक यायावरी जीवन एवं ताहि सँ उत्पन्न रोमांच ओ अनुभवक सनेस एक संस्कृति सँ दोसर संस्कृतिक बीच बॉटल जाइछ, ततऽ जीवनी ओ आत्मकथा, मानव जीवनक आत्मसंघर्ष, ओकर पूरल एवं टूटल सपना, लालसा ओकर (जीवनीकारक) जीवन सिद्धान्त, ओकर उपलब्धि ओकर आत्मगौरवक जीवन्त दस्तावेज मानल जाइछ। संस्मरण उपरोक्त तीनू विधा, माने यात्रा-वृतांत, आत्मकथा एवं जीवनीक संयुक्त एकीकृत साहित्यिक विधा थिकैक।

जतऽ उपरोक्त तीन विषयमे हमरा एवं अहाँक जीवन-गाथा प्रायः एकाकी रहेछ, सहायक परिस्थितिक भूमिका गौण वा उन्नैस रहैत अछि ओतऽ संस्मरण, ओ काव्यात्मक विधा होइछ जाहिमे यात्रा-वृतात, आत्मकथा एवं

जीवनी, तीनू समेकित एवं संतुलित रूप सँ अपन योगदान दैत रहल अछि, एहिमे कोनो एक हिस्सा ने ककरो सँ दुबर आ ने असम्पृक्त रहैत अछि।

अपन मैथिली साहित्यमे एकटा रोग देखल जा रहल अछि, किछु साहित्यकार अपन साहित्यिक यात्राक एक डेढ़ वा दुई दशकके समाप्तिक पश्चात् आत्मकथा ओ संस्मरण लेल उताहुल भऽ जाइत छथि। एकर जता लाभकारी स्थिति ई होइछ जे नबका पीढ़ीक हुनक अनुभवक लाभ अनायासहि भेटि जाइत छनि ओतहि उक्त कथित वयोवृद्ध साहित्यकारक आगूक साहित्यिक यात्रा "महायात्रा मानि लेल जाइत छनि। ई स्थिति अपन भाषाइ आंदोलन लेल हानिकारक होइत अछि।

मौलिक रचनाकेँ यदि निरपेक्ष भऽ देखी तऽ ऊपरके चारू साहित्यिक विधाकेँ एकदम सँ सहज एवं आसान विधा कहि सकैत छी, जाहिमे ने कल्पनाक मिश्रणक बेगरता रहैछ, ने कथा-वस्तुक ठहरवाक भय, माने, अहाँ जँ साहित्यिक रूचि सम्पन्न लोक छी, देखल-सूनल-भोगल यथार्थ सँ परिपूर्ण छी तऽ खूब नीक जकाँ ई कार्य कऽ सकैत छी। मुदा केदारनाथ चौधरी जीक प्रस्तुत संस्मरणात्मक उपन्यास "अबारा नहितन उपरोक्त सरलीकृत मानदंड सँ ऊपरके विषय-वस्तु थिकैक। | श्री केदारनाथ चौधरी अपन जीवनक पछिलुका हिस्सा जे बितौलनि ओ स्वयममे युगान्तरकारी अछि। प्रस्तुत उपन्यासक विषय इतिहासक ओहि कालखण्ड सँ लेल गेल अछि जे वास्तवमे मानव जीवनक हर क्षेत्रमे अनिवार्य रूप सँ हस्तक्षेप कयने छल।

भारत नव स्वाधीन भेल रहैक। स्वाधीनता जाहि लेल प्राप्त कयल गेल छलैक से तिरोहित भऽ गेल रहैक। स्वाधीनता सँ पूर्व अंग्रेजक राज छलैक आ ताहि सँ पूर्व "मुगल शासन" छलैक। आब मुगल शासन एवं अंग्रेजी शासनक संयुक्त दर्शन कथित स्वाधीन भारत पर लादि देल गेल छलैक। एतऽ द्रष्टव्य ई जे नेहरू परिवार मुगल शासनमे दिल्लीक कोतवाल छल आ ब्रिटिश इंडियामे

समयकेँ अकानि ओहि व्यवस्थाके चिहुँटि कऽ गरोसि नेने छल। इएह कारण छलैक जे महात्मा गाँधी एहि परिवारकेँ "पूर्वक नैतिकता एवं पाश्चात्य आधुनिकताक सेतु मानि, अपन भारतक राजनैतिक सत्ता लेल उपयुक्त पात्र बुझि अपन उत्तराधिकारी घोषित कयलनि। उपर जेना कहल जे ओ कालखण्ड जीवनक हर क्षेत्रमे अपन अनिवार्य उपस्थिति दर्ज करौने छल। ओहि समयमे भारतक आनो क्षेत्रक संगहि सदति सूतल वा भंगियाल बिहारक उत्तरी हिस्सा जे मिथिलांचलक कहल जाइछ बाँचल नहि छलैक। ओहिकालमे जे आर्थिक ओ सामाजिक क्रांति भारतमे व्याप्त छलैक तकर प्रभाव सँ मिथिलाचल सेहो वंचित नहि छलैक। अपन सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक एवं राजनैतिक उत्कर्ष पयबा लेल एहिठामक विभिन्न समूह अपन-अपन विचारधाराक पोषित करबा लेल जगह-जगह संगठित होयब शुरू कऽ देने छलैक। जाहिमे सभ सँ पहिने मैथिल महासभाक" नाम अबैत छैक। आब भनहि एकर महत्ताक सीमित कयल जा रहल छैक मुदा अपन सीमित सोचक अछैतहु ई सामाजिक बदलाव लेल एकटा व्यापक मंचक काज कयने छलैक। मुदा जातिवादी सोच मूलतः मैथिल बाभन एवं कर्ण-कायस्थक प्रति उत्तरदायी भावना कारणे ई संस्था प्रतिगामी होइत क्रमशः अलोपित भऽ गेलैक। इतिहास एहि क्रममे प्रवासी मैथिलक ओ भाग जे इतिहासक गर्तमे मीलि गेल छलैक ओ अपन वास्तविक रूप सँ वंचित भऽ गेल छलैक तकरा मूल धारामे अनबा लेल जे किछु लोक प्रयास कयलनि आहिमे स्वनामधन्य म.म रूना झा एवं लखनौर ड्योढ़ीक बाबू लक्ष्मीपति प्रमुख छथि। जनिक सतत् प्रयत्न सँ दिल्ली आगरा समेत समस्त ब्रजमंडलमे बसल मैथिल बंधु मुख्य धारामे आबि आब ब्रजस्थ मैथिल केर नाओं सँ समादृत होइत छथि।

पोथी-पत्रिकाक प्रकाशन ताहि कालक लेल अत्यन्त लाभप्रद भेल छलैक जे मिथिलांचलक पुनर्जागरण हेतु महत्वपूर्ण कार्य कयलक। एहि तरहक तमाम प्रयासक मध्य अपन भाषामे एक महत्वपूर्ण प्रयास, प्रथम मैथिली फीचर

फिल्म जनमानसक मध्य अनबाक छल। यद्यपि तदयगीन अवस्था देखैत फिल्मकार द्वयक ई प्रयास दुस्साहसपूर्ण छलैक अनुभवक जगह पर केवल उदाम पौरुष छलैक जेकर निष्पत्ति वएह छल जे अन्तमे भइये टा गेलैक। अपन प्रस्तुत औपन्यासिक संस्मरण द्वारा श्री केदारनाथ चौधरी ओहि समयक सामाजिक अवस्थाक सूक्ष्म अवलोकन करबामे पूर्णतः सफल सिद्ध भेलाह अछि। एहिमे जाहि पात्र ओ घटनाक चित्रण कयल गेल अछि ताहिमे आई करीब 65-70 वर्ष बीति गेलाक बादो बहुत परिवर्तन नहि भेलैक अछि।

ममता गाबय गीत सिनेमाक चित्रांकन आ तकर पाछाक अध्यवसायक रेखांकन एतऽ बहुत महत्व नहि रखैत छैक। यदि एकरा केन्द्रमे राखल जाइक तखनि हमरा सभके बम्बइक माहौल सँ साक्षात्कार करय पड़त जकर हदयद्रावक चित्रण स्व. सआदत हसन मंटो अपन विभिन्न संस्मरण सभमे कयने छथि। एहि उपन्यासक माध्यमे लेखक तद्युगीन जीवनक विभिन्न क्षेत्रक जे वर्जित विषय छलैक ताहि पर प्रकाश देलनि अछि। जेना कि मुख्य अभिनेत्री अजराक प्रति कामातुर दरिद्रछिम्मड़ि मैथिल पंडित सऽ लऽ कऽ मिथिलेश्वर पर्यन्तमे छलनि। एहिमे टुन्ने झा सन सेहो व्यक्ति छथि जे अपना ढंगक अलग क्रांतिकारी व्यक्ति छथिन। ओ गाममे सभ सँ पहिने अपन टीक कटौलनि, कमीज पहिरलनि, अहमद हुसैन दिलदार हुसैन जर्दा फँकलनि। महन्थ मदन मोहन दास छथिन, जे अजराक सौंदर्य सँ ततेक अभिभूत छथि जे लेखककेँ हुनक ब्रह्मचर्य खतरामे लागऽ लगैत छनि।

सामाजिक साहित्य उपदेशमूलक नहि होइछ। उपेदश लेल अहाँकेँ धार्मिक एवं नैतिक साहित्य केर खगता ओ बेगरता चाही मुदा तकर बादो सामाजिक साहित्य सकारात्मकता सँ बेछप नहि भऽ सकैछ। एहि उपन्यासमे बौआजी सन मुखिया, दीपकजी सन साहित्यिक जीव, वैद्यनाथ बाबू ओ महंथ मदन मोहन दास सन अग्रसोची लोक छथि तऽ टने झा सन हास्यास्पद उत्तर

आधुनिकतावादी प्राणी सेहो छथि जे मिरजइ त्यागि कमीज पहीरि पिता ओ समाजक भर्त्सना, अवहेलनाक निष्ठापूर्वक बर्दाश्त कयलनि। ई सभ व्यक्ति शांत ओ निष्क्रिय भेल कोनो समाजक लेल अनिवार्य अंग थिक जे ओहि समाजक अस्तित्व लेल, ओकर जीवित सत्ताक प्रमाण-पत्र ओ मानपत्र होइछ। ई सभ लोकनि पुनर्जागरणकेँ लेल ओ "स्लीपर सेल" छथि जाहि कारणे मैथिलीक प्रथम सिनेमा "ममता गाबय गीत केर निर्माण भऽ सकलैक। मिथिला समाजकेँ छोड़ि दिऔक तऽ जखन एहि टाइपके उपन्यासकेँ अन्य भाषा अनुवाद भेला पर ओहि भाषा-भाषी पाठक एकरा पढ़थिन तऽ हुनका सभकेँ एतुक्का समाज, जाहिमे टंचजी, बिच्छूजी, कौआली बाबू, टन्ने झा, फुद्दी झा आदि सभ जे छथि से "पिकुलिअर पर्सन्सैक" लगतनि।

प्रस्तुत उपन्यास फिल्म निर्माणक बारीकीक ब्यौरा संगहि अन्यान्यो घटनाक्रमकेँ सहज भाव सँ समेटने जाइत अछि। ओहन घटनाक्रम, जे कर्मकारण श्रृंखला जँका अनिवार्य रूप सँ घटित भऽ रहल छैक। आरम्भ होइछ सकरी स्टेशन सँ सटल एकटा सुखी-सम्पन्न गाम जतऽ सँ एक सम्भ्रान्त परिवारक लड़का पढ़ऽ लेल दरभंगाक नॉथब्रुक जिला स्कूल जाइत छैक। ओकर हॉस्टलक सहपाठी सभमे शिवकान्तक विवाह भऽ गेलैक अछि। ओकर विवाह सहपाठी किशोरवयक छात्र सभक लेल स्वभाविक रूप सँ ईर्ष्या आ उत्कंठाक विषय छैक। "भागमत शिवकान्त" सदति अपन पत्नीक कल्पनामे लीन रहैत अछि। लेखक पढ़ुआ विद्यार्थी छथि आ शिवकान्त भुसकौल छैक तथापि दुनूक बीच मित्रता छैक। ई मित्रताक सेतु शिवकान्तक वैवाहिक प्रतिष्ठाक सेतु पर टिकल छैक, जाहि कारणे जखन लेखक अपन लापरवाही कारणे मैट्रिक परीक्षामे फेल करैत छथि तऽ शिवकान्त जेकर असफलता प्रायः असंदिग्ध छलैक तकरा संग आत्महत्या करऽ लेल बागमती नदीमे कुदऽ लेल जाइत छथि। बाटमे दुनेजी महाराजक होटल सँ अबैत शुद्ध

घी केर पूड़ी-जिलेबीक सुवास दुनू आत्महत्याक अभ्यर्थी मित्रकेँ आकर्षित करैत छनि। ओहि होटलसँ कौआली बाबू उर्फ छोटका कका भोजन करैत भेटैत छथिन। कौआली बाबूक आर्षवचन सूनि दुनू मित्र आत्महत्याक विचार त्यागि दैत छथि।

ई कौआली बाबू रोचक व्यक्ति छथि, हिनकामे अहाँक तद्युगीन समाजक सम्पूर्ण इतिहास भूगोल भेटि जाएत। कौआली बाबूक भोजनक स्टाइल, शिक्षा पद्धति आदिपर हुनक टिप्पणी बड्ड सटीक। देखिऔक ने औखन धरि कतेको विद्यार्थी कम्पीटिशनक कुचालिमे फँसि फँसरी लगबैत अछि तकर आदि चित्रण, प्रजातांत्रिक पद्धतिमे टिकट लेल मारिते झंझट, विधायकी ओ ताहि सँ प्राप्त धन लाभक कल्पना...।

मुदा कौआली बाबू सोझमतिया छथि जे दोसराक टिटकारामे आबि अपन आर्थिक नोकसान लेल प्रस्तुत छथि। एहन टाइपक व्यक्ति आब मैथिल समाज सँ अलोपित भऽ गेलैक अछि। भैयारीक बीच सम्पतिक बँटवारा, कलह-कलेश मैथिलेटामे नहि अपितु आसेतू निरन्तर व्याप्त अछि।

एक नजरि एहि उपन्यासक मूल एवं अन्तरात्मा पर अपन सभक समाजमे टंगघिच्चापन अदौ सँ रहल अछि। कोनो नीक एवं सद्प्रयासकें संदेहास्पद मानब एहिठामक परिपाटी थिकैक एहि सँ अपन सभक समाज आत्मघात करैत रहल अछि। हरि सिंह देव पंजी प्रबन्ध करौलनि, एहिठामक शासन-व्यवस्थामे सुधार अनबाक प्रयास कयलनि, मुदा एतुक्का समाजक अगुआ लोकनि ततेक ने झंझट पसारलनि जे हुनका सुधारवादी उपाय तक छोडू राज्य छोड़ि बनवासी बनऽ पड़लनि।

ब्रिटिश शासन, भाया बंगाल सभ सँ पहिने मिथिलेमे आएल। बंगालमे गाँधी युग सँ पूर्व सामाजिक सुधार आंदोलन सभ चलल तत्पश्चात गाँधीजीक समय

राजनैतिक जागरण सम्पूर्ण भारतमे आएल मुदा मिथिलामे ने सामाजिक जागरण आएल ने राजनैतिक। यदि हमर गप्प असत्य होइक तऽ देखू मिथिलामे अरविन्दो, रवीन्द्र, सुभाष, जवाहरलाल, घनश्याम दास बिड़ला सन एक्कोटा साहित्यिक, राजनैतिक एवं औद्योगिक नेतुत्व अभड़ल? एकर पाछा ई कारण छलैक जे हम सभ अपन वर्तमानक प्रति पलायनवादी रूख अख्तियार कयने छलहुँ। मुदा तकर बादहु किछु सकारात्मक पहल भेल छलैक। ओ पहल मैथिल वर्गमे आधुनिक शिक्षाक प्रति छलैक। साहित्यिक आन्दोलन सेहो आरम्भ भेलैक। भुदा से समाजक बड्डु थोड़ हिस्सामे भेल छलैक। एहिठाम सभ दिन पहिनो ओ आइओ पत्रिका सभ प्रकाशित होइत रहल अछि ओ अकालमृत्युक शिकार होइत रहल अछि। उपन्यासक यात्राक्रममे दुइ गोट प्रमुख पात्र सँ भेंट होइछ। दुनूक चर्चा करब परम आवश्यक अछि। एहि सँ जतऽ अपना सभक सामाजिक अवस्था पर जे रोग लागल अछि तकरा पर ध्यान जाएत ओतहि दोसर दिस अपना सभक आवाजक कमजोरीक पाछूक असली कारण पर ध्यान जाएत। प्रथम व्यक्ति छथि श्री उदयभानु सिंह एवं दोसर व्यक्ति महन्थ मदन मोहन दास। उदयभानु सिंहक बहन्ने जतऽ एक दिशि मैथिल-चरित्रक सफलतापूर्वक चित्रण भेल अछि ओत्तहि हुनका माध्यमे प्रवासी मैथिलके चरित्रक सेहो नीक जकाँ निरूपण भेल अछि।

उदयभानु सिंह दबल महत्वाकांक्षा एवं सबल अहम केर स्वामी छथि, जनिका कारणे एक निर्दोष एवम पवित्र विचारक असामयिक निधन भऽ जाइत छैक। ई व्यक्ति एकभगाह छथि अपन हिसाबसे जमाना देखब ओ ओकरा हाँकब हिनक स्वभावक अंग छनि। ई स्वभाव मैथिल जातिक सर्वकालीन समस्या अछि। विश्वास नहि होइछ तऽ गाम घरक बात छोड़ि प्रवासोमे कोनो कॉलोनीमे जत 10 घर मैथिल रहैत छथि ओतक्का स्थिति देखू सभ एक दोसरासे विपरीत रहैत छथि। गेहे-शूराः रणे भीता परस्पर विरोधिनः" स्वभाव बला

मैथिल भने समुद्रयात्रा नहि करैत छलाह नहि तऽ गाँधी जीक दक्षिण अफ्रीकामे आन्दोलन ठाढ़ करवाने गुरू-गोसाई याद आबि जइतनि। उदय भानु सिंह जीक माध्यमे कलकत्ता ओ बम्बइक प्रवासी मैथिल सभक चित्रण सेहो आयल अछि जे मैथिल बंधु केवल भनसिया ओ मुनीमगिरीक काजे टा लेल नहि अपितु हाकिम-हुक्काम के बिजनेसमैन बनेबा लेल सेहो परदेस जाइत छलाह। हुनका सभमे अपन देशीय गौरवक भावना छलनि, संगठित छलाह ततहि दोसर दिस तिरपित बाबूक उच्चका चरित्र जुगुप्सा उत्पन्न करैछ। महंथ मदन मोहन दासजीक चर्चा कयने बिनु एहि साहित्यिक यात्राक वर्णन अपूर्ण मानल जाइत...।

महन्थ जीक व्यक्तित्वक समीक्षा अपरिहार्य अछि। ई अपना संग कतेको सहमति एवं असहमति हमरा सभक सोझा रखैत छथि। महंथजी मैथिल जातिक कुचालि, एकरा सभक पारस्परिक ईर्ष्या, वर्णगत श्रेष्ठताक अहंकार मैथिली एवं मिथिलाक बदहालीक प्रति जखन चिन्ता व्यक्त करैत छथि तऽ मिसियो भरि मतान्तर नहि राखल जा सकैछ मुदा ओ जखन भाषा एवं जाति लऽ कऽ प्रश्न उपस्थित करैत छथि तऽ मतान्तर ठाढ़ भऽ जाइत अछि। हनक मतानुसार दरभंगा, मधुबनी ओ समस्तीपुरक बाद बला भाषा मैथिली नहि थिकैक। एतऽ प्रश्न उपस्थित अछि जे सहरसा, सुपौल, मधेपुरा, अररिया, किशनगंज प्रति उत्तर बिहारके जनभाषा कोन भाषा थिकैक। एहि प्रश्नक उत्तर की होयत? प्रस्तुत रचनामे उपस्थित ई प्रश्न मैथिली भाषाई आन्दोलनकै कमजोर करतैक की नहि? एहि सभ प्रश्नक उत्तर अनिवार्य अछि। दोसर प्रश्न जातीय अछि। एकटा फैशन स्वतंत्रताक बाद भारतक मिथिलामे चलि चुकल छैक-मैथिली भाषा, बाभन ओ कर्ण कायस्थक बपौती थिकैक। एकर आधार की छैक? ई प्रश्न हिन्दी, मराठी आदि भाषाई आंदोलन सँ पैंच लेल गेल छैक जतऽ "दलित विमर्श" चलल छलैक। एहि विमर्शक आधारभूमि सामाजिक विषमता सँ लऽ

कऽ भक्ति साहित्यक परम्परामे सेहो छैक। की मैथिली साहित्यमे सामाजिक विषमताकेँ लऽ कऽ कोनो विशद विमर्श ठाढ़ भेलैक अछि? हँ, यात्री जीक बलचनमा ओ ललितक पृथ्वीपुत्र सन किछु अपवाद छोड़ि। ईहो दुनू उपन्यास मूलतः भू-समस्या ओ तकर निदान लेल वामपन्थ विचारधाराक पुखापेक्षी अछि।

कोनो भक्ति आन्दोलन जकर आधारशिला सामाजिक चेतनाकेँ आन्दोलित करैत छैक जकर आधार पर दलित विमर्श जे साहित्यिक आन्दोलन जकाँ मैथिली भाषामे "अछोप विमर्श ओ साहित्यिक आंदोलन" द्रष्टव्य नहि अछि। हम एक नहि अनेक उदाहरण द्वारा ई बात साबित कऽ सकैत छी जे मैथिली भाषा एवं साहित्य सदति जातीय घेराबन्दी सँ मुक्त रहल अछि। महन्थजी अपनाकेँ मैथिल नहि भूमिहार कहैत स्वयंकेँ अमैथिल कहैत छथिन, तखन ओ कोन प्रेरक तत्व छलनि जखन हुनकर अपन अस्मिता (महंथी) पर संकट छलनि तखनो मैथिली लेल फिल्म निर्माण आ ताहिमे ओतेक फज्जति झेलबा लेल हुनका प्रेरित केलकनि? जबाव अछि हुनक धमनीमे बहैत सुच्चा मैथिल रक्त। ई ओ रक्त जे भूमिहारिन शारदा सिन्हा मैथिलीक स्वरकोकिला बलौलकनि। ई मैथिलत्व रघुनाथ मुखिया (गोढि), तारानन्द वियोगी (धानुक), अरविन्द ठाकुर (भूमिहार), बुचरू पासवान (दुसाध), रघुवीर मोची (चमार), फजलुर रहमान हासमी (मीयाँ), सुभाषचन्द्र यादव एवं सोमदेव सन अनेको कथित अमैथिल मैथिली साहित्यक महफाके कहार बनबा लेल अवश कऽ देलकनि। यह मैथिलत्व माँगनि खबासकेँ शास्त्रीय गायनमे अमर बनौलकनि। एहि भाषामे जट-जटिन, राजा सलहेस, दीनाभद्रीक गाथा, खेखन महाराजक करामति सभ लोक-कलामे जीवित छैक। एहिठामक मनोरथ एतुक्के अहिपन पुरहर डाला, साजी, मौनी, पौतीमे सहेजल छैक। वस्तुतः स्वयंकेँ अमैथिल मानऽ मे केवल फैशने टा नहि अपितु एकर पाछू ऐतिहासिक दुर्दिनता सेहो छैक। सदति रौदी-दाही, जीवनयापनके

साधनक अभाव, पलायन, विस्थापनक दंश झेलनिहार विशाल आबादीकेँ पलखति कतऽ रहैक जे ओ अपना मैथिल बुझितइ?

प्रस्तुत उपन्यास "अबारा नहितन" साहित्यिक दृष्टिसँ पूर्णतः सफल भेल अछि। एहि उपन्यासमे जतऽ भविष्यक प्रति उत्साह उमंग छैक ओत्तहि गतके प्रति वितृष्णाक भाव सेहो रेखांकित छैक। तद्युगीन व्यवस्थाक चित्रण सेहो भेल छैक, जमिन्दारी प्रथाक उन्मूलन अपरिहार्य छैक। नव व्यवस्थाकेँ थाह-ठेकान, पुरान व्यवस्थापर आधारित वर्गकेँ नहि भेटि रहल छनि। युवा वर्गक बेरोजगारी, नशा-पान, चरमराइत सामाजिक व्यवस्था, पुरातनपन्थ, कुलीनताक दोग-सान्हिमे अव्यक्त किन्तु उद्दीप्त काम-भाव, नवाचारक प्रति संशययुक्त आकर्षण एकरा रुचिपूर्ण बनौने छैक। अपन कार्यकलापकेँ त्याग नहि मानि गदहपचीसी कहब, अपन स्वप्न भंगक त्रासदी पर पश्चाताप नहि अपितु ठहक्का भरि हँसब अबरपनी थिकैक।

महाभौतिकवादी छोटका बिड़ला जखन बाबू साहेब चौधरीक संग कादारनाथ चौधरी एवं महंथ मदन मोहनदासकेँ अपना ओहिठाम देखलनि आ हुनका ज्ञात भेलनि जे ई दुनू महापुरूष फिल्म निर्माता सेहो मैथिलीक छथि तऽ अझक्कमे कहि उठलाह "अबारा नहितन जेकरा तखनहि महन्थ मदन मोहन दास ओकरा अपन ताहि क्षणक मनोदशामे सही मुदा अपना लेल अंगीकार कऽ लेलनि। अपन जिनगीक उत्तरार्धमे केदार बाबू सेहो अपन गत कार्यकेँ अबरपनी मानि लेलनि।

एक नजरि "अबारा" शब्दक व्याख्या पर, ई शब्द विभिन्न युगमे, विभिन्न क्षेत्रमे विभिन्न तरह सँ आयल अछि। संस्कृत साहित्यमे "इत्वर" शब्द आयल छैक। जकर शब्दार्थ निष्प्रयोजन कार्य कयनिहार सँ होइछ। अपन उपन्यास "बाणभट्ट की आत्मकथामे पूज्य हजारी प्रसाद द्विवेदी "बंड" शब्दक प्रयोग कयलनि अछि जेकर अर्थ-नाँगड़ि कटल बड़द

होइछ। बड़द जेकरा हुथियाबऽ लेल ओकर नाँगड़ि मोचाड़ल जाइछ, ताहि सँ बड़द हुलसि कऽ दौड़ लगैत अछि, आ काजक सम्पादन होइछ। मुदा जखन बड़दक नाँगड़िये कटि जयतैक तऽ ओ हुथियाएल कोना जाएत आ पनिगर कोना होएत तऽ ओ "बंड" कहाओत। बादमे एहि बंड सँ मैथिलीमे "अबंड" शब्द बनल। जकर अर्थ बंडक रूपमे या फालतू व्यक्तित्वक रूपमे भेल जेना कि "लोपित" शब्द सँ "अलोपित भऽ गेलैक जेकर भावार्थ "निपत्ता वा सदति गायब रहऽ योग्य वस्तु अथवा प्राणी सँ कएल जाइछ। एहि तरहे देखैत छी जे अपना सभक गाम-परिवारमे औखन धरि कतेको "अबंड", "अलोपित नहि होयबाक सप्पत खा नेने छथि। अबारा शब्द संस्कृत भाषाक "इत्वर" सँ मेल खाइत अछि। मुदा प्रश्न उठैत अछि जे लेखक श्री केदारनाथ चौधरी अपन कार्यक निष्प्रयोजन कियैक मानलनि? मैथिली भाषामे जे फिल्म बनतैक से व्यवसायिक दृष्टिकोणसँ नहि अपितु भाषाइ सामाजिक जागरणकेँ ध्यानमे राखि कऽ बनतैक ई सिद्धान्त दुनू मित्र फिल्मक निर्माण सँ पहिने तय कयने रहथि, तखन निर्माणक बाद वितरण हेतु बम्बइया फिल्म वितरण फार्मूला अपनौलनि आ असफल भेलाह।

वस्तुतः "ममता गाबय गीत केर पटकथामे जेना-जेना परिवर्तन होइत गेलै निर्माता द्वयक मनोरथो बढ़ैत गेलनि। याद अबैत अछि बहुत पूर्वमे डॉ. मायानन्द मिश्रक पढ़ल कथा जकर सार ई अछि-एकटा किशोरवयक लड़का मधुबाला अभिनीत फिल्म देखैत अछि, प्रस्तुत फिल्ममे मधुबालाक सौंदर्य एवं ओकर अदा ओहि कम उमरिक लड़काक मोन-मिजाज पर ततेक हावी होइत छैक ओ स्वप्नमे मधुबालाक संग विहार करैत छै, आलिंगनबद्ध होइत छैक,चरम पर जा कऽ ओकर नींद टुटैत छैक तऽ ओ जकरा पँजियौने रहैक से मधुबाला नहि ओकर जेठ बहीन जेकरा ओ "लालदाय" कहैत छलैक से रहैक, कथाक शीर्षक अछि "मधुबाला, नहि नहि लालदाय। लेखक एहने मधुबाला रूपी व्यवसायिक चक्रव्यूहमे फँसि लालदाय रूपी प्रयोजनमूलक

सिद्धान्तकेँ त्यागि देलनि। लालदाय सुन्नरि अछि, ममत्व सँ भरल अछि, मुदा महात्वाकांक्षासँ परहेज कयने अछि।

फिल्मक गीतकार, आब स्वर्गीय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर एहि लालदायके पकड़लनि। फिल्म वितरणक परम्परागत लीक छोडि, अपना हुनर सँ ठाम-ठाम प्रदर्शित करौलनि। आ लालदायक प्रतापे मारि रास "लबका पाइ" उपार्जित कयलनि। ओ अबारा छथि? ओ अपन कयल कार्यक गदहपचीसीक क्रिया कलाप कहैत छथि। मुदा एक पाठकके रूपमे हम छोटका बिड़ला सँ पूर्णतः असहमत छी जे हिनका कहलकनि-"अबारा नहितन । हँ यौ! हमर गदहपचीसी बीति चुकल अछि, सम्प्रति हम 50 वर्षक अवस्थामे छी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अरविन्द ठाकुर- सम्पर्क- 9955155156/ 9431091548

"अबारा नहितन"क "विलक्षण" कें व्याख्यायित करब

अपन किछु लिखए सँ पहिने हम सभ पढ़ए छी। कतय की-की लिखल गेल अछि, केना लिखल गेल अछि, तेकर थाह लए छी। कहलहु गेल छै जे लिखबाक-गढ़बाक लेल पढ़ब अनिवार्य अछि। अहि पढ़बाक क्रम मे हम सभ अनेकानेक विधाक अनेकानेक पोथी पढ़ए छी। पढ़बाक ई क्रम एकटा नशा छै -- चढ़ए छै, उतरए छै, उतरि-उतरि कए फेर चढ़ए छै, चढ़ि-चढ़ि कए फेर उतरए छै, उतरलाक बाद फेर चढ़ए के मांग करए छै। जिनका-जिनका अहि नशाक लत छनि, से अहि पिनक कें नीक जकाँ बुझता। पढ़बाक ई क्रम कखनहु काल रुटीन वर्क जकाँ होइत अछि मने जे एकटा आदत, एकटा हिस्सक जकाँ पोथी पढ़ने जाए रहल छी, पाँति सभ पर नजरि दौड़ैत जाए रहल अछि, पन्ना पलटने जाए रहल छी, पोथी खतम भए जाइत अछि। फेर कोनो दोसर पोथी हाथ मे पहिने पढ़ल पोथी कें बिसरि जाइत। आ फेर ओहिना पाँति सभ पर नजरि दौड़ाएब, पन्ना पलटब आ पोथी-पाठक समापन कए देब। रहरहाँ ई होइत अछि जे अहि पढ़ल पोथी सभक अन्तर्वस्तुक कोनो अंश, कोनो भागक प्रभाव अहाँक अचेतन भने ग्रहण कएने हुअए, अहाँक चेतन-सचेतन एकदम सँ प्रभावहीन रहि जाइत अछि। अर्थात नशा त कएलिअए,नशा चढ़ल नहि। फेर कोनो पोथी एहन हाथ लागल जे डेग-डेग पर अहाँ कें रोकैत गेल। ओकर किछु शब्द-प्रयोग, किछु वाक्य-संरचना, किछु

अनुच्छेद अहाँ कें बेर-बेर थाम्हलक, ठहरि-ठहरि कए बुझबाक लेल बाध्य कएलक, बेसी समय लेलक आ ओकर समापनक बाद अहाँ के लागल जे अहि बेरका पढ़ब सार्थक भेल, ओकरा सँ अहाँ कें किछु विशेष, किछु संग्रहणीय भेटल। पढ़बाक अहि पगलपनी, अहि अन्तहीन क्रियाक बीच अकस्मात कोनो एहन पोथी अहाँक हाथ लागि जाइत अछि जेकर कवर-पृष्टक अक्षर सभ सँ शुरू होइत ओकर अंत तक जाइत ओहि पोथीक प्रवाह अहाँ कें अपना संग तेना ने बहएने चलि जाइत अछि जे खेनाइ-पिनाइ, शौच जेनाइ, सुतनाइ सन-सन दैनन्दिनीक प्राकृतिक माँग (नेचुरल काल) सेहो अहाँ कें बाधक-बैरी जकाँ बुझाबए लागैत अछि। अहि पोथी विशेष कें पढ़बाक क्रम मे ठहरबाक कोनो बेगरता, कोनो आग्रह नहि, ओकरा बुझबाक लेल दम लेबाक, पागुर करबाक आवश्यकता नहि पढ़ने जाउ, बुझने जाउ, बढ़ल जाउ, आनन्दित होइत जाउ आ पोथी समाप्त। पोथीक समापनक बाद अहाँक भक टुटैत अछि आ अहाँक अन्तर्मन सँ एकटा शब्द बहराइत अछि "विलक्षण"! आ अहाँ पाठजनित आनन्दक संग एकटा अफसोस सँ भरि जाइ छी जे पोथी समाप्त किऐ भए गेलए, ई और नमहर किऐ ने रहए?

एकटा सामान्य पाठक लेल एतय आबि कए ओकर काज समाप्त भए जाइ छै। ई कहि जे, "पोथी विलक्षण रहए। पढ़ए मे खूब आनन्द भेटल। लेखक नीक पोथी लिखलनि।" , ओ पोथी कें चौपेत कए अपन अलमारी मे सैंति लेत। बात खतम। दिक्कत छै ओहि पाठक लेल जे लेखक सेहो अछि। ई दिक्कत तखनि और घनीभूत भए जाइ छै जखनि ओहि लेखक-पाठक कें ओहि पोथी-विशेष पर लिखबाक आन्तरिक वा वाह्य दबाव बनए छै, बनाएल जाइ छै, ओकर अन्तर्मन सँ बहराएल "विलक्षण" शब्दक व्याख्या करबाक लेल कहल जाइ छै, अहि शब्दक औचित्य पूछल जाइ छै आ ओकरा लग बौक भए जएबाक, चुप रहि जएबाक,उत्तर नहि देबाक विकल्प नहि देल जाइ छै।

कोनो पोथी कें पढ़ब, ओकर आस्वादन करब, रसे-रसे ओकर रस ग्रहण करब, ओहि रस मे कखनहु कें ऊब-डूब करब, ओकर लहरि सभ सँ खेलाएब एकटा वैष्णवी प्रक्रिया छिअए। एकरा अनुभूत कएल जाइ छै, ई अव्याख्येय होइ छै आ अव्याख्येय रहि जाएबहि मे एकर आनन्द छै। एकर विपरीत, पोथीक पाठोपरान्त ओकर गुण-दोष, रस-नीरस, आनन्द-क्षोभ आदि कें चिह्नित करब, ओकर व्याख्या करब आ ओकर औचित्य कें विश्लेषित करब एकटा शाक्त-प्रक्रिया छिऐ -- कोनो शल्य-क्रिया, कोनो चीर-फाड़ जकाँ। पोथीक पाठ सँ आनन्दित मन वैष्णवी-प्रक्रियाक पक्षधर होइत अछि। ओ ओहि आनन्द कें निःशब्द राखबाक आकांक्षी होइत अछि। शाक्त-प्रक्रियाक रस्ता तखनि खुलए छै, जखनि पोथी-पाठ सँ पाठकक मन ओहि सँ विलग भेल हुअए, क्षुब्ध भेल हुअए, ओकर अन्तर्वस्तुक कोनो अंश सँ भिन्न तरहें उद्वेलित भेल हुअए, ओकरा जे अपेक्षित रहए, से ओकर ओहि मे नहि भेटल हुअए। मने एहन स्थिति, जेकरा असन्तोष सँ तिलमिलाएब कहल जाइ छै।

कोनो पोथीक नीक लागब अहाँ कें ओकरा संग जोड़ि दैत अछि, अभिन्नताक भाव सँ भरि दैत अछि। ओ अहाँ कें अपन समांग जकाँ लागए लागैत अछि आ अपनहि अंगक शल्य-क्रिया करब केकरा रुचतए? के तैयार हएत एहन अप्रिय आ कष्टदायक काज करए लेल? किन्तु जीवनहि जकाँ साहित्यक क्षेत्र सेहो मात्र प्रिय-प्रिय केर खेल नहि अछि, डेग-डेग पर अप्रिय डेग उठएबाक अप्रिय काज करबाक अनिवार्यता समक्ष होइत रहए छै, करए पड़ए छै।

"अबारा नहितन" पढ़ैत कालक रस अपूर्व रहए। पोथीक पाठक समापनोपरान्त एकरा लेल पहिल प्रतिक्रिया मन मे अभरल रहए "विलक्षण"! हम अहि "विलक्षण"क अव्यक्त आनन्द मे रहि जाएब चाहैत रही कोनो वैष्णव जकाँ। किन्तु सभ किछु लोकक इच्छेक अनुरूप होइत रहितए त जीवन की भेल?

[फ्लैशबैक : 2012-13 : "मिथिला आवाज", दैनिक समाचार-पत्रक सम्पादक रूप मे दरभंगा मे रही। एक दिन योगानन्द जी (डा योगानन्द झा,कबिलपुर) अपन लिखल मोनोग्राम "स्नेहलता" आ केदारनाथ चौधरीक लिखल "अबारा नहितन" एकहि संग दए गेला। कहलनि जे "केदार जी अहाँक जबरदस्त प्रशंसक छथि,बेर-बेर अहाँक लिखल सम्पादकीय सभक चर्चा करए छथि आ कहए छथि जे मैथिली पत्रकारिता कें पहिल बेर ई अत्याधुनिक, प्रगतिशील आ आक्रामक तेवर भेटल अछि। ओ बहुत स्नेह सँ ई पोथी पठएलनि अछि।" सम्पादकीय कर्तव्यक निर्वहनक चलते फुरसतक अभाव रहैत छल। सम्पादक रहैत किनकहु दुआरि पर नहि जाएब, से शपथ सेहो खएने रही। तें ने केदारनाथ जी सँ भेंट संभव भेल आ ने दरभंगा मे रहैत हुनक पोथीएक पारायण कए सकलहुँ। पोथी कें आन-आन पोथी सभक संग सैंति कए राखि देल। अखबार सँ त्यागपत्र दए सुपौल अएलहुँ त पढ़बाक खूब फैलगर आ अहगर समय भेटल आ जकिआएल पोथी सभ कें बेराबेरी पढ़ब शुरू कएलहुं। अहि क्रम मे "अबारा नहितन" पर दृष्टि गेल आ ओकरा पढ़ब शुरू कएलहुँ। पढ़ब शुरू करितहि अहि मे डूबि गेलहुँ आ पढ़ब समाप्त होइतहि मुँह सँ बहराएल "विलक्षण"।

केदार जी सँ कहिओ सम्मुख भेंट नहि छल। "अबारा नहितन" पढ़लाक बाद हुनका सँ भेंट लेल मन लालायित भए उठल छल। 2016 मे "काशीकान्त मिश्र मधुप राष्ट्रीय शिखर सम्मान" ग्रहण करबा लेल समस्तीपुर जएबाक रहए। पोथीए पर सँ नम्बर लए केदार जी कें फोन कएलियनि आ भेंटक अपन इच्छा प्रकट कएलियनि। ओ प्रसन्न भेला, कहलनि जे ओ दरभंगे मे छथि आ हमर प्रतीक्षा करता। मैथिलीक सुप्रसिद्ध गजलगो रामेश्वर पाण्डेय "निशांत (कनैल,मधुबनी) आ कथा लेखिका अलका वर्मा हमर संग रहथि। दरभंगा मे केदार जी सँ भेंट भेल। मार्गदर्शन लेल ओ सड़क पर आबि ठाढ़ रहथि। बंगाली टोलाक हिडेन काटेज मे ओ दुनू परानी मात्र रहथि आ हुलसि कए स्वागत

कएलनि। चाह-ताह भेल, मारिते रास गप-सरक्का भेल आ ओ अपन अद्यतन प्रकाशित सभटा पोथी हमरा भेंट कएलनि। किछु पोथी हमरा सँ आएलहु कें भेटलनि। हम हुनका सँ भेंट कए ततेक आह्लादित आ भावुक भेल रही जे चलबा काल हुनका भावातिरेक मे कहि बैसलियनि जे "हमर रुचि आलोचना कर्म दिस बढ़ल अछि। हम अहूँ पर, अहाँक पोथी पर लिखब आ वचन दए छी जे जा तक अहाँ पर लिखब नहि, हम स्वयं कें मरबाक अनुमति नहि देब"। तेकर बाद सँ एकटा दीर्घावधि बीत गेलए। नाना-जंजाला सभ मे ओझराइत समय ससरल गेलए। मनक स्मृति-पटल पर केदार जीक चेहरा अभरए त अपराध-बोध हुअए। समस्या ईहो रहए जे अहि "विलक्षण" शब्दक भावोच्छवास कें कागज पर उतारबाक लेल कोनो प्रारंभिक सूत्र, कोनो स्पष्ट रूपरेखा मन मे नहि बनि पाबैत रहए। एकर अभाव मे हम कोनो विषयक लेखन मे हाथ नहि लगबए छी। कोनो विषय पर लिखबाक लेल जखनि प्रारंभिक मार्गक दरबज्जा बंद भेटए त आगूक रस्ता केना तै भए सकैछ?

हमर आलोचक-मन भयंकर छिद्रान्वेषी आ आक्रामक अछि। अहि मनोभावक लेखनक कोनो टा स्कोप "अबारा नहितन" नहि दए छै। अहि पोथीक रसास्वादन सँ एकर आकलन तक सभठाम सुकोमल मनक बेगरता छै। ई सुकोमल मन हमरा लग नहि अछि, से बात नहि। किन्तु हमर ई सुकोमल मन संकोची अछि, प्रशंसा कें अपन आंतरिक बोध मानैत अछि आ ओकरा व्यक्त करए मे हिचकैत अछि। दोसर बात ई जे "अबारा नहितन"क चरित नायक महंथ मदनमोहन दास ओहि भूमिहार ब्राह्मण जातिक छथि,जहि मे हमहूँ छी। मैथिल समाज मे भूमिहार ब्राह्मण लोकनिक प्रति जे भयजनित विद्वेष छै, तेकर आकलन हमरा अछि। अहि विषय कें छूअब हमर आक्रामकता कें कोनो सीमा तक लए जाए सकैत छल आ तखनि ओकरा सीमा मे बान्हब बहुत दुरूह आ कठिन काज भए सकैत छल। ई दूटा प्रमुख कारण रहए जे हमरा "अबारा नहितन" पर अपन भावाभिव्यक्ति कें शब्द दए सँ रोकैत रहल,

डरबैत रहल। किन्तु कखनो-कखनो बाहरी दबाव काज कए जाइ छै। जेहन भेल हुअए, "अबारा नहितन" पर लिखबाक काज भए सकल, तेकर प्रसन्नता अछि। संभव जे हुनक पोथी पर लिखबाक हमर ई प्रयास केदारनाथ चौधरी जी कें संतुष्ट नहि करनि आ ओ नाराजगी मे कहि बैसथि "कामचोर नहितन"!

ओ जे कहता, हमरा कबूल हएत।]

परीक्षा मे कथावाचकक असफल भेलाक उपरांत आत्मघातक "सती-क्रिया भावक स्त्रैण निर्णय सँ अहि कथाक आरंभ होइत अछि आ असफलता कें समुद्र-मंथनक उपरांत प्राप्त हलाहल जकाँ कथानायक द्वारा पी जाएब आ कंठ मे रोकि लेबाक "शिव-क्रिया भावक अपरिमेय पुरुषार्थक संग समाप्त होइत अछि। बीच मे अनेकानेक प्रसंग सभ आबैत अछि जे रसक चारू अंग (स्थायी भाव, संचारी भाव, विभाव आ अनुभाव) आ नओ प्रकार (शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत आ शांत) क दर्शन कराबैत कथाक प्रारंभ आ अंत कें संपुष्ट करैत चलैत अछि आ अहि सभक सम्मिलित प्रभाव सँ रचनाकारक गद्यक डंक बहुत मारूक भेल अछि, भने ओ "मैथिल आँखि" लेल प्रत्यक्ष नहि हो। अहि संपूर्ण रचना-क्रम मे रचनाकार जहि प्रकारक चित्रमय गद्य रचए छथि, से अनन्य आ विरल अछि। "अबारा नहितन" मैथिलीक श्रेष्ठ गद्य-रचना सभ मे एक अछि आ एहन "श्रेष्ठ गद्य-रचना"क मात्रा मैथिली मे बहुत अल्प अछि। केदार जीक गद्यक छटा अपूर्व अछि। हुनक गद्यक ठाठ चकित-विस्मित करैत अछि। ई अपूर्व छटा, ई गद्यक ठाठ हुनक चमेली रानी, करार, माहुर, हीना आदि उपन्यास मे सेहो खूब नीक जकाँ प्रकट भेल अछि। अपन विषय-वस्तुक खाँका आ तत्संबंधी हुनक स्मृति तेहन स्पष्ट आ तीव्र अछि जे जखनि पछिला उपन्यासक विस्तार अगिला उपन्यास मे होइत अछि त पछिला उपन्यासक कोनो मामूली आ भुलल-बिसरल सन पात्र अगिला उपन्यास मे खूब जगजियार जकाँ उपस्थित भए

जाइत अछि आ कथा-विस्तारक एकटा अनिवार्य तत्व जकाँ भए जाइत अछि। कथानक कें साधबाक क्रम मे हुनका अपन उपन्यास सभ मे भाषा कें विषयानुकूल साधए पड़ल छनि। किन्तु "अबारा नहितन" मे हुनक गद्यक मनोहारी छटा उन्मुक्त भए अपन पसार कएलक अछि। एकरा पढ़ैत बेर-बेर चार्ली चैप्लीनक सिनेमा सभ आ ओकर प्रस्तुतिकरणक खिलंडर-प्रणाली मन पड़ैत रहैत अछि, जेकर माध्यम सँ हास्य-व्यंग्यक अढ़ मे मनुष्यक आंतरिक वेदना, दर्द आ पीड़ा खूब स्पष्ट आवेगक संग अभिव्यक्त भेल अछि।

"अबारा नहितन" मे अनेक ठाम एहन प्रसंग सभ आएल अछि जेकर अहि कथानकक संग प्रकटतः कोनो तारतम्य नहि बुझाइत अछि, किन्तु ओ सभ अनायास नहि अछि, कथा कें चहटगर-सुअदगर बनएबाक लेल छौंक जकाँ नहि अछि। कथानकक अंत जहि "विफलता" पर होइत अछि, तहि विफलताक जड़ि-मूल आ सूत्र मैथिल समाजक कोन-कोन चरित्र मे उपस्थित अछि, कोन-कोन द्वैध कोनो योजना-परियोजनाक लेल घातक आ विनाशक अछि, के कोनो पौध कें गाछ हएबा सँ पहिनहि ओकरा चिबाए कए उदरस्थ कए लैत अछि, तहि सभ कें उजागर करबा लेल, चिह्नित करबा लेल ओ प्रसंग सभ सहायक होइत अछि, क्रमानुसार आधार तैयार करैत चलैत अछि। स्वतंत्रता प्राप्तिक प्रारंभिक दौर अति-उत्साहक दौर रहए। पराधीनताक संग एकमेक भेल मानसिकताक केंचुल उतारि स्वतंत्रता, क्रांतिकारिता, आधुनिकता आ प्रगतिशीलताक संग तारतम्य बैसएबाक दौर रहए। अहि दौर मे अहि बातक होड़ चलल रहए जे पराधीनताक प्रत्येक रूपक कुप्रभाव सँ मुक्त भए अपन आचरणादि मे शुद्ध वैज्ञानिक भारतीयताक आत्मसातीकरणक प्रविष्टि के कतेक मात्रा मे कए पाबैत अछि। ब्रिटिश प्रभुत्वक अतिरिक्त धर्म, जाति, सम्प्रदाय आ तहि सँ जुड़ल अनेक कर्मकांडीय पाखंडी विधान-परिधानक पराधीनता-चिह्न सभ कें त्याज्य मानल गेल छल आ ओहि क्रम मे अनेकानेक लोक सभ टीक कटाए

लेलनि, जनेउ पहिरब छोड़ि देलनि। ई सभ समाजवादी मानसक प्रतीकात्मक प्रयोग सभ रहए। एकर प्रभाव सँ तत्कालीन मैथिल लोकनि सेहो नहि बचल छला। से मात्र युवे वर्ग टा नहि, स्वतंत्रता संग्राम सँ देखौटी तौर पर जुड़ल बुजुर्गहु सभ अहि प्रभाव कें ग्रहण कएलनि, भने ई जोश स्थायी नहि भए सकल, किछुए दिन तक टिकल। बादक दौर मे जाए कए फरक एतबे टा रहलए जे मैथिलेतर वर्ग त ओहि परिवर्तन सभक संग अभिन्नता राखि आधुनिकता आ प्रगतिशीलताक ड़गर पर आगू बढ़ितहि रहि गेल, किन्तु मैथिल वर्ग ओहि दौरक नशा उतरितहि फेर सँ अपन कर्मकांडीय खोल मे काछु जकाँ वापस घुरि गेल, बल्कि ओहि खोल कें और सक्कत कए लेलक। टीक कटाए कए गाम जाएब आ तेकरा गमछा सँ झाँपने रहबाक प्रसंग इएह आ एहने द्वैध सभ कें उजागर करबाक लेल पोथी मे आएल अछि।

अहिना "उर्दी पर भांग खाएब" आ ओकरा नशा नहि मानब मात्र पात्रगत नहि अछि। ई तहि कालक (कमोबेस आइओ) मैथिल परिवेश आ मानसिकताक सूत्र-चित्रण अछि। मेहनत-मशक्कत करब, उद्यम करब, घाम बहाएब आ तहि पुरुषार्थ सँ अपन आ परिवारक भरण-पोषण करब यजमान लोकनिक काज रहए, पुरहित लोकनिक नहि। पुरहित लोकनिक मानब रहनि जे हुनका श्रम सन घिनाष्टक काज नहि करबाक छनि, हुनक भरण-पोषणक जिम्मेदारी यजमान लोकनिक छनि, तें श्रम करब हुनके सभक काज छनि। पुरहित सभक काज छिअए लोकक जन्म सँ मरण तक विभिन्न कर्मकांडीय संस्कार सभक रचना-स्थापना करब, ओहि संस्कार सभक आयोजन मे उपस्थित भए विकृत उच्चारण मे देवभाषाक किछु मंत्र बुदबुदाए देब, पूजा-पाठ कराए देब आ तदोपरांत दछिनाक रूप मे टका-वस्त्र-अन्नादि प्राप्त कए घर घुरि आएब आ शेष समय मे भांग पीयब, पुष्टांग मात्रा मे भकसब आ फोंफ काटब। "उर्दी पर भांग खाएब" अहि पुरहिती अलसपना, परजीविताक मानसिकता कें देखार करबाक प्रसंग अछि।

एहने एक टा प्रसंग अछि पनबाड़ीक टाट मे कनटिरबाक फँसबाक चलते गिरफ्तार भए जाएब, जेल जाएब आ जेल सँ बाहर आबि नेता-विधायक भए जाएब। जँ इमानदारी सँ शोध हुअए त आजादीक उपरांत एहने सन दुर्घटना, एहने सभ प्रपंच सभक फलस्वरूप स्वतंत्रता-सेनानी बनि गेल, नेतृत्वक कतार मे चलि आएल अनेकानेक नेता सभक पर्दाफाश भए जाएत। देशक प्रत्येक भूभाग मे एहन अनेक रास उदाहरण भेटि जाए सकैत अछि। एकटा उदाहरण त हमरे सुपौलक अछि। एकटा हजाम कांग्रेस आफिस मे आबि नेता सभक केश-दाढ़ी बनबैत रहए। अपन श्रद्धा निवेदित करबाक लेल ओ ई काज मोफत मे करए। स्वतंत्रता-सेनानी पेंशन योजनाक घोषणा भेला पर ओ बिहार सरकारक एकटा लब्ध-प्रतिष्ठित मंत्री कें कहलकनि जे "सरकार! अहाँ सभक एतेक सेवा कएल। ई पेंशन हमरा नहि भेटि सकए छै?" मंत्री कें मसखरी सुझलनि आ ओ अपन एकटा चेला सँ फारम मँगाए हजामक नाम सँ ओकरा भरबएलनि, स्वयं ओकरा रिकोमेंड़ कए पठबाए देलनि। किछुए दिनक बाद आवेदन स्वीकृत भए गेलए। हजाम जी ताम्रपत्रधारी स्वतंत्रता-सेनानी भए आजीवन पेंशन पाबैत रहला। कनटिरबाक कथाक माध्यम सँ स्वातंत्र्योत्तर भारतक ओ कलंकित अध्याय सोझाँ आबैत अछि, जहि मे अनेक जोगारी, अनेक जालसाज मुख्यधारा मे चलि आएल आ अपन सर्वस्व गमैनिहार अनेक संघर्षकर्त्ता लोकनि राष्ट्रीय परिदृश्य सँ बाहर कए देल गेला।

देश पर चीनी आक्रमण, ओहि सँ हताश-निराश भेल देशक मानस आ तद्जनित नेहरूक प्रति जनाक्रोशक चर्चा सेहो कथाक्रम कें आगू बढ़ैबाक लेल मात्र नहि, सोद्देश्य अछि। ई ऐतिहासिक घटना-क्रम त अछिए, एकर माध्यम सँ तत्कालीन भारतीय मानस-भाव प्रकट भेल अछि, किन्तु "अबारा नहितन"क मूल कथाक संग एकर तार सेहो जुड़ैत अछि। ई राष्ट्रीय संस्कार आ मैथिल संस्कारक बीच तुलनात्मक अध्ययन सेहो अछि। चीन सँ

पराजयजनित हताशा आ असहायताक मानसिकता मे रहितहु अहि देशक ई संस्कार अछि जे नेहरूक प्रति अपन आक्रोश बिसरि राष्ट्र उन्नयन लेल, राष्ट्र कें सशक्त बनएबाक लेल राष्ट्रीय चेतनासम्पन्न प्रत्येक भारतीय स्त्री-पुरुष अपन नागरिक कर्तव्यक पालन करैत देशक प्रतिरक्षा-कोष मे अपन यथासंभव योगदान दैत अछि। दोसर दिस अछि मैथिल संस्कार, जेकरा बबुआनी करबाक लेल मिथिला राज्य चाही, से "ममता गाबए गीत"क निर्माण मे कोनो आर्थिक सहयोग त नहिए करैत अछि, ओकर वितरण-प्रदर्शनहु लेल कोनो दैहिक वा भावनात्मक सहयोग दए सँ विरत अछि। विरतहु की अछि, फिल्म निर्माणक रूप मे मैथिलीक लेल एकटा विशिष्ट आ ऐतिहासिक काज भेल अछि, तेकर चर्चा कए दोसरहु कें सहयोग देबाक लेल उत्साहित करबा सँ दूर भावक अभावक मारल एकदम मतिशुन्य जकाँ भेल अछि मुंदहुं आंख, कतहु कछु नाहीं।

"अबारा नहितन"क अध्याय दू आ तीन अहि रोचक कथा-यात्राक बीच कोनो सून-सपट स्टेशन पर ट्रेनक अनपेक्षित ठहराव जकाँ बुझाइत अछि। मिथिला-मैथिलीक एहन कथा सभ कतेकहु बेर कतेकहु लोक द्वारा घोसल गेल अछि, असरहीन भए गेल अछि, मन मे खीझ उत्पन्न करैत रहल अछि। जँ अहि प्रसंग कें बोर करए सँ नहिओ जोड़ी, तखनिओ ई अहि रोचक पोथीक बीच मे एकटा अवांछित व्यवधान जकाँ लागैत अछि। तेकर बादहु अहि दुनू अध्यायक प्रासंगिकता त छैहे पोथीक मूल कथ्यक संदर्भ मे। ई दुनू अध्याय अहि बात कें देखार त करितहि अछि जे अहि मिथिलान्दोलनजीविता सँ जुड़ल लोक सभ जेहन बेदरमतिया आइ छथि, तेहने बेदरमतिया तहिओ रहथि। ओ सभ प्रौढ़ हएबाक लेल तैयार नहि छथि। परिपक्व हएब हुनका सभ कें स्वीकार नहि छनि। बिहार कें मिथिला, भोजपुर आ संथाल आदि में बाँटब त घोर वायवीय आ हास्यास्पद परिकल्पना अछि। ओहिना वायवीय आ हास्यास्पद, जेना भारत आ नेपालक तथाघोषित मिथिला राज्य कें एकहि

ठाम एकत्रित करबाक फूहड़ सपना। ई दुनू अध्याय प्रायः बाद मे क्षेपक जकाँ प्रविष्ट कएल गेल बुझाइत अछि। उद्देश्य दू टा भए सकैत अछि पोथीक किछु पृष्ट बढ़ाएब वा थोड़-बहुत आत्मरति करब आ बेर-बेर प्रयुक्त भेल "मैथिलीक प्रेम-रोग" शब्दावली कें जस्टीफाइ करब। कोनो लेखक लेल अहि दुनू तरहक रोग वा कमजोरी अस्वाभाविक नहि छै। किन्तु केदारनाथ चौधरी अपन लेखनक अन्तर्वस्तु, ओकर कथ्य आ प्रस्तुतिकरण मे बहुत प्रगतिशील छथि, तें ई बात कनी खटकए जरूर छै। अहि प्रसंग कें आठ-दस पंक्ति मे फरिआएल जाए सकैत छल। प्रसन्नताक गप जे "अबारा नहितन"क कथा-वितान आ हुनक व्यक्तिगत जीवन-शैली अहि बातक प्रमाण अछि जे ओ अहि बेदरमतिया मिथिलान्दोलनजीविताक सहरजमीनी यथार्थ कें समय रहैत चीन्हि गेला, अहि मिथकीय सस्सरफानी सँ बचि कए बाहर आबि गेला आ अपन जीवन कें एकर फेर मे व्यर्थ नहि कएलनि।

"अबारा नहितन" घोषित रूप सँ मैथिलीक पहिल फिल्म "ममता गाबए गीत"क निर्माण-यात्राक रोचक कथा थिक। किन्तु अहि पोथीक वितान कवर-पृष्ट पर देल अहि घोषणा मात्र तक सीमित नहि रहि गेल अछि। हमरा दृष्टि मे "अबारा नहितन" मैथिली-समुद्र-मंथन-गाथा अछि, जहि मे देव-दानवलोकनि अपन-अपन हितसाधन, स्वार्थ-साधन आ व्यक्तिगत लोलुपतावश समस्त भौतिक-आधिभौतिक संसाधन-उपादान सभ कें लूटि लेबाक हीतोड़ प्रयास मे लूझल छथि आ अहि मंथन-क्रम मे बहराएल हलाहल देवाधिदेव महादेवक हिस्सा मे छोड़ि दए छथि। देवाधिदेव महादेवक भूमिका मे महंथ मदनमोहन दासक हएब स्पष्ट अछि। अन्य देव-दानव (जे सहोदरा दिति आ अदितिक संतान छथि) कें पाठकजन अपन सुविधानुसार चीन्हि सकए छथि, नामित कए सकए छथि। अहि पोथीक गढ़न होमियोपैथी पद्धति जकाँ अछि, एलोपैथी पद्धति जकाँ नहि। देहक कोनो भाग मे गूड़ (व्रण /

पीज सँ भरल गुलठी) भेला पर एलोपैथी मे ओकर उपचार मात्र शल्य-क्रिया छै। प्रभावित स्थल कें चीर कए पीज बहाए दए छै,किन्तु ई प्रक्रिया पीड़ादायक होइ छै। एकर विपरीत होमियोपैथी मे अहि व्रण कें फोड़बाक लेल मड़ुआ साइजक उज्जर-उज्जर मीठ-मीठ गोली मे मिलाए कए एकटा दवाइ देल जाइ छै हिप्पर-सल्फर। ई दवाइ पेट मे गेलाक बाद भीतरे-भीतर अपन काज करए छै, दर्दक लेश नहि हुअए दए छै, रोगी कें पतो नहि लागए छै आ दिन-रातिक कोनो क्षण मे गूड़ स्वतः फूटि जाइ छै, ओकर पीज बहिकए बाहर निकलि जाइ छै। "अबारा नहितन" एहने मिठका होमियोपैथी गोली अछि, जे बिना कोनो प्रत्यक्ष दर्द, बिना कोनो हिंसक प्रक्रियाक मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रपंचत्रयी व्रण कें फोड़ि ओकर पीज कें बहएलक अछि। ई पोथी शुद्ध गाँधीवादी-सह-होमियोपैथ प्रणाली सँ ओहि पिजहा मानसिकता कें बेनंगन कएलक अछि जे कोनो योजना-परियोजनाक नींव पड़ितहि अहि फिराक मे लागि जाइत अछि जे अहि योजना-परियोजना मे लुटबाक भाँज कतय-कतय छै, कतेक छै आ ओहि मे कतेक सुतारल जाए सकैत अछि, कतेक हँसोथल जाए सकैत अछि। अहि पिजहा मानसिकता लग एतबहु धैर्य नहि छै जे कोनो योजना-परियोजना भविष्य कें ध्यान मे राखि शुरू होइत अछि, तें पहिने एकर अस्तित्व कें सहरजमीन पर उतरए दी, स्वरूप ग्रहण करए दी, स्थापित हुअए दी आ ई जखनि स्वचालित गति पकड़ि लिअए, लाभ कमाबए लागए, तखनि ओहि प्रतिफल मे अपन हिस्सा अपन श्रम वा योगदानक अनुपात मे निर्धारित करी। नहि, एतेक धैर्य नहि। ई धैर्य श्रमजीविक काज छिअए, जन-बोनिहारक काज छिअए, गैर-मैथिलक काज छिअए, दछिनाजीवी मैथिलक नहि। ओकर भाँज बैसि गेलए त ओ मूलाधारहि कें, मूल पूँजीए कें कुतरब-चिबाएब शुरू कए देत कोनो मूस जकाँ। मूसक अपन मजबूरी छै। ओकर दाँत निरन्तर बढ़ैत रहए छै। कोनो वस्तु कें कुतरैत रहबा सँ ओकर दाँतक वृद्धि थम्हल रहए छै। अहि कुतरब मे पसन्दगी-नापसन्दगीक कोनो मापदंड़ नहि छै, जे भेटि गेल,

तेकरे कुतरब। कुतरनाइ बंद करत त ओकर दाँत ओकर मूँह आ देहहु सँ नमहर भए जाएत आ ओ मरि जाएत। मरबाक विकल्प सँ बेसी नीक छै कुतरबाक विकल्प, भने अहि कुतरब सँ आनक जान चलि जाइ। अहि क्षेत्रक इतिहास गवाह अछि, जे "ममता गाबए गीत" संग भेलए, सएह अशोक पेपर मिल, रैयाम आ लोहट चीनी मिल संग भेलए आ सएह "मिथिला आवाज" अखबार संग भेलए। मूषक-संस्कृतिक अनन्त सिलसिला छै, एकर शिकार भेल वस्तु, व्यक्ति, विचार सभक नमहर सूची छै।

ई पोथी संस्मरणक थिक, किन्तु हास्य-व्यंग्य आ चित्रमयताक संग ई अपन परिवेशक पर्यवेक्षण, अन्वेषण, विश्लेषण आ आलोचना त करितहि चलैत अछि, एकटा काल-विशेषक इतिहास सेहो रचैत अछि। अहि क्रम मे कतेकहु चरित्र, कतेकहु प्रवृति अनावरित होइत अछि त कतेकहु अनाम व्यक्तित्वक बलुआही आ सोडावाटरी प्रतिष्ठा-प्रतिमा ध्वस्त सेहो होइत अछि। अचरज नहि जे अहि पोथी आ पोथीकार कें कट्टर मैथिलवादीलोकनि आ हुनकर चिरकुटिया गिरोह मौखिक तौर पर खूब गरिअएलनि। (संभव अछि जे केदार जी पर आयोजित "विदेह"क विशेषांक मे सेहो ओहि खिधांस-गाथाक हुलकी-झलकी देखाइ पड़ए।) खबोत्तर-पीठक स्वघोषित चिरकुटिया मठाधीश लोकनिक पहिल प्रयास ई होइ छनि जे गैर-मैथिल कें किछु विशेष करबाक अवसरहि नहि देल जाए, जँ ओ प्रयास करए त ओकरा हतोत्साहित कएल जाए, ओकर ड़गर कें कंटकाकीर्ण कए बाधा ठाढ़ कएल जाए, येन-केन-प्रकारेण ओकरा कोनो उपलब्धि हासिल करए सँ रोकल जाए आ जं कोनो उपलब्धि हासिल कए लेलक त ओकर अवमूल्यन कए ओकर उपहास उड़ाएल जाए। अहि खबोत्तर-पीठक कबंध मानस कें ई बात बर्दास्त नहि होइ छै जे मैथिलीक विकास, एकर स्थापना, एकर सशक्तिकरण मे आन कोनो जातिक व्यक्तिक योगदान कें पहचान भेटए, ओकरा सकारल जाए आ ओकरा दस्तावेजीकृत कएल जाए। हुनकर सभक ई मानब छनि जे एहन

लोकक मूँह पोछबाक लेल कोनो आयोजन मे जँ कनी काल लेल कोनो आसन दए देल गेलए, मंच पर ओकरा पाग पहिरा देल गेलए, ओकर मौखिक प्रशंसा मे किछु शब्द कहि देल गेलए त ओहि गैर-मैथिल मानुस कें एतबे मे तिरपित भए जएबाक चाही, जनम सोगारथ बुझबाक चाही आ अहि प्रदत्त कृपा लेल खबोत्तर-पीठक स्वयंभू लोकनिक प्रति आत्मा आ हृदय सँ कृतज्ञ हएबाक चाही। लिखित रूप मे कोनो गैर-मैथिलक योगदानक उल्लेखक गप जाए दिअ, कोनो लिखित सूची मे ओकर नामक उल्लेख तक नहि हुअए, तेकरा सुनिश्चित करबाक हर संभव प्रयास ई खबोत्तर-पीठ करैत रहल अछि, करैत आएल अछि। आन जाति मे खास कए जँ भूमिहार ब्राह्मण हुअए, तखनि त अहि खबोत्तरजीवी सभ कें जेना मिर्गी चढ़ि जाइत अछि। जे लोकनि अहि खबोत्तरजीवी तत्व सभक दिनचर्या पर नजरि राखए छथि, तिनका सभ कें ई बुझल छनि जे डा. योगानन्द झा द्वारा कपिलदेव ठाकुर "स्नेहलता"क मोनोग्राम लिखला पर, केदारनाथ चौधरी द्वारा "अबारा नहितन"क माध्यम सँ महंथ मदनमोहन दासक महिमा आ योगदान कें दस्तावेजीकृत कएला पर, बैजनाथ चौधरी "बैजू" द्वारा डा सी पी ठाकुर कें "मिथिला विभूति" सम्मान प्रदान कएला पर वा अजित आजाद द्वारा अरविन्द ठाकुर कें "मिथिला आवाज"क सम्पादक बनएला पर ई खबोत्तरजीवी तत्व सभ मिर्गीक चारू पहरक रोगी वा वृषोत्सर्ग सराध लेल दागल साँढ़ जकाँ केना सनकल रहथि, कोन हद तक रुष्ट-क्षुब्ध भेल रहथि आ एकर प्रतिक्रिया मे केहन-केहन अपशब्द सभ सँ अहि महानुभाव लोकनि कें विभूषित कएने रहथि। ई अलग गप जे मूँहामूँही, आमना-सामनी एना करबाक/कहबाक साहस कि भप्प ने हिनका सभ कें कहिओ भेलनि आ ने हएतनि। भूमिहार ब्राह्मण लोकनिक प्रति हिनकर सभक भयजनित घृणा कतेक तीव्र अछि, तेकर किछु आभास पंडित गोविन्द झा लिखित "मिथिलाक सामाजिक इतिहास" केर असामाजिक अभिव्यक्ति मे देखल जाए सकैत अछि। खबोत्तरजीवी-

सम्प्रदायक अहि कुप्रवृतिक एकटा सकारात्मक आ इजोरिया अर्थ-पक्ष सेहो अछि। हुनकर सभक ई प्रवृति अहि भय सँ उपजल अछि जे धपचट मे भने ओ सभ खबोत्तर हड़पि लेने छथि, किन्तु खतियानी मालिक लोकनिक जागृत होइतहि ई खबोत्तर हुनकर सभक चांगुर सँ निकलि जाएत। ओ सभ अजुका यथार्थ कें बुझि रहल छथि जे आन वर्गक लोक अपन श्रम, अपन पुरुषार्थ आ निरन्तर सशक्त होइत अपन बौद्धिक क्षमताक बल पर हुनका सभ सँ बेसी सबल आ सक्षम छथि आ जँ एक बेर ओ लोकनि अपन सामर्थ्य कें चीन्हि अहि क्षेत्र मे अबरजात शुरू कए देलनि त हिनकर सभक अपन अयोग्यता देखार भए जएतनि आ देखार होइतहि हिनकर सभक वर्चस्व सेहो समाप्त भए जएतनि, छिनाए जएतनि।

"अबारा नहितन"क सर्वाधिक आकर्षक, प्रभावशाली आ उद्वेलक ओ अंश सभ अछि जहि मे महंथ मदनमोहन दास (केदार जीक मदन भाइ) उपस्थित रहए छथि। रचनाकारक उद्देश्य सेहो हुनका अहि रचनाक केन्द्र मे राखबाक अछि आ ओ प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप मे सभ ठाम उपस्थित छथिओ। महंथ मदनमोहन दास, जिनका रचनाकार "मदन भाइ" कहि सम्बोधित कएने छथि, के युवकोचित उत्साह-भाव, पुरुषार्थक समर्पण-भाव, दुख मे द्रष्टाभाव, कर्म मे यज्ञ-भाव आ "कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"क उत्सर्ग-भाव खूब जगजियार भए कए पोथी मे आएल अछि। मदन भाइ अल्पभाषी छथि, जे बाजए छथि से नापि-तौल कए बाजए छथि, हुनक बाजब मे युग-सत्य आ वैचारिक परिपक्वता उपस्थित रहैत अछि आ एकटा धार्मिक-स्थलक प्रधान होइतहु आधुनिकता आ व्यावहारिकताक गुण सँ लैस छथि। जतय कत्तहु लेखक कहए छथि "मदन भाइ मौन रहि गेला", त ओ मौन सेहो अनेक रास गाथा-महागाथा कहि जाइत अछि। मदन भाइ स्थैर्यक प्रतिमूर्ति छथि केहनो स्थिति मे विचलित नहि होइ छथि, समुद्र जकाँ गंभीर रहैत छथि। सामने बलाक चतुर-चलाकी, अवसरपरस्ती, क्षुद्रता आदि हुनका शीशा जकाँ

साफ-साफ देखाइत छनि, किन्तु हुनक पुरुषोत्तम निकृष्टतमहु के "दीन जानी प्रभु निज पद दीन्हा"क भाव सँ क्षमाशील रहैत छनि। अहि पोथीक सम्पूर्ण कथाक्रम मे मदन भाइ एकहि बेर क्रोधावेग मे आबि तमतमाएल छथि, आक्रामक भेल छथि आ से भेल छथि "भिखमंगा" कहल गेला पर। ई क्रोधावेग, ई आक्रामकता स्वाभिमान आ आत्मगौरवक प्रतीक, ओकर प्रकटीकरण अछि। कल्पना करब कठिन अछि जे, जे व्यक्ति एकटा पुनीत लक्ष्य लए कए आगू बढ़ल अछि, अग्रगामी भेल अछि, निर्धारित उद्देश्यक लेल अपन सर्वस्व स्वाहा करबाक साहस राखैत अछि, साहसहि टा नहि करैत अछि, ओकरा क्रियान्वित करबाक लेल उत्तम-अधम सभ तरहक लोकक सहयोग लैत अछि, सहयोगक वांछित-अवांछित मूल्य चुकता करैत अछि, तेकरा कोनो "वृषोत्सर्ग सराधक दागल साँढ़" सन प्रतिगामी-कीट एहन क्षुद्र बात कहबाक पतितपना कए सकैत अछि। किन्तु मैथिल समाज एहन "अकल्पनीय", एहन "पतितपना" आ एहन "वृषोत्सर्ग सराधक दागल साँढ़" सभ सँ भरल अछि। मिथिला(?)क अनेकानेक रत्न, बंधु, सखा, विभूति आ बिड़ला लोकनि मिथिला(?)क गामे-गाम, टोले-टोल अँटल पड़ल अछि, सहसह करैत अछि आ अहि भूमि कें धाँसि-धाँसि, खोधि-खोधि धन्य-धन्य कए रहल अछि। एना नहि छै जे बाबू साहेब चौधरी नहि छथि, ओहो छथि, अँगुरी पर गिनल जाएबला संख्या मे छथि, किन्तु एक त अल्पसंख्यक छथि आ दोसर "वृषोत्सर्ग सराधक दागल साँढ़" सभक बहुमतक गोल सँ घेराएल छथि आ तें एन मौका पर हुनक सभक मूँह मे ताला लागि जाइ छनि, पेट मे मरोड़ पड़ए लागए छनि। ई अल्पसंख्यक बाबू साहेब चौधरी लोकनि गाहे-बगाहे कुपित सेहो होइ छथि। किन्तु कुपित होइ छथि त "मैथिली सखा" लग सँ "मैथिल बिड़ला" लग, "मैथिल रत्न" लग सँ "मैथिल विभूति" लग जाइ छथि, फेर वएह मूँह मे ताला, फेर वएह पेट मे मरोड़ आ एहने व्यर्थ सन तिरपेच्छन मे बाबू साहेब चौधरी लोकनिक जीवनक शक्ति-सामर्थ्य बेजाय

भए जाइत अछि। तिरपित- लोकनिक कबंध-सम्प्रदाय सदी-सदी सँ अहि पावन धरा पर उपस्थित अछि, निरन्तर अपन संख्या-बल बढ़ैने जाए रहल अछि, एकर अक्षौहिणी सेना खोराकी देखितहि ओहि पर धाबा बोलि दैत अछि, देखितहि-देखितहि सभकिछु चाटि-हबकि जाइत अछि, तिरपित नहि होइत अछि, अतृप्तक अतृप्तहि रहि जाइत अछि। मदन भाइ हँसैत कहए छथि "मैथिली भाषा मे जँ तिरपित बाबू कें चरित्र-नायक बनाए कए सिनेमा बनाओल जाइ त केहन फिल्म बनतै? ओ फिल्म अबस्से बाक्स आफिस मे हिट फिल्म हेतैक।" किन्तु मदन भाइ आ केदार भाइ दुनू कें सहरजमीनी मैथिल-यथार्थ बुझल छनि, नहि बुझल रहनि त "ममता गाबए गीत"क निर्मम, श्रमसाध्य निर्माणानुभव दुनू गोटे कें यथार्थ बुझाए देने छनि। मूल जिज्ञासा त ई अछि जे तिरपित कें चरित्र-नायक बनाए कए जे फिल्म बनत, तेकरा बनएबाक लेल त फेर कोनो मदन भाइ अवतरित भए जएता, ई मही बेसी दिन तक वीर विहीन नहि रहए छै, ओकरा वितरित-प्रदर्शित करबाक लेल रवीन्द्र सन कोनो भजारी सेहो चलि अएता, किन्तु ओहि फिल्म कें टिकट कटाए कए देखबा लेल दर्शक कतय सँ आएत? गिनतीक किछु बाबू साहेब चौधरी टिकट कटाए कए सिनेमा हाल मे प्रवेश कए जएता, किन्तु तिरपित-समुदाय कें त फ्रीक टिकट चाही। आ जँ फ्रीए मे सिनेमा देखाएल गेल त बाक्स आफिस पर ओकर हिट हएबाक कोनो रत्तीअहु-भरि संभावना कतय छै? जहि तिरपित बाबूक एन मौका पर अपन जेबी मे हाथ घुसिआबितहि हुनक हाथ फाटल जेबी सँ निकलि ठेहुन पर पहुँचि जाइ छनि, तेकर जेबी भरब मदन भाइ सन अवतारहु सँ संभव नहि अछि। जे गैर-मैथिल मैथिली मे अएता, हुनका चालीस हजारक अनुमानित खर्चक बादहु फेर-फेर चालीस हजारक चोट खाइए पड़तनि, माइक मैन कें बीस टका, ठेला भाड़ाक दस टका, सिनेमा हाल मैनेजर कें सत्तरि टका, प्रोजेक्टर चालक कें पँचटकही आदिक दोहरी भुगतानक अनन्त सिलसिलाक अनन्त बोझा अपन माथ पर

लेबहिए पड़तनि। तिरपित घुरि कए नहि अएता, से संतोष करैए पड़तनि आ अहि सभ लुज्झातिरीक यथार्थ कें बुझितहुँ अपन मुंह सँ हँसीक फुलझड़ी बहराबैए पड़तनि, ठठाए कए हँसैए पड़तनि तमाशा-ए-अहल-ए-करम देखबाक लेल। एतबे धरि किऐ? अपन पूँजी लगाए कए स्टाम्प-पेपर पर रुपैयाक छह आनाक हिस्सेदार उदयभानु सिंह कें बनबैए पड़तनि। जहि रवीन्द्रनाथ ठाकुर कें नोनी लागल देबाल, चालीक भुरभुरी सँ भरल फर्शबला बलभद्रपुर मोहल्ला स्थित माटि सँ लेबल घरक अखरा चौकी पर सँ उठाए कए मायानगरीक चकाचौंध आ सुख-समृद्धिक दुनियाँ देखबए लए जएता, अपन फनकारी देखएबाक अवसर देता, वएह रवीन्द्रनाथ कें लिखित अधिकार-पत्रक माध्यम सँ अपन सभटा कएल-घएल, अपन कीर्ति सौंपि दिअए पड़तनि। मैथिल-कथा हरि-कथा अछि, अनन्त अछि हरि अनन्त, हरि-कथा अनन्ता!

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद जे दौर अएलए, तहि मे विभिन्न दलीय नेतृत्व पर मैथिल लोकनिक वर्चस्व जकाँ रहनि। सत्ताधारी कांग्रेसहि टा नहि, समाजवादी आ वामपंथी दल सभ पर सेहो मैथिलहि लोकनि कब्जा कएलनि। आमजन मे सजगता नहि रहए, मैदान एकदम साफ रहए। अहि शून्य-काल मे मैथिल लोकनि अगुअएला आ खाली पड़ल स्थान सभ पर आसीन भए गेला। राजनीतिक दल जखनि हाथ मे हुअए त व्यक्ति अपना कें परम शक्तिशाली बुझए लागैत अछि आ ओहि शक्तिक प्रदर्शन लेल अतीव व्याकुलता सँ भरि जाइत अछि। ई व्याकुलता विशेष कए मैथिल वामपंथी लोकनि कें गैरकानूनी तरीका सँ आक्रामक आ अतिक्रमणकारी हएबाक ड़गर पर लए गेलनि। हिनकर सभक निशाना पर धार्मिक स्थल सभ सेहो आएल, किन्तु चयनक दोहरा मानदंड़क संग। जहि मन्दिर आदिक बागडोर पुरहित लोकनिक हाथ मे रहए, तेकरा बकसि देल गेल। मूल निशाना बनल महंथाना सभ, जेकर अधिकांश पर भूमिहार ब्राह्मण लोकनि काबिज रहथि।

से अहि छद्म जनेउधारी-वामपंथी लोकनिक वक्र-दृष्टि महंथ मदनमोहन दासक महंथाना पर सेहो पड़ल रहनि आ ई महंथाना हुनकर सभक कर्मकांडीय-क्रांतिकारिताक क्रीड़ाभूमि बनल रहनि। बत्तीस सय बीघाक जिरात स्वतंत्रता प्राप्तिक काल तक आबैत-आबैत एक हजार बीघा तक सिमटि चुकल छल। इलाहाबादक क्वींस कालेजक आधुनिक वातावरण मे रहि शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करनिहार मदनमोहन दास स्वाभाविक रूप सँ आधुनिकता सँ अनुप्राणित रहथि। अंग्रेजी, हिन्दी आ बांग्ला भाषा जाननिहार, पढ़निहार मदनमोहन जी मे युवकोचित उत्साह रहनि, स्वातंत्र्योत्तर भारतक सामाजिक संरचनाक नित बदलैत रूप-स्वरूप पर हुनक दृष्टि रहनि आ तहि संग तालमेल बैसएबाक हुनर आ बुद्धि सेहो रहनि। ई हुनर बहुत मोल माँगए छै। महंथानाक धार्मिक परम्परा सँ आएल मूल मिर्जापुर आ आन-आन जिलाक विभिन्न मौजा मे संचालित मंदिर, ओकर रख-रखाव, नियमित पूजा-अनुष्ठान आ दरिद्र-भोजन आदिक क्रियाकलाप यथावत चलैत रहए, जेकर असीमित खर्च-वर्चक भार अनुमान कएल जाए सकैत अछि। एकरा संग आधुनिक समाज-बोध आ ओकर दायित्व अहि व्यय-भार कें निरन्तर बढ़ैने चलि जाइत रहए। आमदनी वएह, किन्तु खर्चक नव-नव बाट, नव-नव द्वार खुलैत। अहि सभक उपर रेलिजस बोर्डक विभिन्न तरहक प्रतिबंध आ तहि पर उपरोक्त वर्णित वामपंथी लोकनि द्वारा महंथानाक जमीन पर ठाम-ठाम लाल झंडा गाड़ि ओकरा हड़पबाक कृत्य। स्थितिक विकरालताक अनुमान लगाएल जाए सकैत अछि। तखनिओ मैथिलीक हित मे एकटा फिल्म बनएबाक विचार आ तेकरा कार्य-रूप दए मे तन-मन-धन सँ निछावर हएबाक काज वएह व्यक्ति कए सकैत अछि, जेकरा मे आधुनिकता-बोधक संग-संग अटूट साहस, अचल निष्ठा, असीमित धैर्य आ अपरिमित पुरुषार्थ हुअए। अहि सभ अतिमानवीय (सूपर ह्युमैनेटिक) गुण सभ सँ निर्मित छला महंथ मदनमोहन दास। सभटा विरुद्धक सामंजस्य कए ओ फिल्म-निर्माणक

अपन संकल्प कें अपन व्यक्तिगत प्रयास सँ सफल त कए लए छथि, किन्तु जतय सामूहिक सहयोगक मामला आबैत अछि, ततय ओकर अभाव मे ओ असफलताक साक्षी भए जाइ छथि। ई दुख, ई पीड़ा असह्य अछि, किन्तु ओ तेकरहु सहए छथि।

सीताहरण सँ व्यथित राम कलपि सकए छथि। पशु-पक्षी सँ अपन व्यथा-कथा कहि सकए छथि। अनुज लक्ष्मण सँ अपन पीड़ाक बखान कए सकए छथि। किन्तु मदन भाइ अपन व्यथा, अपन पीड़ा केकरा लग व्यक्त करता? बाली राम सँ पुछि सकैत अछि अवगुण कवन नाथ मोही मारा? मदन भाइ ई प्रश्न केकरा सँ करता? हुनक लक्ष्मण हुनका बीचहि मे छोड़ि सैनफ्रांसिस्को उड़ि गेला। जेकरा सँ प्रश्न पुछबाक छनि, ओ एकटा व्यक्ति नहि अछि, विराट समुदाय अछि। तें "ममता गाबए गीत"क निर्माण-क्रमक सभटा अप्रिय अनुभव, निर्माणक बाद "ममता गाबए गीत"क हरणक सभटा व्यथा कें मदनमोहन दासक पुरुषोत्तम समुद्र-मंथन सँ प्राप्त हलाहल मानि देवाधिदेव महादेव जकाँ घोंटि कए अपन कंठ मे रोकि लए छथि।

रावणक कैद मे रहैत सीता कें छोड़एबाक लेल राम सभ संभव प्रयत्न करए छथि। किऐ? किऐ त हुनका अपन समर्थनक भरोस छनि। हुनका लग बानर-सेना छनि जे हुनका लेल तन-मन-धन सँ समर्पित अछि। किन्तु मदन भाइ! ओ अपन सीताक रावणक खतियान मे चलि जाएब कें अपन नियति मानि लए छथि। किऐ? किऐ त हुनका मैथिल समुदायक यथार्थ बुझाए गेल छनि। ओ बुझि गेल छथि जे हुनक पीठ पर कोनो सैन्य-दल नहि, परजीवी कीटाणु-विषाणु सभक हेंज अछि आ ओकरा भरोसे ओ जेतबे लड़बाक प्रयास करता, तेतबे क्षीण आ अबल होइत जएता।

हुनक व्यक्तित्वक उच्चताक ई पराकाष्ठा छै जे पत्रकारक खोध-बीन पर जखनि ओ केदार जी कें कहए छथि, " केदार भाइ, पछिला तीन-चारि बर्ख सँ हम-अहाँ नित्य एक ठाम बैसैत छी, गप्प-सप्प करैत छी। तथापि हम

अहाँक लग "ममता गाबए गीत" फिल्मक चर्चा नहि केलहुँ। अहाँक चोखायल घावक पपड़ी मे टकुआ भोंकैक इच्छा हमरा नहि भेल।------"

धन्य! धन्य!

एतेक भेलहु पर मदन भाइ कें अपन चिन्ता नहि, केदार भाइक चोखायल घावक पपड़ी उखड़ि जएबाक चिन्ता छनि।

पोथी समाप्त होइत-होइत संवेदनशील पाठकक माथ पर ओहि व्यक्तित्वक समस्त आंतरिक पीड़ा सवार भए जाइत अछि, और घनीभूत भए जाइत अछि, जेकरा केन्द्र मे राखि ई पोथी लिखल गेल अछि। अहि कृतिक सभटा पात्र अपन-अपन भूमिकाक निर्वहन करैत नेपथ्य मे विलीन भए जाइ छथि आ "द एण्ड" रूप मे महंथ मदनमोहन दास जीक अतिमानव छवि स्थिर आ स्थायी रूप मे संरक्षित रहि जाइत अछि। कहबाक लेल ई "द एण्ड" हुअए, किन्तु असल मे ई शुरुआत अछि, "द बिगनिंग" अछि। आशावादी आ पुरुषार्थी लोकनि अहि बात सँ सहमत हएता।

दुनियाँ मे सभ काज श्रेयहि लेबाक लेल नहि कएल जाइ छै।

गंगा-स्नान कए, "हर-हर-गंगे"क नारा दए अपन-अपन पाप धोनिहार कतेक लोक भगीरथ आ हुनक पुनीत प्रयास कें मन राखैत अछि? जे निष्पाप छथि, ओ गंगा नहिओ नहएता, तखनिओ भगीरथ हुनकर स्मृति मे रहतनि।

(१५ अगस्त २०२२)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

मैथिली उपन्यासक 'केदारनाथ युग'

1

मैथिल जाति अधिकांशत: द्वैधमे जीबए बला जाति अछि। एक बात, एकमत, एक डारिपर रहब एहि जाति लेल कठिन। हम अपन एकटा व्यंग्यमे लिखने छी जे मैथिल किए पंच देव उपासक छथि। मैथिल बहुदेवक उपासना करै छथि मुदा हुनका एकौ देवक आशीर्वाद सहीसँ नहि भेटि पाबै छनि। देवो सभ सहिए करै छथिन। ओहो सभ बुझै छथि जे ई मैथिल सभ सभहक घर पकड़ने अछि आ हरेक घरमे जाइते देरी दोसरक बुड़ाइ करिते अछि। तँइ देवतो सभ चलाक भऽ गेल छथि।

मैथिलक एकटा द्वैधक उदाहरण ई अछि जे जखन कोनो विद्यार्थी गुलशन नंदाक उपन्यास पढ़ैत पकड़ल जाइत छै तखन ओकरा उच्चतम सजा देल जाइत छै मुदा जँ वएह विद्यार्थी गुलशन नंदाक उपन्यासपर बनल फिल्म देखैत छै तँ ओकरा कमसँ कम सजा भेटैत छै आ ओकर गार्जियनो ओहि फिल्मकेँ देखैत अछि। जानकार लोक जानै छथि जे राजेश खन्नाकेँ सुपरस्टार बनेबाकमे गुलशन नंदाजीक उपन्यास, कथा एवं आइडिया छनि। आराधना नामक फिल्ममे राजेश खन्नाक डबल रोल गुलशन नंदाक आइडियासँ संभव भेलै। गुलशनजीक उपन्यास आ कहानीपर बनल किछु हिट फिल्म लिस्ट एना अछि "काजल" (1965), सावन की घटा" (1966), "पत्थर के सनम"(1967), "नील कमल" (1968), "खिलोना" (1970), "कटी

पतंग" (1970), "शर्मीली" (1970), "नया ज़माना" (1971), "दाग़" (1973), "झील के उस पार" (1973), "जुगनू" (1973), "जोशीला" (1973), "अजनबी" (1974), "भंवर" (1976), "महबूबा" (1976) आदि आदि जे कि विभिन्न कलाकारक अभिनयसँ सजल अछि (सोर्स-विकीपीडिया एवं जानकीपुल)।

हिंदी फिल्ममे आनो भाषक रचनापर फिल्म बनल छै जेना विमल मित्रक उपन्यासपर 'साहब बीबी और गुलाम' जाहिमे गुरूदत्त आ मीना कुमारी मुख्य भूमिका छलनि।, रवीन्द्रनाथ टैगोरक काबुली वाला जाहिमे बलराज साहनी छलाह। केशव प्रसाद मिश्रजीक उपन्यास 'कोहबर की शर्त'पर 'नदिया के पार' बनलै आ एही नदिया के पार केर रीमेक अछि 'हम आपके हैं कौन'। एकर अतिरिक्त बहुत रास रचनापर फिल्म बनल अछि। मुदा हरेक रचना फिल्म बनेबाक लेल उपयुक्त नै होइत छै। प्रेमचंद जीक रचनापर सेहो फिल्म बनल छै मुदा ओ लोकप्रिय नै भऽ सकलै।

लोकप्रिय किए ने भऽ सकलै तकर अनेको कारण भऽ सकैए मुदा एकटा कारण प्रमुख ई अछि जे हिंदीमे कोनो लोकप्रिय रचनाकेँ साहित्य मानले नै जाइत छै। हिंदीमे कननी-खिजनी बला रचनाक दर्जा प्राप्त छै। ओहि ठाम रचनाक मतलबे बूझल जाइत छै जे लेखक केहनो हो मुदा जँ ओकर रचनामे घाम ओ लाल झंडा लिखल छै तँ ओ लेखक भेल। एकर प्रभाव आन प्रांतीय भाषापर सेहो पड़ल जाहिमे मैथिली प्रमुख अछि।

हिंदीक कमलेश्वर फिल्म नगरीमे बसल रहलथि आ 'कितने पाकिस्तान' लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलनि। मनोहर श्यामजोशी जी हिंदी सीरीयलमे मानक स्थापित केलाह आ संगहि साहित्यकार सेहो रहथि। उर्दूक क्रांतिकारी कथाकार सआदत हसन मंटो फिल्म कथा लिखबाक काजसँ जुड़ल छलाह। उर्दू समेत आन सभ भाषामे लोकप्रियता ओ गंभीरता केर झगड़ा नै। ई बहस हिंदीमे छै आ ताही ठामसँ मैथिलीक साहित्यकार लऽ लेलाह अपन अयोग्यता

नुकेबा लेल।

2

मैथिली लग बहुत एहन 'लोकप्रिय मुदा गंभीर' रचना छै जाहिपर लोकप्रिय फिल्म बनि सकैए। एहिमे कथा, उपन्यास एवं आन विधा सभ अछि। किछु उदाहरण एना अछि- योगानंद झा (सीनीयर) केर कथा 'आम खयबाक मूँह', हरिमोहन झाजीक सभ रचना (प्रसंगवश कहैत चली जे 2010 मे रिलीज भेल अजय देवगन ओ परेश रावल केर फिल्म 'अतिथि तुम कब जाओगे' केर फर्स्ट हाफ हरिमोहन जीक 'विकट पाहुन' केर बहुत लगीच छै। जँ मैथिली लेखक सभ साकांक्ष रहितथि तँ कोर्ट जा कऽ हरिमोहन जीकेँ क्रेडिट दिया सकैत छल मुदा एहिठाम तँ सभकेँ अपन क्रेडित लेल चिंता छै)। ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'जीक सभ उपन्यास जे कि लोकगाथापर आधारित अछि, मनमोहन झा (सीनियर) केर सभ रचना, प्रभास कुमार चौधरीजीक सभ कथा-उपन्यास, गजेन्द्र ठाकुरजीक सभ कथा-उपन्यास आ संगे राजदेव मंडलजीक सभ उपन्यास फिल्म लेल उपयुक्त छनि। "रंजना" ई उपन्यास छनि लेखनाथ मिश्रजीक जे कि लगभग 1970 मे प्रकाशित भेल रहै। ई उपन्यास फिल्म ओ सीरियल दूनू लेल उपयुक्त अछि। एही क्रममे राजकमल चौधरीजीक-ललका पाग (एहि कथापर बनलो छै), किरणजीक-मधुरमनि, शिवशंकर श्रीनिवास जी कथा-सिनुरहार, प्रदीप बिहारीजीक कथा-सरोकार, श्याम दरिहरेजीक कथा-बिअहुती नूआ, अशोकजीक कथा- डेरबुक, अरविन्द ठाकुरजीक कथा-विष पान ई सभ कथा फिल्म लेल उपयुक्त छै। तेनाहिते लल्लन प्रसाद ठाकुरजी नाटक सेहो उपयुक्त छै।

कोन रचना फिल्म लेल उपयुक्त छै आ कि नै छै से जनबाक लेल हम एकै रचनाकारक दू कथाक नाम दऽ रहल छी, से पढ़ि बूझि जेबै जे फिल्मक लेल कोन रचना नीक कोन नै नीक। ई दू रचना थिक राजकमल चौधरी जीक- पहिल रचना भेल 'ललका पाग' आ दोसर रचना भेल 'साँझक गाछ'।

उपरमे हम जतेक नाम देलहुँ ताहिमे एकटा आर नाम अछि आ से छथि- केदारनाथ चौधरी।

3

मैथिलीमे केदारनाथ चौधरीजीक आगमन फिल्मक माध्यमे भेल, फिल्मे लेल भेल। आ तँइ हिनकर रचनामे ओ सभ तत्व सायास-अनायास चलि अबैत अछि जे कि फिल्म लेल अनिवार्य छै।

जेना कि हम पहिने लिखलहुँ जे लोकप्रियता एवं गंभीरता एकै बातकेँ कहबाक दू तरीका अछि। तँइ जे आलोचक लोकप्रिय पोथीकेँ अगंभीर मानि लै छथि से अनिवार्य रूपें केदारजीक रचना पढ़थि। चमेलीरानीमे जतेक राजनीतिक यथार्थ निकलि कऽ आएल छै तकर चौथाइयो यथार्थ कोनो कथित 'गंभीर' रचनाकारक रचनामे नै अछि। गूढ़ दर्शनक सरल रूप पहिल बेर मैथिलीमे आएल सेहो केदारजीक रचना 'करार'मे। वास्तविकता ई अछि जे मैथिलीमे अधिकांश लेखक अपनाकेँ सुपीरियर मानि लैत अछि। ओकरा अपनामे कोनो कमी नै देखाइत छै। आ तँइ ओकरा लग जखन कोनो एहन रचना अबै छै जाहिमे मात्र अपनापर, अपन असफलतापर हँसल गेल हो, ओकरा सार्वजनिक कएल गेल हो तँ ओहन रचनासँ ओ सभ दूरी बना लैत छै। दूरी बनेबाक कारण ई जे ओहि रचनाकेँ पढ़ि ई तँ बुझा जाइत छै एहन कमी हमरोमे अछि मुदा से स्वीकार करबाक ओकरामे क्षमते नै छै। दोसर बूझि जेतै तँ फेर साधारण जनता ओ 'कवि'मे अंतर की रहतै। आ इएह कारण छै जे अपनापर हँसि, अपन असफलता केर कथा जखन केदारनाथजी 'अबारा नहितन'मे लिखला तँ एक बेर फेर कथित प्रगतिशील सभ ओकरा लोकप्रिय कहि टारि देलक।

केदारजीक रचनाक बहन्ने सभ कथित प्रगतिशील आलोचककेँ ई विचार करबाक चाही जे कथित गंभीर ओ प्रगतिशील रचना लेल पाठक किए ने छै? एहन आलोचक सभ ई कहि सकै छथि जे पाठक लेल अवांछित रचना नै

एबाक चाही। ईहो बात ठीक मुदा आलोचकक काजे छै अवांछित तत्वक ताक-हेर करब। आ से ओ आगू बढ़ि केदारजीक रचनाकेँ खराप साबित करथि। दिक्कत की छै? हमरा बहुत बेर लगैए जे मात्र चौंकाउ बात कहि देब 'कथित प्रगीतशील रचना' केर मानक अछि। जखन कि सरल बात कहैत रचना (से ओ बात कतबो नीक किए ने हो)केँ खराप मानि लेल जाइत छै।

मैथिलीमे तँ ई हाल छै जे 'बिकाएब साहित्य केर पैमाना नै छै' सन नारा देबए बला कचरा लेखक सभ हमर पोथी पढ़ू कहि पाठककेँ जबरदस्ती किनबाक लेल कहैत छै ठीक ताही मैथिलीमे केदारोनाथ चौधरी सन लेखक छथि जिनकर पोथी पाठक ताकि कऽ कीनि लैत अछि।

एहनो नै छै जे केदारनाथजी रचना सभ अकाससँ खसल छै आ ओहिमे कोनो कमजोरी नै हेतै फेर अहीठाम प्रश्न उठैत छै जे कोन भाषाक कोन लेखक केर रचना बेदाग रहैत छै (छान्दिक रचना छोड़ि, कारण छान्दिक रचनामे पहिल अनिवार्य तत्व छन्द छै)। पाठक अपन-अपन अनुभव केर अधारपर केकरो नीक वा खराप कहैत छै। आ तँइ जतेक महान यात्रीजीक रचना वा ललितजीक उपन्यास, वा धुमकेतु सहित मायानंद मिश्रजीक उपन्यास अछि ततबे महान केदारनाथ चौधरीजीक उपन्यास सेहो अछि। केदारनाथजीक उपन्यास अपन कालखंडकेँ गंभीरता ओ बिक्री दूनू मानकपर अतिक्रमण कऽ देने अछि।

आ अही कारणसँ.....

हम मैथिली उपन्यासमे 2004 केर बाद बला समयकेँ "केदारनाथ युग" कहबाक अभिलाषी छी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

गजेन्द्र ठाकुर

केदार नाथ चौधरी- हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ

मैट्रिकक परीक्षामे फेल भेलाक बाद सुगम स्थल एकमी पुलसँ बागमतीक प्रचण्ड वेगमे कूदि प्राणत्याग करबाक निर्णयमे शुद्ध देसी घीमे छानल जिलेबी-कचौड़ीक सुगन्धो व्यवधान नै दऽ सकल हँ मुदा ई निर्णय भेल जे आत्महत्यासँ पहिने एक तोड़ जिलेबी-कचौड़ी खा लेल जाय।

आ भोजनालयमे जिलेबी-कचौड़ी खाउ आ एकमी पुल जाउ आ बात खतम।

मुदा ओतऽ खट्टर ककाक सहोदर छोटका कका विद्यमान छथि। फेर बैकग्राउण्ड जे देश स्वतंत्रो आ गणतंत्रो भऽ गेल रहै, ओइ समयक घटना छी।

फेर जे दू टा मे सँ एक गोटे बियाहलो छला, घटानाक समय पहिने देल अछि से बालविवाह आदिबला मामिले खतम।

आ फेर संगीक मामाजी एला। आब ओ तेहेन रोजगारमे भागिनकेँ लगेथिन्ह जे ओ टाकाक मोटरी बापकेँ पठेथिन। माने आतम्हत्याक तँ मामिले खतम। ओ बिदा भेला हाबड़ा आ आत्मकथात्मक शैलीक उपन्यासक "हम" बिदा भेला गाम। पहिल अध्याय समाप्त।

दोसर अध्यायमे एम.ए. अर्थशास्त्र पास भऽ गेला अपन "हम"। आ फेर प्रवेश भेल इंगलैण्डसँ पी.एच.डी. कयल प्रबुद्धक, दोसर अध्याय समाप्त। एते जल्दी समाप्त नै होइ छै मुदा जइ हिसाबे पहिल अध्याय चललै तहिना दोसर सेहो चलल हेतै तकर अंदाजा भऽ गेल हएत। "मिथिला" पत्रिकाक चर्च आ सेहो लिखल जे मिथिले जकाँ काहि कटैत छल ओकर कागत आ आखर।

तेसर अध्यायमे कलकत्तामे जीविकोपार्जन शुरू। चारिम अध्यायमे जानकी नन्दन सिंह गिरफ्तार आ इंगलैण्डसँ पी.एच.डी. कयल, सम्भवतः नै सत्ये-लक्ष्मण झा प्रसिद्ध लखन झा, कैँ भुइयाँक लोकक ठोकल बात कहब। आ अपन "हम" प्रस्थान केलथि महंथ मदन दास जीक डेरा। माने असली खेला शुरू।

अध्याय पाँचमे मैथिली लेल काज आ ओइ लेल फिल्म-निर्माण आ ओइ लेल पूँजी संग नौकरीसँ इस्तीफा देमऽ पड़तन्हि अपन "हम"कैँ।

१९३६मे जन्म आ १९६१ क ई गप्प, गदह-पचीसी बला समै। नोकरीसँ इस्तीफा, अध्याय छ समाप्त।

अध्याय ७ मे बम्बइ आगमन।

अध्याय ८ फिल्मी स्टाइलक परमानन्द चौधरी। आब फिल्मक पौराणिक कथानक हुअय आकि सामाजिक तइपर घमर्थन।

अध्याय ९ फिल्मक पटकथा तैयार। गीतकार भेला रवीन्द्र। गीत गेता के? लता आ रफी केर फीस तीन हजार टाका प्रति गाना। सुमन कल्याणपुर दू गीतक फीस लेलनि चौदह सय टाका आ हुनकर पति रसीद देलखिन्ह तीन सय टाकाक। गीता दत्त दिन-रति नशामे बुत्त, पति गुरुदत्तसँ समस्या रहन्हि, बादमे गुरुदत्त आत्महत्या कऽ लेलनि, पाँच दिनमे गाना टेक केलनि गेता दत्त।

म्यूजिकक कुल खर्च १४ हजार टाका। फणीश्वर नाथ रेणु मैथिलीमे फिल्म बनबाक सूचनासँ भाव विह्वल भऽ गेला।

अध्याय दस राजनगरमे सूटिङ्ग।

अध्याय एगारह २ मास तेरह दिनुका बाद सूटिंग समाप्त, अल्मुनियमक २० पेटीमे फिल्मक निगेटिव लऽ कऽ "हम" आ मदन भाइक बम्बइ प्रस्थान।

अध्याय बारह फिल्म मात्र अदहासँ कनिये बेशी बनल अछि, तइ सूचनासँ हड़कम्प।

अध्याय तेरह पाँच टा एडिट कयल रीलक सङ्ग कलकत्ता आगमन। गणेश टॉकीजमे एकर प्रदर्शन भेल आ "भरि नगरी मे सोर, बौआ मामी तोहर गोर" सभकेँ भाव-विभोर कऽ देलक।

अध्याय चौदह अमेरिकन विश्वविद्यालयमे अपन "हम" एडमिशन लेल चयनित होइ छथि।

अध्याय १५ मे १९७७ मे भारत घुरै छथि। रवीन्द्रनाथ ठाकुर केदारनाथ चौधरीसँ राइट लऽ कऽ फिल्म पूरा करबेलन्हि, ई प्रदर्शितो भेल, ओ नीक नफा कमेलनि।

जे गप ऐ पोथीमे नै लिखल अछि से ई जे ई फिल्म दूरदर्शनपर सेहो एकाधिक बेर देखाओल गेल।

तँ आब बुझिये गेल होयब जे ई कोनो उपन्यास नै, ऐमे कोनो स्थान-पात्रक काल्पनिक हेबाक कोनो कैप्शन नै लागल अछि। मुदा हरिमोहन झा केर "ग्रेजुएट पुतोहु" सन एकर अन्त मार्मिक कोना भऽ गेल। आ उपन्यास छी की? सभक जिनगी उपन्यासे तँ छी, सभ आत्मकथा लिखै जाउ आ उपन्यास

बनैत जायत।

तँ ई आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल पोथी छी, एकर "हम" छथि केदारनाथ चौधरी। मैथिली आ मिथिलाक नामपर होइबला कार्यक्रमक रस्तो सँ लोक किए भागि जाइ छथि, ई तकर कथा थीक।

आ यएह कारण छी जे केदारनाथ चौधरी जीक समस्त साहित्यकेँ हम प्रतियोगी परीक्षार्थी सभ लेल अनिवार्य रखने छी। रवीन्द्र नाथ टैगोरक बाल नाटकक साहित्य अकादेमी जे मैथिली अनुवाद केने अछि तकर मंचन तँ बच्चाक बापो नै कऽ सकत। जे जतबी भऽ रहल छै से ई नाट्य-साहित्यिक-मिथिला-अभियानी संस्थे सभ कऽ रहल छै- तेँ सभ सही, ई तर्क हमरा स्वीकार्य नै।

ई उपन्यास आत्मकथात्मक आ संस्मरणात्मक केर श्रेणीमे अबैत अछि।

जँ अहाँ अपन जिनगीकेँ "सूट" कऽ सकी तँ अहाँकेँ लागत जे लेन्ससँ देखल जिनगी बेशी मारुख होइ छै। रंगमंचसँ फिल्ममे आयल कलाकारकेँ आँखिमे नोर आनैले ग्लिसरीन नै लगबऽ पड़ै छै। अहाँकेँ लागत जे खाली रोडपर बर्खामे हम जे ड्राइव कऽ रहल छी, से लेन्ससँ सूट केलापर "सिनेमाक हीरो" सन हम भऽ जायत। मुदा हम धैनसन ओकरा कोनो मोजर नै दै छी। हमरा विचारे प्रतियोगी परीक्षार्थीये नै वरन् साहित्यकारो सभकेँ ई पोथी सभ पढ़बाक चाही। हम तँ सभकेँ सलाह दै छियन्हि जे सभकेँ फोटोग्राफीक कोनो "समर कोर्स" अवश्ये करबाक चाही। एकटा आर सलाह हम लोककेँ दैत छियन्हि जे आइ-काल्हि मोबाइलमे कैमरा आबि गेल छै, अहाँ प्रतिदिन ५-१० मिनटक वीडियो रेकार्डिंग करू, दुनियाँकेँ चौखुट, आयताकार, त्रिभुजीय आदि फ्रेममे देखू आ अनुभव करू जे कोनो भरिगरो विषय लोक केना नीकसँ बुझैत अछि। भौतिकी विज्ञानक प्रोफेसर फेनमेन (फेनमेन्स लेक्चर्स) ऐ लेल प्रसिद्ध अछि,

फिजिक्सकेँ रुचिगर ढ़ंग सँ पढ़ेबा लेल। आ एतऽ तँ तेहेन भूप सभ छथि जे "फिक्शनो" "फिजिक्स" सन लिखैत छथि।

कला फिल्म कियो किए नै देखैत अछि, कारण लेखक-निर्देशककेँ होइ छै जे कला फिल्मक सब्जेक्ट मात्र ओकरा पुरस्कार दिया देतै। वास्तविकता ई छै जे कला फिल्म सेहो हिट होइ छै, "द कश्मीर फाइल्स" फिल्म डोक्यूमेण्ट्री-फिल्म भेलाक बादो हिट भेलै, कारण डाइरेक्टर आ स्क्रिप्ट राइटर बेइमान नै छलै, सिण्डलर्स लिस्टमे "पोलिस" सभ कहै छै "गो ज्यू, गो" तकर माने ओ एकतरफा चित्रण भेलै? आ आब हम एकटा नीक लोक जे पोलिस (पोलेण्डक) छथि तकरा आनी आ स्क्रिप्टमे घुसाबी। ने १८० मिनटक (विदेशमे १०० मिनटक) फिल्ममे सभ बौस्तु देल जा सकैए ने सय-सवा पन्नाक संस्मरणमे। कियो कहि सकै छथि जे केदारनाथ चौधरी फिल्म छोड़ि कऽ चलि गेला, रवीन्द्र नाथ ठाकुर ओकरा पूरा केलन्हि। मुदा ई पोथीयो तँ सएह कहि रहल अछि।

सरल भाषा लेल बेशी प्रतिभा चाही। ऐ छोटसन पोथीमे छथि मिथिला अभियानी, जिनका सभ आदर करै छन्हि मुदा सएह टा। मैथिलक सभ संस्थामे जे हाल छै सेहो भेटत तेँ की लोक जुआ छोड़ि पड़ा जाय। नै, मुदा अहाँ अपनाकेँ फ्रेममे देखू, कोन काज लेल अहाँ बनल छी।

मुदा केदारनाथ चौधरीक कलममे जे धार छन्हि से मात्र प्रतिभाक कारण नै छन्हि। ओ जे अनुभव बम्बइमे लेलन्हि, जे फ्रेममे "सूट" आ "एडिट" करबाक कला सिखलन्हि-देखलन्हि, से हुनकर सभ रचनामे देखाइत अछि। लोक "सूट" करैत रहि जाइ छथि आ "एडिट" करबा कल कम-बेशी भऽ जाइ छन्हि।

रचनामे धार अछि, धरगर बला धार आ बहैबला धार, दुनू। आ तेँ संस्मरण

उपन्यास बनि गेल अछि।

अनुलग्नक: विदेह सदेह ३२ मे (ऐ लिंकपर उपलब्ध http://videha.co.in/new_page_89.htm) संकलित श्री शैलेन्द्र मोहन झा जी केर रचना, देखू केना नव-पीढ़ीमे "ममता गाबय गीत" लेजेण्ड बनि गीतमे पैसि गेल अछि।

शैलेन्द्र मोहन झा

सौभाग्यसँ हम ओहि गोनू झाक गाम, भरवारासँ छी, जिनका सम्पूर्ण भारत, हास्यशिरोमणिक नामसँ जनैत अछि। वर्तमानमे हम टाटा मोटर्स फाइनेन्स लिमिटेड, सम्बलपुरमे प्रबन्धकक रूपमे कार्यरत छी।

सपना

सुतल रही दुपहरियामे तँ देखलौ हम एक सपना
भयल विवाह हमर यै भौजी कनिया चान्द के जेना
हम्मर, टुटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे...

जहन भेँट भेल हुनकर हम्मर, भेलहुँ हम प्रसन्न
देखि कऽ हुनकर रूप हे भौजी, भय गेलौँ हम दङ
नाम पुछलियनि हुनकर हम तँ कहलनि ओऽ जे रजनी

स्वप्न सुन्दरी ओऽ बनि गेलि हम्मर हृदयक रानी

हमरा पुछली कहु हे साजन केहन हम लगै छी?
हम कहलियनि सुनु हे सजनी आहाँ चान्द लगै छी
चन्दामे तँ दागो छञि, आहाँ बेदाग लगै छी
आँखि अहाँक ऐश्वर्या जेहन नाक अछि जुही चावला
केश अहाँक अछि नीलम जेहन गाल वैजन्तिमाला

एहि के बाद पुछलियनि हमहू केहन हम लगै छी?
कहय लगलि खराब छी, छी अहूँ ठीक-ठाक
लेकिन एहि यौवनमे साजन भेलहुँ कोन टाक*
कनिक लगै छी सन्नी जेना, किछु-किछु राहुल राय
किछु-किछु गुण गोविन्दा बाला, यैह अछि हम्मर राय

तहन कहलियनि चलु हे सजनि घुरए लेल दरभंगा
आहाँ लेल हम सारी किनब, अपनो लेल हम अंगा
दू टा टिकट अछि उमा टाकीजक, अगले-बगले सीट
दुनू गोटे बैस कऽ देखब **"ममता गाबय गीत"**
हुनक हाथ लेल अपन हाथमे उठि विदाय हम भेलहुँ
हुनक हाथ लेल अपन हाथमे उठि विदाय हम भेलहुँ
तखने जगा देलक पिंटूआ, तखने जगा देलक पिंटुआ***, नीन्दसँ हम उठि गेलहुँ
हम्मर टूटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे.....

*= हमर केश किछु बेशी कम अछि

****= प्रसिद्ध मैथिली सिनेमा**

***= हमर छोट भाई

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

अर्चना चौधरी

हमर पिता: श्री केदारनाथ चौधरी

हम अत्यंत सौभाग्यशालिनी छी जे हमरा सर्वश्रेष्ठ पिता भेटलाह। ओ हमर पिता मात्र नहि अपितु हमर शिक्षक, हमर मार्गदर्शक एवं प्रिय मित्र छथि। नेनपनक अधिकांश समय, हम हुनकहि संग बितौलहुँ। थोड़ेक शब्दमे हुनकर व्यक्तित्वक संबंधमे लिखनाइ कठिन अछि।

हमर पिता जीक व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली छनि। अपन साफ मन एवं सरल स्वाभावक कारणे ओ सहजहि सभसँ मित्रवत् भऽ जाइत छथि। हुनकर संग रहि हम जीवनक विभिन्न आयामकेँ नीक जकाँ बुझलहुँ। कोनो कठिन समयकेँ शांत रहि, संयमसँ पार पाबी से हुनकहिसँ सिखलहुँ।

हमर शिक्षामे हुनकर बहुत पैघ योगदान छनि। नेना सभकेँ शिक्षा संग उचित संस्कार देब हुनकर लक्ष्य छलनि। जीवनकेँ सकारात्मक रूपे देखबाक प्रेरणा हमरा हुनकहिसँ भेटल।

हमर पिताजी अपन मातृभाषा मैथिलीक सेवा, प्रचार एवं प्रसारमे सेहो अपन योगदान कय रहल छथि। मैथिली लेखनक एकटा नव रूप प्रस्तुत केलनि जे

मनोरंजक एवं प्रेरणादायक अछि। मैथिल समाज द्वारा हुनकर प्रयासकेँ सराहना एवं सम्मान भेटि रहल छनि से देखि हम गौरवान्वित छी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

डॉ कैलाश कुमार मिश्र

केदारनाथ चौधरी रचित मैथिली उपन्यास: करार (पोथी समीक्षा)

आजुक कालखण्ड मैथिली साहित्य लेखन आ मुद्रण लेल स्वर्णिम अछि। साहित्यक विविध विधा, विशेष रूप सँ पद्य मे त' क्रान्तिक शंखनाद भ' रहल अछि। सर्वोत्तम बात ई जे अहि क्रान्ति केर सहयात्री केबल पुरुखे नहि मैथिलानी सेहो छथि। अगर एहि क्रान्ति सं कियोक पिछडल छथि त' गंभीर पाठक। ओना कोनो पाठक नहिये जकाँ मैथिली पढ़ैत छथि? अधिकांश पोथी पर समीक्षा पढ़ब त' लागत जेना पेड समीक्षा पढ़ैत होई। किछु-किछु समीक्षा मित्रता हेतु एक्सचेंज ऑफर जकाँ अथवा 'अहाँ हमरा नीक कहू हम अहाँ कें नीक कहब' एहनो मनोवृत्ति सँ लिखल रहैत छैक। जे साहित्यकार नहि छपा सकैत छथि, से सब सोशल साइट पर अपन साहित्य पोस्ट क' लेत छथि। एहि तमाम प्रक्रिया मे मारल जाईत अछि निष्पक्ष पाठक जकरा उत्तम पद्य, गद्य किंवा साहित्यक आन विधा केर पोथी पढबाक लेल चाही। कोना चयन करत अहि महासमुद्र मे सँ अपन काजक पोथी? डेटा माइनिंग असम्भव जकाँ लगैत छैक।

केदारनाथ चौधरी केर रचना पर किछु लिखबाक छल। लागल, कनि पढ़ी अहि साहित्यकार कें। फेर पता चलल जे चौधरी जी केर उपन्यास करार पर कियोक नहि लिखने छथि। हम तुरत निर्णय लेल जे तखन करार पढ़ब आ ओहि पर लिखब। अहि पोथी कें पढ़ि जे अनुभूति भेल से अति साधारण पाठक केर मादे लिख रहल छी।

करार मैथिली साहित्य केर अनुपम निधि अछि। एकर भाषा, कथ्य, विश्लेषण, सोच, फिक्शन केर इतिहास, लोक व्यवहार, धर्म, दर्शन, तंत्र, आ

स्थानीयता सँ जोड़बाक विलक्षण काज केदारनाथ चौधरी केने छथि। कोना मिथिलाक आम जीवन मे धर्मक आ दर्शन केर गूढ़ रहस्य व्याप्त छैक, तकर प्रमाण अतय डेगे-डेगे भेटत। ज्ञान आ दर्शन केर सब गंभीर बात एक टायरगाड़ी केर बहलमान कन्हाइ मण्डल सँ सुनब नीक लगैत छैक।

अहि सँ पहिने जे पोथी पर किछु लिखी, एकर संक्षेप जानकारी द' देब आवश्यक।

उपन्यास केर प्रारम्भ दरिभंगा शहर केर बाढ़ि सँ आ एक घर मे उपस्थित दू भाई वीर बाबू आ पंकज सँ होइत छैक। दुनू बाढ़िक बढैत जल स्तर सँ परेशान वार्तालाप क' रहल छथि आ प्राण बचेबाक युक्ति ताकि रहल छथि। ततबे मे एक व्यक्ति दहाईत हुनका सब लग अबैत छथि। आगंतुक "पचपन-साठि बयस, छः फीट लम्बा, एखनहुँ स्वस्थ आ गठल शरीर, सशक्त ताहि पर भव्य मुखमंडल, चौरगर ललाट, पैघ-पैघ आंखि, गौरवर्ण, छिड़ियायल, भीजल आ कान तक कें झंपने कारी-कारी केश। (पृष्ट 7)। आगंतुक हुनका सबकें कहैत छथिन जे विनय जे अतय रहैत छथि तिनकर छोटका काका जटाधर केर अभिन्न मित्र पंडित राज शेखर दत्त छथि। विनय हुनका पंडित काका कहि सम्बोधित करैत छथिन। पंडित राज शेखर दत्त हिनका दुनु भाई सँ निवेदन करैत छथिन जे राति भरिक आश्रय देथि। वीर बाबू आ पंकज दुनू कात सँ पंडित राज शेखर दत्तक दुनू हाथ धय हुनका वरामदा पर ल' जाईत छथिन।

अंततः पंडित राज शेखर दत्त केर सुझाव सँ बगल केर तीन महला मकान जकर मालिक अपन मकान मे ताला लगा अयोध्या गेल छलाह मे ताला तोड़ि अपन जान बचेबाक जोगार मे जाईत छथि ।

राज शेखर दत्त पंकज आ वीर कैं अपन झोरी सँ निकालि रोटी तरकारी खेबा लेल देत छथिन। बाढ़ि केर भय बनल रहैक। कखन की विकराल स्वरुप ल' लेत तकर कोनो ठेकान नहि। अतएव राति भरि जागरण आवश्यक। यएह सब सोचैत दुनू भाई आगंतुक सँ निवेदन करैत कहैत छथिन: "हमर ई सोचब

अछि जे अहाँ साधारण लोक नहि विशिष्ट व्यक्तित्वक स्वामी छी। तें अपने सँ आग्रह जे अहाँ अपन जीवन मे घटल कोनो सुरुचिपूर्ण घटनाक वर्णन करियौक जाहि सँ मोनो लागल रहय आ रातियो कटि जाए।" (पृष्ट 8)

आब पंडित काका अपन कथा कहनाइ प्रारम्भ करैत छथि ।

पंडित काका अर्थात पंडित राज शेखर दत्त बहुत कम अवस्था मे नैनीताल गेल छलाह। ओतय एक विस्मयकारी घटना घटित भेलनि । नैनीताल मे फुलक गाछक मध्य एक अति सुन्दर गौरवर्ण युवती ठार छलीह आ अपलक राज शेखर दिस देखि रहल छलीह। राज शेखरक समस्त चेतना ओहि युवती मे समर्पित भ' गेलनि। तकरा बाद बहुतो दिन धरि ओ युवती नहि प्रकट भेलीह। राजक मोनक निशा क्रमशः समाप्त भ' गेलनि। ओ ओहि फुल कुमारी कैं नीक जकाँ बिसरि गेलाह। फेर बैशाख मास मे ऋषिकेश जयबाक क्रम मे समस्तीपुर रेलवे स्टेशन लग राज कैं एकाएक वएह मनमोहनी युवती उभरि गेल्थिन। राजक सम्पूर्ण गत्र झनझना उठलनि। ओ ठमकि क' ठार भ' गेलाह। एक बूढ आ भयावन मनुखक पाछा-पाछा ओ युवती जा रहल छलीह। युवती बूढा संग राज शेखर लग अबैत एकटा लिफ़ाफ़ा खसा देलथिन्ह । युवतीक भाव पढ़ैत राज शेखर दत्त ओ लिफ़ाफ़ उठा लेलनि। तत्काल युवतीक मोती सन दांत चमकि उठलनि, ठोर बिहुँसि गेलनि आ आँखिक भाव एहन भ' गेलनि जेना ओ राज कें धन्यवाद कहि रहलि होथि।

राज शेखर प्लेटफार्म पर एक ठाम बैस उत्कंठित भ' चिट्ठी पढ़ब शुरू करैत छथि:

"मदति चाही तँ पत्र लिखलहुँ अछि। आगू-आगू बुढ सन जे मनुक्ख गेल अछि ओ कापालिक थिक. कापालिक मे ई अघोर पन्थीक तामसी पूजा केनिहार तांत्रिक अछि आ एकरा अनेको एकरा अनेकों सिद्धि प्राप्त छै। स्वभाव, प्रवृत्ति आ आचरण सँ ई धूर्त, दुष्ट आ मक्कार अछि। हम पूर्णतः एकर कैदी छी। अगिला अमावस्याक बाद तंत्र मार्गक विधि विधान सँ ई हमरा पत्नी बनाओत

आ भोग करत। तकर किछु महिना बाद ई हमर भैरवीक आगा बलि द' देत। अनेकों सुन्दरि कन्याक बलि एकरा हाथे पड़ि चुकल छैक। जकरा ई डाकनी, योगिनी, प्रेतनी बना क' अश्लील आ वीभत्स तंत्रक होम-जाप क' अपन अभीष्ट पूरा करैत अछि।

अहाँ हमर मदति कोना करब से सुनू। हमर गाम चननपुरा मे हमर बालसखा - एवं प्रेमी गोवर्धन रहैत अछि। गोवर्धन साहसी, बलबान आ हमर प्रेम मे माँतल अछि। पुजारी बाबा सँ प्राप्त मंत्रसिक्त अष्ट धातुक सिद्धि बला मट्ठा ओकर - हाथ मे छैक। विशम्भरी माताक मंत्रायल हाथी दाँत बला कबच ओकर गरदनि मेझुलै छैक। तँ गोवर्धन अहि कापालिकक तंत्र प्रहार सँ परे अछि। अहाँ गोवर्धन कैँ हमर सोचनीए स्थितिक सूचना देबै । ओ हमर सहायता कर' लेल शीघ्र तैयार भ' जायत।

अहाँ गोवर्धन कैँ चिन्हबै कोना? गामक पूब मे सघन आम्र कुंज आ तकर सटल बड़ी टा परती मैदान भेटत। हजारो गाय आ तकर बाछा एवं बाछी कैँ चरैत देखबैक। अही स्थान पर अहाँ कैँ भेटताह गोवर्धन। गौर वर्ण, ऊँच कद, औंठिया कारीकारी केश-, चेहरा पर देवताक सुन्दरता, दाहिना हाथक पहुँचा लग लहसुनियाँक दाग आ सभ सँ पैघ चेन्ह जे हमर वियोग मे तरासल पाषाण मूर्ति बनल उदास कोनो गाछक डारि पर बैसल। सैह भेलाह हमर गोवर्धन।

गोवर्धन कैँ हमर सभटा अतापता देबनि। कहबनि जे ओ अमावस्या सँ दू - अछि। राति होम करैत-दिन पहिनहि अहि शहर मे आबथि। कापालिक दिवा तैँ ओहि मकानक ओ खोज करथि जतए होमक धुआँ आकाश मे जाइत होइक। अहि तरहें ओ मकान कैँ ताकि लेताह जतय हम कैद छी। अमावास्या तिथि मे कापालिक भरि राति श्मशान मे रहैत अछि। कापालिकक अनुपस्थिति मे रात्रिक दोसर पहर बितला पर गोवर्धन एतय आबि बाँसुरी बजाबथि। बाँसुरी मे विहगक ओ धुन बजबथि जकरा सुनला सँ एहन अनुभूति होइत छै जेना कोनो चंचल नदी सागर मे डुबैत काल अन्तिम आबाज दैत

होइक -हमरा बचा लिअ। हम त' डुबि रहल छी। बाँसुरीक धुन मे डुबैत नदीक चीत्कार सुनि हम बुझि जेबै जे हमर प्राणनाथ आबि चुकल छथि। हम कहुना ने कहुना गोवर्धन लग अवस्से पहुँचि जायब। अहि तरहें हमर प्राण बाँचि जायत।

चननपुरा गाम जेबाग मार्गक ब्योरा अहि चिट्ठीक पृष्ठ पर अंकित अछि। शेखर ! हमर अटल विश्वास अहाँ मे ओहि सीमा तक अछि जतय तर्क शून्य भ' जाइत छै। (14-13)

राज शेखर आब स्वेताक प्राण रक्षा लेल चननपुरा लेल विदा भेलाह। चिट्ठी मे रस्ताक संकेत देल छलनि। पहिल पड़ाव धर्मकांटा छलनि।

एक जर्जर बस जकर नाम सुपर फ़ास्ट रहैक मे बैस धर्मकांटा लेल प्रस्थान केलाह राज शेखर। संयोग सं बस धर्मकांटा पहुंचे सँ किछु काल पहिने भांगठ भगेलनि। राज शेखर केर बगल मे एक युवक बैसल छलथिन । ओ ’ “ :कहलथिनबंधुवरअहाँ धर्मकांटा तक जायब। हमहुँ ओही ठाम तक , जायब। जं मुख्य सड़क छोडि एक पेरिया पकड़ि ली तधर्मकांटा मुस्किल ’ सं आध कोस।) ”पृष्ठ (21

राज शेखर युवक संग बिदा भेलाह । हुनका पाछापाछा ओही बसक दू आर - पसिन्जर आबि रहल छलथिन्ह। दुनू आपस मे उच्च स्वर मे वार्तालाप करैत। हमर‘ – पछिला यात्री आगाँ बला कें चिचियाति कहलक“ एकाएक बहु ड्राइभर संगे उरहरि गेल तों से बजबें। तोहर एतेक टा मजाल? ठहर रौ सार, तोरा आइ जिबैत नहि छोड़बौ। अगिला पड़ायल आ पछिला खिहारलक। पछिलाक हाथ मे चमचमाइत बड़ी टा छुरा रहैक। रस्ता एकपेरिया रहैक तइयो राज शेखर केर सहयात्री हुनक बगल मे आबि गेल छला। आगाँ पड़ायल आब'बला व्यक्ति तीनचारि हाथ दूरहि एकपेरिया सँ ओघरा क-' खेत मे लुढ़कि गेल। छुरा बला व्यक्ति छुरा तनने दौड़ते रहल। ओकरा सोझ राज

शेखरक छाती मे छुरा भोकै लेल वृत्त भ' गेल। ठीक ताही काल हुनक सहयात्री राज शेखर कैँ एक कात ठेल देलथिन्ह । छुराबला मनुक्ख एकपेरिया रस्ताक ऊपरे लटपटा क' मुंहे भरे खसल। मुदा ओ अपन संतुलन कँ दुरुस्त करैत ठार भ' गेल आ खेत मे उतरि क' एक दिस भागल। आश्चर्य जे दोसर व्यक्ति जे पहिने सँ खेत मे ओंघरायल छल। सेहो उठि ओकरे पाछाँ दौड़' लागल।

राजक प्राणरक्षक कहलथिन्ह योजना बना क -' दुश्मन आक्रमण कयने छल। हम सावधान छलहुँ आ दुनूक मंसा पहिने सँ भाँपि नेने छलियै। धर्मकांटा तक हम संगे रहब तँ कोनो चिन्ता नहि।

ओहि इलाका लेल राज शेखर दत्त पूर्णतः नव लोक रहथि। कनेकाल तक दुविधा मे ठार रहलाह । दुविधा ग्रस्त मोन कॅ अजब उलझन होइत छै। किछु निर्णय लेब मुस्किल । फेर धर्मकांटा दिस डेग उठौलनि। यात्राक उद्देश्य की छलनि? स्वेताक प्राण रक्षा लेल हुनक सम्बाद कैँ गोवर्धन तक पहुँचेनाइ। स्वेताक अधीर भेल छवि राज शेखरक हृदय मे अंकित छलनि। मोन स्वेता मे नीक जकाँ समर्पित छलनि। मोन के स्थिर करैत चलैत रहलाह।

धर्मकांटा लग सँ बसक सहयात्री अलग भगेलथिन्ह। आब राज शेखर ' अगिला पड़ाव दिस पैदल बिदा भेलाह।

आधा कोस रस्ता पार केला पर एकटा मोड़ छलैक। मोड़ लग एक टायरगाड़ी ठार। राज कैँ आश जगलनि। गाड़ी लग गेलाह। बहलमान मन्दमन्द मुस्की - जे गाड़ी घेघि" सँ स्वागत करैत उत्तर देलथिन्हया जेतैक। हम अहाँक हित चिन्तक छी आ अही लेल टायरगाड़ी कैँ ठार कयने छी।(24) "

उल्लसित मोने राज शेखर टायरगाड़ी पर बहलमान केर बगल मे बैस गेलाह। बहलमानजी सिद्ध पुरुष सँ कम नहि छलाह। हुनक सत्संग सँ राज शेखर मुदित छलाह। भरि रस्ता ओ राज कैँ अनेक गूढ़ दार्शनिक आ धार्मिक प्रश्नक

उत्तर देत रहल्थिन्ह। बहलमानजी अपन बरद केर नाम माधव आ तिलकेसर रखने छलाह। टायरगाड़ी पर धर्मनिष्ट सेठ सियाशरण झुनझुनवालाक अन्न लादल रहैक जकरा दोसर धर्मात्मा सेठ बनबारीलालक घेघियाक गद्दी तक लभु ,प्रेत ,पाप पुन्य ,मृत्यु ,जएबाक रहैक। बहलमानजी जन्म 'तसब पर , बजैत रहलनि। ओ अपन उमेरि सँ बहुत कम लगैत छलाह। बरदो सँ गप्प करैत छलाह। अध्यात्म केर गूढ़ बात लोक भाषा आ उदाहरण सँ बुझा रहल छलाह। बहलमान जी संयत छलाह आ हुनकर वाणी मे गम्भीरता छलनि । नाम कन्हाइ मंडल छलनि। अपन परिचय के विस्तार देत कहलथिन जे ओ प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त केला के बाद एक संस्कृत विद्यालय केर छात्रावास मे खाना बनेबाक आ अन्य तरहक काज कैँ नौकरी कलेलाह। समय पर विवाह ' गेलनि। 'भेलनि रेशमा नामक एक बेटी सेहो भेलनि। रेशमा पांच वर्ष के भ एक दिन संवाद एलनि जे हुनक माता मृत्यु सय्या पर छथिन। गाम पहुंचलाक दोसरे दिन माताक निधन भगेलनि। मायक द्वादशा दिन कन्हाइ ' गेलनि। आब कन्हाइ मंडल 'मंडल केर पत्नी केर निधन साँप कटला सँ भ भगवती आराधना करैत रहलाह। महामाया हुनका दिव्य ज्ञान देलथिन्ह आ गेल छलाह। ओ अपन दिव्य 'कान मे मन्त्र। आब ओ ऋद्धि सिद्धिक स्वामी भ दृष्टि सँ अहि संसारक तथा दृष्टि सँ परे सम्पूर्ण ब्रह्मांडक गति विधि देख सकैत छलाह। कन्हाइ मंडल पंडित राज शेखर दत्त कैँ जनैत छलथिन्ह। आ जाहि प्रयोजन सँ ओ चननपुरा जा रहल छलाह से हुनका ज्ञात छलनि।

टायरगाड़ी आब घेघिया पहुँच गेल रहैक। कन्हाइ मंडल राज शेखर कें एक आश्रम पर उतारि देलथिन्ह जेकर स्वामी ओ स्वयं छलाह। एक व्यक्ति राज कैँ भीतर लगेलनि। ओकर नाम पंजा रहैक। आश्रम मे ओकर पत्नी ' रहैक। केर संग रहैत ,सुकुमारी जे नाम ज्ञाने अति कोमल आ सुन्दर रहैक दुनूक जोड़ी बेमेल रहैक मुदा सुकुमारी पंजा सँ प्रेम विवाह केने छलीह। कन्हाइ

मंडल पुनः राज शेखर दत्त केर दुनू बरद माधव आ तिलकेसर केर पूर्व जन्मक कथा कहैत छथिन्ह ।

घेघिया सं अगिला पड़ाव भंभरा छलनि। पंजा राज कें घाट लेल लगेलनि। ’ ’नाव पर जखन बैस गेलाह तँ पंजा एक अंगूठी द नाव सँ यात्रा शुरू केलाह। देलकनि। ओ अंगूठी कन्हाइ मंडल देने छलथिन। कनि काल बाद पता चललनि जे नाविक एक युवती छथि। युवती केर सौन्दर्य राज शेखर के बहसी बनाबय लागल छलनि। युवतीक स्वरुप कहन“ ?धिपाओल सोनाक सूर्ख रंगबला हुनक कांतिकान मे झुमैत चानीक ,केशक लट पैघ-छिड़ीयाएल पैघ , पसीना मे भीजल ,मींचल ठोर ,नाक मे सटल नथिया ,झुमकालाल ,लाल-लहंगा आ ब्लाउज मे अपसियांत हुनक यौवन। युवती ग़जब कें सुन्नरि (56) ”छलीह।

युवती केर नाम उलपी रहैक। ओ राज शेखर कें काम लेल आमंत्रित केलकनि। राज सेहो उद्यत भेलाह। मुदा फेर किछु एहेण संयोग भेलैक जे स्वेताक स्मरण करैत बढल डेग रोकि लेलनि। अनायास नाव कादो मे फंसि। गेलैक। उलपी नाव कैँ ठीक करय लागलि। अहि बीच राज शेखर कें नींद आबि गेलन्हि। देखैत छथि जे एक भव्य राज महल मे वेदी लग महिला समूहक भीड़ स्थान कें छेकने छैक। रानी आ राजा नव परिधान मे बैसल छथि। मुदा सभक आँखि मे उदासी रहैक। से कियैक ?

तखन देखैत छथि जे वेदीक एक कात भयावह आकृतिबला, कारी चोंगा पहिरने, लाललाल आँखि-, कपार पर सिन्दूरक ठोप आ देखिते भय उत्पन्न होइक तेहन एक व्यक्ति जानवरक छालक आसनी पर बैसल अछि। ओ निश्चय कोनो कापालिक अथवा अघोरी छल। ओकरा आगाँ नरमुण्ड पर दीप - जरि रहल छलै। कापालिकक शिष्य मंडली ओकर पाछाँ कारी वस्त्र

पहिरने पाँत मे ठार छलै। कापालिक छोटछोट लकड़ी कैँ कोनो द्रव्य मे - सिक्तक' वेदीक बीच ठाम बनल कुंड मे आहुति दैत छल आ क्षणहिक्षण हुँकार करैत छल। कापालिक चेहरा सँ क्रूरता बरसि रहल छलै।

वेदीक एक कात महिला सँ घेरल एक सुन्दर बालिका बैसलि छलीह। हुनक दुनू हाथ कूशक जौर सँ बान्हल छल आ ओहि पर लाल अरहुलक फूल राखल छलै। बालाक बयस चौदहपन्द्रह बर्खक आ वस्त्र एहन पहिरने जेना - राजकुमारी होथि।

ओ बालिका स्वेता छलीह। हुनक समस्त मुख मंडल सँ क्षोभ आ घृणाक कुत्सित भाव झहरि रहल छलनि।

कुंड लग जेना कापालिक पूर्णाहुति कयने होअय, तेना ओ द्रव्य सिक्त लकड़ी कॅ कुंड मे आहुति द' भयंकर गर्जना केलक जकर ध्वनि प्रतिध्वनि बनि समस्त राजभवन मे झनझना देलकै। ठीक ओही काल कोनो अदृश्य शक्ति सँ प्रेरित भ' अपन हाथक जौरक रस्सी कँ तोड़ि, अरहूल फूल कँ भूमि पर फेंकि स्वेता उठलीह आ राजभवनक फूजल सिंहदरबज्जा दिस दौड़ि पड़लीह। भागैत-भगैत स्वेता एक खर सं छाडल बाड़ा लग अबैत छथि आ ओतय ठार एक सुसंस्कृत छलाह ,युवक केर देह मे लेपटा जाइत छथि। युवक बहुत भव्य देल अष्ट धातुक मन्त्र सिक्त मट्ठा छनि। ओ कियोक आ हाथ मे पुजारी के आर नहि अपितु गोवर्धन छलाह। स्वेता गोवर्धन सं अपन रक्षा के निवेदन करैत छथि। हुनका बुझल छनि जे मट्ठा सं कपाली के कोनो तंत्र हुनका पर दुस्प्रभाव नहि करतनि आ अहि तरहे स्वेता कपालीक संग विवाह सं बचि सकैत छथि। आ हुनकर प्राण रक्षा भ जेतनि।

राज सपना देखिते रहलाह। देखैत छथि जे आब स्वेता आ गोवर्धन दुनू एक दिस दौड़ी रहल छथि। अनुभूति ई भेलनि जेना प्रेम अपन उत्सर्ग लेलअपन , त्याग लेल जेना दुनू बालक आ बालिका मे एतेक ने उर्जा भरि देने होथि जाहि

सं दुनू हवा मे उधिया रहल छथि। दुनू एक नदी पार करैत छथि। बीचहि मे कपाली आबि जाइत छैक आ रस्सी काटी देत छनि। आब गोवर्धन आ स्वेता बहैत नदी केर वेग मे खसैत छथि। आ धार मे उब डूब करैत पानि मे डूबि गेलाह। स्वेता के नदी मे डूबैत देखि रानी आ राजा हा स्वेता कहैत कूदि पडैत छथिस्त्री पुरुष। सब अपन प्राण त्यागि देलक। तकर बाद समस्त सेना आ , ?ई की भेल

ततबे मे राज कें उलपी उठबैत छनि जे नाव ठीक भ गेल। सपना देखि अहाँ एना कियैक कराहि रहलहु अछि। की अहाँक प्रेमिका नदी मे डुबि मरलीह ? स्वेता चिचियाइति अहाँ तेना ने आक्रोश ,स्वेता ?स्वेता अहाँक के छथि निन्न तोडू। नाव तबेत ,कयलहु जे एखन तक नाव कांपि रहल अछि। जागू धरि अपन गंतव्य पर आबि गेल छल। राज शेखर दत्त अपन झोरा ल आगा बढ़ि गेलाह। ।

आब राज शेखर दत्त चननपूरा हेतु बिदा भगेल रहैक 'चुकल छथि। साँझ भ ' आ एकपेरिया रस्ता मे झुण्डक झुण्ड बनैय्या सुग्गर ठार आ राज दिस तकैत। मेघ से लागि गेलैक। अन्हार सं बचबा लेल एक पुरान घर दिस गेलाह। मुदा घरक लोक आशर्य नहि देत छनि। लाचार भेल एकटा गाछक नीचा मे बनल गहवर मे नुकेबा केर यत्न केलाह। वर्षा होइत रहलैक। अन्हार मे टोर्च बारि देखैत छथि त एक अजोद्ध गहुमन साँप हिनका दिस फफकर कटने – साँपक फन उठल आ जिह्वा लपलपा रहल छलैक। बज्जर भेल ई अपन समय कटैत रहला। मृत्यु जेना लगे मे ठार होनिथोड़े काल मे ओतय एक बनैय्या ! 'सुग्गर आबि गेलैक आ हिनका पर आक्रमण कएलकनि। आक्रमण चुक भ गेलैक। सुग्गर 'गेलैक। आब साँप आ बनैय्या सुग्गर मे मल्ल युध्ह शुरू भ आ साँप केर युद्ध देखि हिनका नेनपन केर सुनल एक कथा याद आबि जाईत " :छनिसंसार मे मात्र साढ़े तीन टा वीर छथि। पहिल साँप, दोसर बनैया सुग्गर, तेसर भैंसा आ नुका क' बालि कें मारलनि तें आधा रामचन्द्र। साँप "

लडैत पोखरि दिस बढलैक। राज शेखर दत्त जान बचा ओतय -आ सुग्गर लडैत गेलाह से पते ने चललनि। 'सं पडेलाह। चलैत चलैत रस्ता मे कोना बेहोस भ

जखन होश मे अएलाह त एक युवक आ युवती हुनका लग ठार।

युवक आ युवती केर नाम चन्द्रकांत आ पार्वती छलनि। आब ओ आचार्य प्रभुक आश्रम मे छलाह। प्रभु हिनका जमीन पर खसल बेहोश देखलनि। प्रभु वनोषधि उपचारक परम आदरणीय गुरु सेहो छथि। औषधि एवं मंत्र शिक्त जलक छिड़काव सँ हिनक उपचार क' प्रभु निश्चिन्त भेलाह आ हिनक पूर्ण विश्राम हेतु एतय अनबाक लेल आदेश देलनि। राज भरि दिन शयन केने छलाह । राज शेखर चन्द्रकांत संगे कुटिया सँ बाहर अबैत छथि । सभ किछु बदलल-बदलल जकाँ देखाय पड़लनि। कुटियाक बनाबट किछु विचित्रे रहैक। बाहरी देबाल चिकनी माटि सँ छछारल आ ओहि मे पशु-पक्षीक अद्भुत चित्र बनाओल रहैक। अति साधारण चित्रकलाक अलौकिकता एवं सजीवता कोनो सभ्यता कँ मुखरित क' रहल छल। ने कतहु प्रदूषण देखल आ ने प्रकृतिक कुटिलता। सभ किछु सहज, सरस, नैसर्गिक एवं पवित्र। सरोवर सँ स्नान क' बाहर अएलाह । चंद्रकांत नव वस्त्र पहिरक हेतु देलथिन्ह आ पार्वती उत्कृष्ट भोजनक इंतजाम केने छलीह।

आब राज शेखर दत्त अपन गंतव्य स्थान पर आबि गेल छलाह। चंद्रकांत आ पार्वती संग ओ आश्रम आबि गेलाह। आचार्य केर दर्शन भेलनि। मोन तृप्त भ' गेलनि। आचार्य हुनका कहैत छथिन जे अहाँक चननपूरा तक केर यात्रा पूर्ण भेल। काल्हि प्रातः काल अही ठाम अहाँकें गोवर्धन स सशरीर भेट होयत। आब अहाँ सहज भ' जाउ। आचार्य सं पता चलैत छनि जे चननपूरा तेरह सए बर्ख पूर्वक चन्दनपुर थिकै।

राज शेखर दत्त के आचार्य बतबैत छथिन जे तेरह सए बर्ख पूर्व मिथिला केर एहि भाग मे कोनो राजा नहि रहैक। तीन चौथाई भाग जंगल रहैक। जंगल मे

जंगली जातिक बहुतो समुदाय केर अपन नियम रहैक। तांत्रिक बौध लोकनि केना ब्राहम्णक श्रेष्ठता भंग केने छलाह तकर वृतांत सेहो सुनला राज शेखर। शान्तिप्रिय मैथिल तंत्रवादी सं अशांत भ' गेल रहथि। ताहि समय मैथिल पुरोहित राम बल्लभ उपाध्याय केर निवेदन पर कर्णाटकक महाराज अपन अनुज रूद्र प्रताप सिंह कें मिथिला भेजैत छथि। चननपुरा हुनक राजधानी बनल। रूद्र प्रताप सिंह कानून व्यवस्था स्थापित केलाह। स्वेता महाराजा केर पुत्री छलीह। स्वेता नेने सँ पुरोहित जीक बालक गोवर्धन संग खेलय लगलीह। यौवन एला पर सेहो स्वेता केर सिनेह गोवर्धन संग बनल रहलनि। गोवर्धन सब गुने संपन्न छलाह। ताहिं राजा रानी निर्णय लेलनि जे दुनूक विवाह अग्रहण शुक्ल पंचमी क भ जेतनि।

आचार्य कहैत रहलथिन्ह। ओहने सुखद समय मे दक्षिण भारत सं चंडचूर नामक कपाली पुजारी भजनानंद केर मंदिर मे अपन खंती गारि देलक। पुरोहित रम बल्लभ उपाध्याय के ज्ञात छलनि जे दक्षिण भारत केर कपाली उदंड, भयंकर आ पापाचारी होइत अछि। अहि सन्देश सं ओ अनिष्ट केर आशंका सं कापय लगलाह। चंडचूर अति दुष्ट वाममार्गी कापालिक छल। चंडचूरक अबितहिं पुजारी बाबा विश्वंभरी माताक मंदिर मे चल गेलाह। चंडचूरक तामसी पूजा अति पर पहुंचि गेलैक। ओ शव साधना करय लागल। जंगली जातिक कुमारी कन्या संग काम आ पुनः ओकर बलि देमय लागल । बाद मे चंडचूर कें भोग देबा लेल स्वेता सँ नीक कियोक नहि देखेलैक। एकर सुचना सेहो पुरोहित राम बल्लभ उपाध्याय कैँ लागि गेलनि।

हुनका मंदिर केर पुजारी सँ ज्ञात भेलनि जे चण्डचूर राजकुमारी स्वेताक प्राप्ति सँ पहिने तंत्रक चक्रार्चन पूजा करत, फेर सँ भैरवी लग अपन प्रण कैँ दोहराओत। अहि काज मे ओकरा पन्द्रह दिन सँ कम समय नहि लगतै। ओहुना अगिला अमावस्याक आइ सँ चौबीस दिन बिलम्ब छैक। माता विशम्भरीक आशीर्वाद सँ कोनो महामुनीक संग ल' पुजारी मानसरोवर सं समय सँ पहिने

घुमि क' आबि जेताह।

पुजारी बाबा अपन आगाँ राखल थार सँ एकटा कबच आ एकटा मट्ठा पुरोहितक हाथ मे दैत कहलनि हम अपन समस्त तप अर्पित क' माता सँ मंत्र सिक्त हाथी दाँतक बनल कबच तथा योग सिद्ध अष्ट धातुक मट्ठा प्राप्त केलहुँ अछि। कबच आ मट्ठा ल' अहाँ चननपुरा जाउ। उचित व्यक्ति के कबच आ मट्ठा पहिरा देबनि। अहि कबच आ मट्ठा पर तत्काल चण्डचूरक तंत्रक कोनो प्रभाव नहि पड़तैक। अहाँ अबिलम्ब घुमि कँ आउ। तखन हम दुनू मानसरोवर झील हेतु शीघ्रतिशीघ्र प्रस्थान करब।

पुरोहित राम बल्लभ उपाध्याय कबच आ मट्ठा ल' क' चननपुरा अयलाह। किछु काल तक ओ विचार केलनि महाराज आ महारानी, सेना आ सेनापति तथा चननपरा साम्राज्यक समस्त प्रजाक स्नेह राजकमारी स्वेता मे आरोपित अछि। स्वेताक प्राण त' गोवर्धन छथि। तँ सभ सँ उत्तम जे कबच आ मट्ठा गोवर्धनक शरीर मे रहए।

आचार्य कहैत रहला: “शून्य, अति शून्य, महाशून्य एवं सर्वशून्य जे क्रमशः कायात्मक, वचनात्मक, मानसात्मक तथा ज्ञानात्मक सुख अछि तकरा पार क' हम सहजानन्द सुखधाम पहुँचि योग निद्रा मे विश्राम क' रहल छलहुँ। बाबा भजनानन्द आ पुरोहित राम बल्लभ उपाध्यायक पीड़ा भरल विनती हमरा लग पहुँचल। योगबल सँ हम दुनूक प्रार्थनाक उद्देश्य एवं चण्डचूर द्वारा चननपुरा पर आनल विपत्तिक ज्ञान प्राप्त कयलहुँ। वस्तुस्थिति मैं बुझि आ विधाता सँ आदेशित भ' हम दुनूक समक्ष प्रगट भेलहुँ। फेर पुजारी आ पुरोहित के संग ल' आकाश मार्ग सँ सोझे चननपुराक बेगबती नदीक कछेर मे पहुँचलहुँ। मुदा, हमरा तीनूक पहुँचबा सँ पूर्वहि जे विनाश हेबाक रहैक से किछु घड़ी पहिने भ' चुकल रहै। स्वेता आ गोवर्धन संगहि समस्त चननपुरा

साम्राज्यक प्राणी कालग्रस्त भ' चुकल रहथि। जे भेलै से बड़ दुखद भेलै।“ (96)

ठीक पन्द्रहम दिन जेठ मासक अष्टमीक सकाले चण्डचूर चननपुरा पहुँचि गेल। खूखार आ भयानक आकृति बला चण्डचूर अपन सभटा शिष्यक संगे चननपुरा राजभवनक मुख्य दरबज्जा पर आबि ठार भेल । कापालिकक आगमनक सूचना सेनापति शूर सेन गणपति के भेटलनि। महलक रक्षार्थ सेनापति व्यूह रचना क' चण्डचूर एवं ओकर शिष्य मंडली के घेरि लेलनि। तीर-कमान, भाला, तलवार सँ लैस सेना आक्रमणक लेल तैयार भ' गेल। सूचना पाबि महाराजा एवं महारानी सेहो ओतए अयलीह।

पशुबलि आ नरबलि देनिहार वामाचार तांत्रिक कॅ देखि महाराजा आ महारानी आतंकित भ' गेली। चण्डचूरक एक हाथ मे लोहाक चूट्टा आ दोसर हाथ मे मदिरा सँ भरल नरमुंड छलै। ओ महाराजा आ महारानी कैं देखतहिं भयंकर अट्टाहास केलक। सम्पूर्ण राजमहल काँपि उठल। चण्डचूर नरमुंड सँ एक घोंट मदिराक कुरुर क' गर्जना केलक-ने हम मंत्र जानी आ ने तंत्र। हम छी रमणी सँ रमण कर'बला व्यभिचारी कापालिक चण्डचूर। अय! रुद्र प्रताप सिंह देब! सुन', हम तोहर पुत्री राजकुमारी स्वेता संग विवाह कर' एलहुँ अछि। शीघ्र विवाहक तैयारी कर। नहि त' सम्पूर्ण चननपुरा के जरा क' भस्म क' देबौक। एकोटा प्राणी के जिबैत नहि छोड़बौ आ स्वेता के अपहरण क' ल जेबौक। हम शपथ ल' चुकल छी। भैरवी के स्वेताक रुधिर सँ तृप्त करक हमर प्रतिज्ञा के संसार मे कियो ने तोड़ि सकैत अछि।

चण्डचूरक अति कर्कश प्रलाप सुनि महाराज आ महारानी किछु पल लेल जड़वत भ' गेला। ताहि समय मे कापालिकक अत्याचार सँ सम्पूर्ण भारत कराहि रहल छल। साधारण गृहस्थक कोन कथा, दिन-दहाड़े, सभहक समक्ष

राजाक पुत्री के केश पकड़ि घिसिया क' कापालिक ल' जाइक आ ककरो साहस नहि होइक जे ओकरा रोकि सकितए। मुदा स्वेता त' महाराज आ महारानी | कलेजाक टुकड़ा छलथिन। ताहू पर सँ चण्डचूर स्वेताक लेल अपशब्द बाजल छल। महाराजक राजपूती शोणित मे उफान उठलनि। ओ गरजैत सेनापति के आदेश देलनि-गणपति, अहि बदमास तांत्रिक पर हमला करू। एकोटा जीबि क' वापस नहि जाए।

महाराज आ सेनापति, दुनूक हाथ मे तलवार चमकि उठल। समूह मे सेना चण्डचूर आ ओकर शिष्य मंडलीक नाश करबाक लेल आगाँ बढ़ल । मुदा चण्डचूर त' सभ तरहक तैयारी क' क' आयल छल। ओ मंत्रोचार करैत अपन गरदनि सँ मनुक्खक हड्डीक माला निकाललक आ माया पसारि सम्मोहन एवं स्तवन, दुनू तरहक सिद्धि के एकहि समय मे प्रयोग केलक। ताही क्षण चण्डचूरक सिद्धि अपन करतब देखौलक। महाराज, महारानी, सेनापति आ तमाम सेना सम्मोहित होइत अपन अकिल आ विवेक सँ अलग भ' गेला। भ्रमित भेल ओतुका जन समुदाय पोसुआ कुकुर जकाँ चण्डचूरक आगाँ नांगरि डोलाब' लागल।

चण्डचूर अपन शिष्य संगे राजभवनक भीतरी प्रांगण मे प्रवेश केलक। तत्काल ओकर चेला सभ मिलिक' विवाह बेदी आ होम करबा लेल कुंड तैयार क' लेलक। कुशक जउर मे हाथ बान्हि क' स्वेता के विवाह मंडप मे आनल गेल। स्वेताक सभटा सखी, राज्यक कर्मचारी आ महाराज-महारानी भ्रमित भेल विवाह मंडप मे पहुँचि मूक दर्शक बनल रहल। चण्डचूर कोयला सन कारी चोंगा पहिरने छल।

ओकर आँखि करजनी जकाँ लाल-लाल भ' गेल रहैक। ओ एक बेर स्वेता दिस ताकए ओ फेर नरमुंड सँ मदिरा पान करए। विवाह मंडप सँ थोड़बे हटल

सेनापति शूर सेन गणपति अचेत अवस्था मे जमीन पर बैसल रहथि। सभटा दृश्य अजीबे आ डेराओन रहैक। जेना बुझि पडैत छलै जे स्वयं समय चण्डचूरक बंदी बनल कराहि रहल होअय।

एकाएक आश्चर्यबला बात भेलै। जेना स्वयं भगवती आबि स्वेता मे कोनो शक्ति भरि देलथिन तहिना ओ चण्डचूरक माया कैं तोड़ि हाथ मे बान्हल जउरक रस्सी कैं खोलि राजभवनक सिंहदरबज्जा दिस दौड़ि पड़लीह। स्वेताक पयर मे बिहारि पैसि गेल छल। ओ सिंहदरबज्जा सँ बाहर भ' दौड़ि रहल छलीह। हुनक पाछाँ चूट्टा भंजैत चण्डचूर, ओकर शिष्य, महाराज, महारानी आ बड़ी टा जन समूह दौड़ि रहल छल। चरैत पशु, बैल, गाय सब बायं बायं कर लागल।

राजभवनक अहि हलचल सँ पूर्णतः अनभिज्ञ गोवर्धन गौशालाक एक कात ठार हल्ला सुनि आश्चर्य सँ एम्हरे ताकि रहल छलाह। स्वेता सोझे जा क' गोवर्धनक देह मे लेपटा गेलीह आ चिचियाति बजलीह-हमरा बचाउ हे हमर प्राणनाथ। हमर पिता राजा होइतहुँ कापालिकक भय सँ आन्हर भेल छथि। ओ कापालिक संग हमर बिआह करा रहल छथि। अहाँ के हम अपन स्वामी मानने छी। अहाँक देह मे पुजारी बाबाक देल कबच आ मट्ठा अछि। दुष्ट कापालिकक कोनो टा वश अहाँ पर नहि चलतैक। हे हमर स्वामी, अहि स्थान सँ हमरा दूर ल' चलू।

स्वेताक संगहि सभ कियो डुबि मरला। सभ के मोह ग्रसित कयने छलनि। तँ विधाताक बनाओल नियमक अनुसारे निर्दोष रहितहुँ सभ के प्रेत योनि भेटलनि। मात्र गोवर्धन प्रेत बन' सँ बाँचि गेलाह,कारण ओ अनासक्त एवं अनुराग हीन प्राणी छलाह। विभिन्न तरहक जीव-जन्तुक योनि मे जिबैत-मरैत तेरह सय बर्खक बाद गोवर्धन पुनः मनुक्ख योनि मे जन्म लेलनि अछि।

अंतत रहस्योद्घाटन ई होइत छैक जे राज शेखर दत्त गोवर्धन छलाह। हुनके

स्वीकृति केर इन्तजार मे हजारों जीवात्मा प्रेतात्मा बनल प्रतीक्षारत छथि। आइये जेठ शुक्ल अष्टमी तिथि छैक। राज शेखर विवाह करबा लेल तैयार भ जाइत छथि। स्वेताक गोवर्धनक प्रति एकांगी प्रेमक जीत भेलै। आचार्य लग एकर खबरि भेलनि। शून्य भेल चननपुरा लोक सं भरि गेलैक। ढ़ोल पिपही बाजे लगलैक। गीत नाद शुरू भेलैक।

राज शेखर कें लज्ज्वती सँ जानकारी भेटैत छनि जे जखन ओ चननपुरा हेतु यात्रा शुरू केने छलाह तखन जे हुनका पर हमला भेल छलनि से हमलावर बज्रेषर छल। ओ प्रेत बनि अहाँ पर आक्रमण केने छल। शेखर केर रक्षा करयबला छलाह रूद्र प्रताप सिंह केर सेनापति शुर सेन गणपति। गहवर मे जखन राज शेखर फंसल छलाह ताहि क्षण शुर सेन गणपति साँप बनि हिनक रक्षा केने छलथिन। सुग्गर बनल छलाह ब्रजेश्वर। वर कैँ ल' जेबाक लेल कन्हाइ मंडल अपन टायरगाड़ी आ माधव आ तिलकेसर बरद संग विराजमान छलाह। सासुर मे खबासी केर काज पंजा के भेटल रहैक। बाराती जखन राज दरबार पहुचैत छैक ताहि काल उलपी हुनकर बिधकरी बनल छलथिन।

अतेक खिस्सा कहैत कहैत पंडित काका अर्थात राज शेखर दत्त ठार भ' जाइत छथि। वीर बाबू आ पंकज, खिस्सा सुने मे व्यस्त छथि। थोड़े काल मे पंडित काका दुनू के कहलथिन्ह जे विनय शायाद आयल छथि, देखू। ओ सब देखे गेलाह। विनय ठीके आयल छलाह। जखन भीतर अयलाह त पंडित काका नदारत। ई दुनू भाई विनय कें सब बात कहलथिन। विनय आश्चर्य मे अबैत उत्तर देलथिन्ह जे पंडित काका केर अपन कियोक नहि छलनि। ओ कहिये ने मरि गेलाह। हुनका शरीर के मुखाग्नि हमही देने रहीयनि। आब तीनू विस्मय मे छलाह।

ई छल उपन्यास केर मूल कथाक सारांश। आब अहि पर थोड़े चर्च करी।

ई उपन्यास बहुत प्रसंग संग बढ़ैत छैक। अहि मे दर्शन, धर्म, पाप पुण्य,

पुनर्जन्म, प्रेत योनि, इतिहास, पुरातत्व, सौंदर्य सब किछु केर सुंदर समावेश छैक। सबसँ पैघ बात समय केर बहुत खंडक अनुपम चित्रण भेटत। दरभंगा सँ चलैत सीतामढ़ी, आ चननपुरा तक केर बाट केर १९८० दशक केर जे सड़क, यातायात, बाढ़ि, सड़क केर स्थिति लोकक मानसिकता, समाज आ संस्कृति केर खांका देख सकैत छी। ओहि समय मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सीतामढ़ी तक रघुनाथ झा केर बस केर चला चलती रहैक। कोना बस मे दादागिरी होईक, कोना कंडक्टर बर्ताव करैक सब बात सहजता सँ लिखल छैक। शैली सहज आ कथावस्तु संग ताल मे ताल मिलेने चलैत छैक। बाढ़ि कैं समय बाढ़ि ग्रस्त क्षेत्र मे लोक कोना चलैत छल तकर विवरण पाठक कें मुग्ध करैत छैक।

कथा वस्तु यद्यपि बहुत रहस्यमय छैक, तथापि प्रमाणिक बनेबा लेल बहुत प्रमाण केर आनल गेल छैक। एहि पोथी लेखन सँ पूर्व साहित्यकार गहन शोध केने छथि, धर्म, तंत्र, आदि कैं बुझने छथि, से स्पष्ट छैक। ई पोथी अपना आपमे एक दृष्टांत बनैत छैक जे साहित्य केवल मोनक उद्वेग, आवेग अथवा स्फूरन नहि, अपितु गंभीर अध्ययन आ आवोलकन सँ रचित संदर्भ ग्रंथ सेहो होई छैक।

मैथिलांचल मे कोना अराजकता तंत्रयाणी संग अबैत छैक, कोना बाम मार्ग वैदिक मार्ग पर प्रहार करैत छैक, कोना तंत्र सिद्धि केर नाम पर नारी दोहन होईत छैक तकर बहुत सूक्ष्म आ तर्कसंगत प्रमाण लोक देखैत अछि। उपन्यास अनेक काल खंड केर संग-संग अनेक भोगोलिक परिवेश पर चलैत छैक। दरिभंगा सँ कथा केर आधार बनैत छैक फेर कथा कहब हिल स्टेशन नैनीताल सं शुरू होइत छैक। कथाक पात्र पुनः समस्तीपुर रेलवे स्टेशन लग भेटैत छैक आ कथाक नायिका स्वेता अपन प्राण बचेबा लेल उपन्यास केर नायक राज शेखर दत्त सं निवेदन करैत छैक। फेर सीतामढ़ी केर क्षेत्र, आ अंततः अनेक

स्थान होइत, अनेक परिस्थिति संग चननपुरा लग कथाक अंत होइत छैक। उपन्यास मे सब स्थानक बहुत नीक वर्णन उपस्थित होइत छैक। अगर पाठक ओहि स्थान मे गेल छथि तँ सब छवि हुनकर मस्तिष्क मे घुमरय लगैत छनि। उदाहरण लेल नैनीतालक वर्णन देखल जाओ:

“पहाड़ मध्य विशाल घाटी, घाटी मे दूरपगडन्डी दूर तक-, उज्जरकारी मेघ - सँ छाड़ल आकाश, शीत सँ बोझिल भेल पवनक प्रियगर झोंका, जामुन-जमुनीक गाछ सँ घरेल आ जमुनिआँ रंग सँ लबालब भरल झील, चारूकात देवदारक घनघोर जंगल, जंगली फूल सँ पाटल धरती, झुण्डकझुण्ड पहबा - नामक चिडैक विचरण, सभ किछ के देखैत।” (10)

अतबे नहि स्थान विशेष केर प्रकृति आ वातावरण संग नायिका केर वर्णन कतेक सटिक आ प्रेम स भरल छैक:

“ककरो नजरि हमर बामा कपाल मे सुल्फा भोंकि रहल छै तेहन सन अनुभव भेल। बामा कात घुमि गेलहुँ। सटले एकटा दोसर कॉटेज रहै। ओकर आगाँ थोड़ेक समतल भूमि छलै जाहि मे फुलायल फूल सँ लदल अनेकों छोट-पैघ गाछक पतियानी रहै। ओही फूलक गाछक मध्य एकटा युवती ठार छलीह। ओस सँ भीजल हरियर-हरियर दुभि पर ठार युवतीक सर्वांग शरीर उज्जर वस्त्र सँ झाँपल छलनि। लाल-लाल फुदनाबला ओढ़नी युवतीक गरदनि पर झुलि रहल छलै। युवतीक चेहरा गोल, आँखिक ऊपर भौं सीटल, माथक केश जूड़ा मे लेपटाओल, दुनू कान मे झुलैत झुमका आ सूर्यक लालिमा सँ रंगल गाल आ ठोर अत्यधिक आकर्षित क' रहल छल। युवती परम सुन्दरी छलीह आ अपलक हमरा दिस देखि रहल छलीह। हुनक तकबाक अन्दाज मे गजब के उत्तेजना भरल छलनि। हमर शरीर झनझना उठल। मस्तिष्क तन्तु मे पीपही बाज' लागल। हमरा नारीक सौन्दर्य मे एखन तक रुचि नहि भेल छल। अविवाहित रही आ कहिओ सुन्दर युवतीक कल्पना तक नहि कयने रही। मुदा जनिका हम देखि रहल छलहुँ ओहि मे हमर जिज्ञासा, हमर कौतुहल के एना

ने जगा देने छल जे हम अचैन भ' गेलहुँ। करेजक धड़कन कान मे पहुँचि गेल।“ (10)

युवती सँ भेट होइते देरी प्रसंग मे तंत्र, विचित्र भाव, रहस्य आदि प्रारम्भ भ’ जाइत छैक। प्रेम यद्यपि अपन डोर धेने रहैत छैक। तंत्रक विकट आ विकराल प्रवृतिक विवरण आ रहस्य स्वेताक चिट्ठी केर प्रथम किछु लाइन मे स्पष्ट भ’ जाइत छैक:

मदति चाही तँ पत्र लिखलहुँ अ“छि। आगूबूढ़ सन जे मनुक्ख गेल आगू-अछि ओ कापालिक थिक। कापालिको मे ई अघोर पंथीक तामसी पूजा केनिहार तांत्रिक अछि आ एकरा अनेकों सिद्धि प्राप्त छै। स्वभाव, प्रवृत्ति आ आचरण सँ ई धूर्त, दुष्ट आ मक्कार अछि। हम पूर्णतः एकर कैदी छी। अगिला अमावस्याक बाद तंत्र मार्गक विधिसँ ई हमरा पत्नी बनाओत आ विधान-भोग करत। तकर किछु महिना बाद ई हमर भैरवीक आगाँ बलि द' देत। अनेकों सुन्दरि कन्याक बलि एकरा हाथे पड़ि चुकल छैक। जकरा ई डाकनी, योगिनी, प्रेतनी बना क' अश्लील आ वीभत्स तंत्रक होमजाप क-' अपन अभीष्ट पूरा करैत अछि। (13) “

जेना मेघदूतक यक्ष मेघक कतरा कें अपन यक्षप्रिया लग जेबा लेल सब बात विस्तार सँ बतबैत छैक तहिना अहि चिट्ठी मे स्वेता राज शेखर दत्त कैं बतबैत छथि:

सखा एवं प्रेमी गोवर्धन रहैत अछि। गोवर्धन -हमर गाम चननपुरा मे हमर बाल“ साहसी, बलबान आ हमर प्रेम मे माँतल अछि। पुजारी बाबा सँ प्राप्त मंत्र-सिक्त अष्ट धातुक सिद्धि बला मट्ठा ओकर हाथ मे छैक। विशम्भरी माताक मंत्रायल हाथी दाँत बला कबच ओकर गरदनि मे झुलै छैक। तँ गोवर्धन अहि कापालिकक तंत्र प्रहार सँ परे अछि। अहाँ गोवर्धन के हमर सोचनीए स्थितिक सूचना देबै । ओ हमर सहायता कर' लेल शीघ्र तैयार भ' जायत।(13) “

स्वेता राज कें इहो युक्ति बता रहल छथिन्ह जाहि सँ ओ गोवर्धन कें चिन्ह जाथि:

“गामक पूब मे सघन आम्र कुंज आ तकर सटल बड़ी टा परती मैदान भेटत। हजारो गाय आ तकर बाछा एवं बाछी कैँ चरैत देखबैक। अही स्थान पर अहाँ कॅ भेटताह गोवर्धन। गौर वर्ण, ऊँच कद, औंठिया कारी-कारी केश, चेहरा पर देवताक सुन्दरता, दाहिना हाथक पहुँचा लग लहसुनियाँक दाग आ सभ सँ पैघ चेन्ह जे हमर वियोग मे तरासल पाषाण मूर्ति बनल उदास कोनो गाछक ठारि पर बैसल। सैह भेलाह हमर गोवर्धन।“(13-14)

जखन नायक अर्थात राज शेखर दत्त यात्रा शुरू करैत छथि आ बज्जिका क्षेत्र मे अबैत छथि त स्थानीय पात्र मैथिली केर उपभाषा बज्जिका मे बाजब शुरू करैत अछि:

“की कहली धर्मकांटा जाइबला बसक खोज मे बौआ रहली हएँ। देखिऔ, बसक कतार मे लोहाक ढोल जकती मुंहकान बला बस-, हँ, हँ, उहे जायत। कब खुलत? कितना टेम भेल हेएँ? ठीक एक घंटाक बाद सात बजे खुलत। की पुछली, धर्मकांटा कब पहुँचत? सीरीमान, रौआ इहाँ फैल क’ गेली। खुलक टेम बता सकै छी, पहुँचत कब तकर इनक्वायरी महावीर मंदिर मे होत। पवनसुत त्रिकालदर्शी छथ, हुनका सभ जानकारी हनि। हम त' मनुक्ख हती।“ (16)

उपरोक्त कथन भाषा वैविध्य केर सम्मान करैत अछि संगहि कोना बिहार मे ओहि समय लोक जीबैत छल। कोना सुविधा केर नाम पर ठकल जा रहल छल, तकर जिवंत प्रमाण।

स्मरण राखी जे ई उपन्यास वर्त्तमान के लैत भूतक यात्रा करबैत छैक। वर्तमान समय केर सब बात रखैत चलैत छैक। बस मे एक पति-पत्नी आपस मे वाक् युद्ध मे लागल छथि। हुनक वार्तालाप सुनला पर लोअर क्लास केर लोकक

जीवन केर की समस्या छैक तकर साक्ष्य भेटत:

“पत्नी-अहाँ कतेक निष्ठुर छी यौ। हम रंज भ' क' नैहर चलि गेलि रही। अहाँ तीन मास धरि कोनो खोज-खबरि नै कैलहुँ। दु:ख आ चिन्ताक पहाड़ तर हम समय कोना क’ बितेलहुँ से हमही जनैत छी।

पति-रंज कर' लेल के कहलक?

पत्नी- सुनियौन हिनकर गप्प। रंज करब वा नै करब अपना बस मे छै? ओहुना रंज करब, रूसब-फूलब त' सिनेहक नाकक बुट्टा थिकै। पति-पत्नीक मधुर सम्बन्ध बनल रहै, ओकर नवीकरण होइत रहै, तँ ने भगवान एकर इन्तजाम कयने छथिन्ह। तकर ई अर्थ थोड़बे भेलै जे कठोर बनि पत्नी के बिसरिए जाइ।

कने काल चुप रहि पति जवाब देलनि-पछिला तीन मास मे की-की भेलै, हम कोन-कोन नगरक यात्रा केलहुँ, सभटा सुनबै तखन भाँज लागत जे हम ने निष्ठुर छी आने कठोर। मात्र भविष्यक प्रति जागरूक छी, जिम्मेदार छी।

पत्नी– फरिछा क' कहबै तखन ने हम बात बुझबै।

पति- त' सुनू। अहाँक नैहर गेलाक दू दिन बादक गप्प छियै। दलान पर चुपचाप बैसल रही। दुलार कका सोर पाड़लनि। एकांत मे ल' जा क' कहलनिबिआह केल' नीक केल'। आब अगिला जिनगी पर ध्यान दहक। खेती-बाड़ीक उपजा केहन होइत छै से त' बुझले छह। भैया तोहर बिआह करा देलथुन, निश्चिन्त भेलाह। फिकिर तोरा करैक छह । नहि त' धरा जेबह आ दुर्गति मे पडि जेबह। पत्नीक खर्च, काल्हि धिया-पूता हेतह तकर खर्च कत' सँ अनबहक? बाप सँ मंगबहुन त' ओ कपार ढाहि देथुन्ह। तँ हमर विचार जे कोनो नौकरी-चाकरी ताकह। दुलार कका जे कहलनि से हमर आँखि खोलि देलनि। वैह एकटा चिट्ठी देलनि। हुनक पितिऔत सारक दौहित्र बम भोला बाबू गुजरात राज्यक सूरत शहर मे कार्यरत छथि। मुजफ्फरपुर मे ट्रेन धेलहुँ आ तेसर दिन सूरत शहर पहुँचलहुँ। बम भोला बाबू बड़ आदर-सत्कार सँ

रखलनि। दौड़-बरहा क' दरबानक जगह पर नौकरी रखा देलनि। ताबत अखन सुक्खा अठारह सय मासिक भेटत। अगिला एक तारीख सँ नौकरी शुरू हैत। तँ सूरत सँ घुमि कँ आबि अहाँक बिदागरी करा क' गाम ल' जा रहल छी।“ (17)

घेघिया केर रस्ता मे जे बहलमान कन्हाइ मंडल भेटैत छनि से तीसरी कसम केर हिरामन जकाँ लगैत छैक मुदा जते हिरामन निश्छल छैक कन्हाइ मंडल ज्ञान, दर्शन, धर्म आदिक गूढ़ बुझबा मे प्रवीण। ओ अपन उपस्थिति मात्र सं मोनक सब दुबिधा समाप्त करबाक क्षमता रखैत छथि। कन्हाइ मंडल अध्यात्म अन्वेषणक तीन गोट मार्ग, यथा प्रत्यक्ष, अनुमान एवं धार्म ग्रन्थ सं सूचना लेबाक संदर्भित ज्ञान देमाक सामर्थ्य रखैत छथि। फेर ओकर छिलका ओदारैत ओकर अर्थ स्पष्ट करैत छथि। हुनक वाणी संयत आ भाव गंभीर छनि।

उपन्यासकार कन्हाइ मंडल केर मादे बतबैत छथि जे ज्ञान बिना शास्त्र पुराण पढ़ने नित्य साधना सं सेहो प्राप्त कएल जा सकैत अछि। ताहि हुनका भुत, भविष्य आ वर्तमान केर ज्ञान छनि। मिथिला के लोक मे शास्त्र बसल रहैत अछि। एकर प्रमाण थिकाह कन्हाइ। ओ वेद, उपनिषद, पुराण, सांख्य दर्शन, न्याय दर्शन, मीमांसा, शंकर अद्वैत, रामानुजक द्वैत आ रामकृष्णक विशिष्टाद्वैत सब बुझैत छथि आ अपन मंतव्य देत छथि। कन्हाइ मंडल मोनक अतिरिक्त शरीर मे बारह गोट इन्द्रिय केर बात करैत छथि आ चाहैत छथि जे मोन के सब इन्द्रिय पर नियंत्रण राखए। कन्हाई कृष्णक युक्ति, भतृहरि दर्शन बता सकैत छथि।

रूपक सौन्दर्य आ विकृति केर वर्णन सेहो जेना पाठक के अपना दिस खिचैत हो। स्वेताक स्वरुपक लघु वर्णन देखने छी, आब कनि पंजा के स्वरुप देखी:

“ऊँचाइ तीन, सवा तीन फीट। ठोकल आ ठसगर कद-काठी। बहिक्रम द' की

कहल जाय किछु भ' सकैत छल। तीसी तेल मे छानल पापड़ जकाँ घोंकचल आ चड़कल हुनक देहक चमड़ा, कौआ जकाँ दुनू आँखि दू दिस तकैत, उठल नाक, ठाम-ठाम पर उड़ल आ भुल्ल भेल मोंछ, थथुनक नीचा छिड़िआयल आ टेढ़ भेल दाँत, पीयर ढाबुस भेल चेहरा आ कपार पर तेल पोचकारल जुल्फी। आब ककरा कहबै कुरूप? मुदा जिराफ छाप गंजी पहिरने पंजाक बाजब मे गजब के माधुर्य, विनम्रता ककरो अपना वश मे करक लेल पर्याप्त छलै।“ (47)

नाव स जयबाक काल उलपी मलाहिनक यौवन देखि राज शेखर केर पुरुष मोन जाग्रत भ जाइत छनि। एकर मनोवैज्ञानिक वाक्य देखल जाओ "उद्दंडता पुरुषक स्वाभाविक गुण थिकै। अवसर पाबि ई गुण निर्लज्ज बनबा मे संकोच नहि करैत अछि । ओहुना भुखायल लोकक आगू लड्डूक थार राखि देला स जे ने होअय।" (56)

उलपी केर देहक वर्णन करैत काल साहित्यकार हुनका मत्सगंधा बना देत छथि:

“धिपाओल सोनाक सूर्ख रंगबला हुनक कांति, छिड़िआयल पैघ-पैघ केशक लट, कान मे झुमैत चानीक झुमका, नाक मे सटल नथिया, मींचल ठोर, पसीना मे भीजल लाल-लाल गाल, लहंगा आ ब्लाउज मे अपसियाँत हुनक यौवन। युवती गजब कँ सुन्नरि छलीह। लग्गा सँ नावक संतुलन सम्हारक लेल एक पयर मैं नावक मांग पर टेकने छलीह। पयर अलता सँ रंगल छलनि। पयर मे पायल, पायल मे बिछिया आ बिछिया मे खनक सोझे हमर मति के भसियाब'क लेल बहुत छल।“ (56)

उपली केर सौदर्य कोना राज शेखर कें मादक बना रहल छनि तकर एक बानगी आरो प्रस्तुत अछि:

“हुनक काजर सँ पोतल आँखि मे हमर आँखि ठक्कर मारलक आ ताही क्षण हमर सत्यानाश भ' गेल। जहिना मंडलजीक सम्पर्क मे अबिते हमर चित मे अध्यात्म प्रवेश क' गेल छल, तहिना युवतीक चुम्बकिए परिधि मे अबिते हमर मोन चटपट-चटपट कर' लागल। बिना हमर अनुमतिक हमर मोन चहक सेहो लागल। बहुत पहिने रफीक गाओल एकटा हिन्दी गीत मोन पड़ि गेल–'ये रेशमी जुल्फें, ये शरबती आँखें'। शरबतीक अर्थ अपन भाषा मे की होइत छै से तखने बुझा गेल छल।“ (56)

कोना तंत्रयानी बौध सब मिथिला मे उत्पात मचेने छल हएत (?) तकर रोचक विवरण एहि पोथी मे भेटैत अछि। कारी वस्त्र, लाल-लाल आँखि, कपार पर सिंदूरक ठोप, नर मुंड पर दीप जरबैत, अघोरी अथवा कापालिक स्वरुप, क्रूरता देखबैत, हुनकर भरैत किछु चित्रण अहि पोथी कें विशेष बनबैत अछि आ लेखक कें गुणी। पोथी मे नाटकीयता, आ मनोवैज्ञानिक बात सब सहजता सं कहल जा रहल छैक। स्वप्न कथ्य के मनोरंजक आ भयावह बनेबाक साधन बनैत रहैत छैक। बनैय्या सुग्गर आ साँपक मल्ल युद्ध सेहो विपरीत समय मे रोमांच उत्पन्न करैत छैक। पाठक सिहरि उठैत अछि। स्वेता आ गोवर्धन द्वारा नदी रस्सी के सहारे पार करब आ अंत समय मे कापालिक द्वारा काटब, फेर स्वेता संग संग गोवर्धन केर नदी केर बहैत अगम जल मे बिला गेनाइ, रानी आ राजा संग समस्त प्रजा के हाहाकार करैत नदी मे कुदनाइ आ सामूहिक आत्महत्या अतिसय कारुणिक छैक।

हमरा लगैत अछि, शायद लेखक ई दृश्य सब पाठक केर मोन पोथी मे लागल रहनि तकरा ध्यान मे रखैत करैत छथि। कारण अति धर्म, तंत्र, दर्शन आदि कथ्य कें बोझिल बना सकैत छलैक। चंद्चुरक व्यक्तित्व एक अलग दिशा मे भेल छैक जे शोधक विषय भ सकैत अछि मुदा साहित्य केर कल्पना मे किछु लिखल जा सकैत छैक। यात्राक विस्तार महाराष्ट्र सं होइत खंडवा आ दक्षिण

मे अर्थात आंध्रप्रदेश केर श्री शैलम तक पसरल छैक। सब जगहक अलग संस्कार देखार भ रहल छैक। योग, कुण्डलनी किछु नहि छुटल छैक। नेपाल, सिक्किम तक केर चर्चा छैक। सही अर्थ मे ई उपन्यास हमरा हिसाबे अखिल भारतीय स्वरुप ग्रहण करैत अछि।

अहि उपन्यास कैँ रसे-रसे पढ़ब त' ई अहाँ कें अर्थात पाठक कें अपन मायाजाल मे बंधने रहत।

विनय सं इहो ज्ञात होइत छैक जे पंडित काका विनय के अपन पोथिक पाण्डुलिपि देने छलथिन। छापेबा लेल। जखन हुनकर पाण्डुलिपि निकलल गेल त ई कथा हु-ब-हु लिखल रहैक।

इहो नहि कहि सकैत छी जे सब किछु सर्वोत्तम छैक। कतौ-कतौ कुनो प्रसंग अव्शयाकता सं अधिक बोझिल आ अनेड़े ठुसल सन सेहो लगैत छैक। मुदा सम्पूर्णता मे इ पोथी मैथिली साहित्य लेल अमूल्य निधि थिक। एहन पोथी कें अनेक भाषा –कम सं कम हिंदी आ अंग्रेजी मे अनुदित होबाक चाही।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह: ३५३ म अंक ०१ सितम्बर २०२२ (वर्ष १५ मास १७७ अंक ३५३) | अंक ३५२ पर टिप्पणी

विद्यानन्द झा

केदारनाथ चौधरी जी पर जे किछु कहल गेल, सरिपहुँ सत्य, आइ धरि सम्मान, सहयोगक मामलामे ग्रुपबाजी एतेक होइत अछि जे उचित कथाकार अवहेलनाक शिकार भऽ जाइत छथि। बहुत बेर एहन देखऽ लेल भेटाइए जे साहित्य अकादमीक सम्मानमे एहन निम्न स्तरीय रचना कैं चुनल जाइत अछि जे पढ़ि कऽ आँखि नोरे-नोर भऽ जाइत अछि। सादर नमन केदार बाबूक लेखनी, व्यक्तित्व आ कृतित्वकैं।

प्रणव झा

विदेह समय-समयपर मैथिलीक लेखक सभक साहित्यिक जीवनपर विशेषांक निकालैत रहैत अछि जइसँ नै खाली भाषा-साहित्यमे विभिन्न लेखक सभकक योगदानकैं स्थापित करबामे ई भूमिका निभा रहल अछि अपितु नवतुरिया कम जानकारी बला पाठक सभमे ऐ सभ साहित्यकार एवं हुनकर कृतिक परिचय प्रस्तुत कऽ ओइमे रुचि जगाबक काज सेहो कऽ रहल अछि। एहि क्रम्मे ई केदारनाथ चौधरी विशेषांक सेहो छल। ऐ सँ पहिनेहो कतेको रचनाकारक परिचय हमरा सन पाठककैं विदेहक माध्यमसँ प्राप्त भेल अछि।

यद्यपि पुवारि गाँव (नेहरा) क चौधरी खानदानसँ हमर संपर्क रहल अछि मुदा एखन धरि हम श्री केदारनाथ चौधरीक साहित्यिक जीवन सँ परिचित नै

छलहुँ। विदेहक माध्यमसँ हुनक परिचयक संगे किछु वृत्तांत आ हुनक रचना पढ़बाक सेहो अवसर भेटल।

"अबारा नहितन" पढ़ि कऽ आजादीक तत्काल बादक अनेको सामाजिक आ राजनैतिक परिस्थितिक भान होइत छैक। ईहो जे मिथिला राज्यक मांग कतेक पुराण छैक। पूर्वमे एकर की कारण आ भूमिका सब रहलै अछि।

विदेह टीमकेँ श्री केदारनाथ चौधरी विशेषांक लेल बधाइ।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।